जिनेन्द्र पूजन



रचनाकार एवं संकलन
पण्डित राजेन्द्र कुमार जैन
जबलपुर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाष्टक संस्कृत	1
2.	अभिषेक पाठ	2
3.	प्रतिमा प्रक्षाल	3
4.	विनय पाठ	7
5.	पूजा पीठिका	9
6.	पूजा प्रतिज्ञा पाठ	10
7.	स्वस्ति मंगल पाठ	11
8.	परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ	12
9.	श्री देव शास्त्र गुरु पूजन	13
10.	सीमंधर जिनेन्द्र पूजन	17
11.	श्री सिद्ध पूजन	22
12.	श्री पंच बालयति पूजन	27
13.	श्री मुनिराज पूजन	31
14.	श्री गोम्मटेश्वर तीर्थ पूजन	36
15.	श्री आचार्य कुन्दकुन्द पूजन	40
16.	श्री आदिनाथ पूजन	44
17.	श्री शांतिनाथ पूजन	49
18.	श्री पारसनाथ पूजन	54
19.	श्री महावीर पूजन	59
	तीर्थ क्षेत्र पूजन	
20.	श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजन	64
21.	श्री अयोध्या पूजन	69
22.	श्री कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र पूजन	74
23.	श्री नैनागिरि सिद्ध क्षेत्र पूजन	78
24.	श्री द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र पूजन	83
25.	श्री आहार जी सिद्ध क्षेत्र पूजन	88
26.	श्री पपौरा जी अतिशय क्षेत्र पूजन	92
27.	श्री देवगढ़ अतिशय क्षेत्र पूजन	97

Scanned with CamScanner

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
28.	श्री पिसनहारी मढ़िया पूजन	101
29.	श्री चैतन्यधाम पूजन	105
30.	श्री स्वर्णपुरी पूजन	109
31.	श्री रक्षाबंधन पूजन	113
32.	श्री गजपंथा सिद्ध क्षेत्र पूजन	119
33.	श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजयगिरि पूजन	123
34.	श्री सोनागिर सिद्ध क्षेत्र पूजन	127
35.	श्री बुंदेलखंड तीर्थ पूजन	132
36.	श्री चाँदखेड़ी तीर्थ पूजन	137
37.	श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजन	141
38.	श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पूजन	146
39.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजन	151
40.	अर्घ्यावलि	157
41.	महाअर्घ्य	161
42.	शांतिपाठ	163
43.	विसर्जन पाठ	163
44.	विनय	164
45.	दशलक्षण पर्व पूजन	
46.	अष्टान्हिका पर्व पूजन	

भक्ति खण्ड (संकलित)

1.	अशरीरी सिद्ध भगवान.....	64
2.	निरखत जिनचन्द्र.....	69
3.	वीर जिनेश्वर अब तो मुझको	74
4.	परम गुरु बरसत.....	78
5.	निर्ग्रंथों का मार्ग.....	83
6.	देखो जी आदीश्वर स्वामी.....	88
7.	महिमा है अगम जिनागम.....	92
8.	रोम-रोम से निकले प्रभुवर	97
9.	नाथ तुम्हारी पूजा में	

Scanned with CamScanner

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रःमहिता, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्त सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ १ ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्र मुकुट प्रद्योत रत्नप्रभा ।
भास्वतपादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ॥
ये सर्वे जिन सिद्ध सूर्यानुगतास्ते पाठकाः साधवाः ।
स्तुत्या योगि जनैश्च पंचगुरूवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ २ ॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ३ ॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ४ ॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पञ्च ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ५ ॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ६ ॥

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ७ ॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखात्।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥ ९ ॥

अभिषेक पाठ (पं. राजमल पवैया)

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को, भाव से वंदन करूँ।
मन वचन काय त्रियोग पूर्वक, शीश चरणों में धरूँ ॥
सर्वज्ञ केवलज्ञान धारी, की सुछवि उर में धरूँ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग, महान की जय उच्चरूँ ॥
उज्ज्वल दिगम्बर वेश दर्शन, कर हृदय आनंद भरूँ।
अति विनय पूर्वक न्हवन करके, सफल यह नरभव करूँ ॥
मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु जी के, पूज्य मस्तक पर ढ़रूँ।
जल धार देकर हर्ष से, अभिषेक प्रभु जी का करूँ ॥
मैं न्हवन प्रभु का भाव से कर, सफल भवपातक हरूँ।
प्रभु चरणकमल पखार कर, सम्यक्त्व की सम्पत्ति वरूँ ॥

अभिषेक पाठ

मैंने प्रभु जी के चरण पखारे .....
जनम जनम के संचित पातक, तत्क्षण ही निरवारे ॥ मैंने ...॥
प्रासुक जल के कलश श्री जिन, प्रतिमा ऊपर डारे ॥ 1 ॥
वीतराग अरिहंत देव के, गूंजे जय जय कारे ॥ 2 ॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही, छाये हर्ष अपारे ॥ 3 ॥
पावन तन मन नयन भये सब, दूर भये अंधियारे ॥ 4 ॥

प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

(रचनाकार - पं. अभय कुमारजी शास्त्री, देवलाली)

(दोहा)

परिणामों की स्वच्छता, के निमित्त जिनबिम्ब।
इसीलिए मैं निरखता, इनमें निज प्रतिबिम्ब ॥
पंच प्रभु के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
निर्मल जल से कर रहा, प्रतिमा का प्रक्षाल ॥

अथ पौर्वाह्निक देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तवन्दना समेतं श्री पंचमहागुरु भक्तिपूर्वककायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

(छप्पय)

तीन लोक के कृत्रिम और अकृत्रिम सारे।
जिनबिम्बों को नित प्रति अगणित नमन हमारे ॥
श्री जिनवर की अर्न्तमुख छबि उर में धारूँ।
जिन में निज का, निज में जिन-प्रतिबिम्ब निहारूँ ॥
मैं करूँ आज संकल्प शुभ, जिन प्रतिमा प्रक्षाल का।
यह भाव सुमन अर्पण करूँ फल चाहूँ गुणमाल का ॥

ॐ ह्रीं प्रक्षाल प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(प्रक्षाल की प्रतिज्ञा हेतु पुष्प क्षेपण करें)

Scanned with CamScanner

(रोला)

अन्तरंग बहिरंग सुलक्ष्मी से जो शोभित ।
जिनकी मंगल वाणी पर है त्रिभुवन मोहित ।।
श्री जिनवर सेवा से क्षय मोहादि विपत्ति ।
हे जिन ! श्री लिख पाऊँगा निज-गुण सम्पत्ति ।।

(थाली की चौकी पर केशर से श्री लिखें)

(दोहा)

अन्तर्मुख मुद्रा सहित, शोभित श्री जिनराज ।
प्रतिमा प्रक्षालन करूँ, धरूँ पीठ यह आज ।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।

(प्रक्षाल हेतु थाली स्थापित करें)

(रोला)

भक्तिरत्न से जड़ित आज मंगल सिंहासन ।
भेद-ज्ञान जल से क्षालित भावों का आसन ।।
स्वागत है ! जिनराज तुम्हारा सिंहासन पर ।
हे जिनदेव ! पधारो श्रद्धा के आसन पर ।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(थाली में जिनबिम्ब विराजमान करें)

क्षीरोदधि के जल से भरे कलश ले आया ।
दृग-सुख-वीरज ज्ञान स्वरूपी आतम पाया ।।
मंगल कलश विराजित करता हूँ जिनराजा ।
परिणामों के प्रक्षालन से सुधरें काजा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलश स्थापनं करोमि ।

(चारों कोनों में निर्मल जल से भरे कलश स्थापित करें)

जल-फल आठों द्रव्य मिलाकर अर्घ्य बनाया ।
अष्ट अंग युत मानो सम्यग्दर्शन पाया ।।
श्री जिनवर के चरणों में यह अर्घ्य समर्पित ।
करूँ आज रागादि विकारी भाव विसर्जित ।।

ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

(पीठ स्थित जिन प्रतिमा को अर्घ्य चढ़ायें)

मैं रागादि विभावों से कलुषित हे जिनवर ।
और आप परिपूर्ण वीतरागी हो प्रभुवर ।।
कैसे हो प्रक्षाल, जगत के अघ-क्षालक का ।
क्या दरिद्र होगा पालक ? त्रिभुवन पालक का ।।
भक्ति भाव के निर्मल जल से अघ-मल धोता ।
है किसका अभिषेक भ्रान्त चित खाता गोता ।।
नाथ ! भक्तिवश जिनबिम्बों का करूँ न्हवन मैं।
आज करूँ साक्षात् जिनेश्वर का पर्शन मैं ।।

(दोहा)

क्षीरोदधि सम नीर से करूँ बिम्ब प्रक्षाल ।
श्री जिनवर की भक्ति से जानूँ निज पर चाल ।।
तीर्थंकर का नह्वन शुभ सुरपति करें महान ।
पंचमेरु भी हो गए महातीर्थ सुखदान ।।
करता हूँ शुभ भाव से प्रतिमा का अभिषेक ।
बचूँ शुभाशुभ भाव से यही कामना एक ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीरपर्यन्तं चर्तुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवम् आद्यानामाद्ये जम्बूदीपे भरतक्षेत्रे आर्य खण्डे ..... नाम्निनगरे श्री ..... दिगम्बर जिन मंदिरे मासा नामुत्तमे ...मासे ... पक्षे ... दिने मुन्यार्यिका श्रावक श्राविकाणां सकलकर्म क्षयार्थं पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि ।

(चारों कलशों से अभिषेक करें तथा वादित्र नाद करावें एवं जय-जय शब्दोच्चारण करें)

(दोहा)

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुण खान ।
मस्तक पर धारुँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान ।।

(मस्तक पर गन्धोदक लगावें। अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है)

जल-फलादि वसु द्रव्य ले, मैं पूजूँ जिनराज ।
हुआ बिम्ब अभिषेक अब, पाऊँ निज पद राज ।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्तेवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

श्री जिनवर का धवल यश त्रिभुवन में है व्याप्त।
शान्ति करें मम चित्त में, हे परमेश्वर आप्त ।।

(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

(रोला)

जिन प्रतिमा पर अमृतसम जल-कण अति शोभित।
आत्म-गगन में गुण अनन्त, तारे भवि मोहित ।।
हो अभेद का लक्ष्य, भेद का करता वर्जन ।
शुद्ध वस्त्र से जल कण का, करता परिमार्जन ।।

(प्रतिमा को शुद्ध वस्त्र से पोछें)

(दोहा)

श्री जिनवर की भक्ति से, दूर होय भव-भार।
उर-सिंहासन थापिये, प्रिय चैतन्य कुमार ।।

(जिन-प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें तथा निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ायें)

जल गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज ।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थित जिनाय अनर्घ्यप्रदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रक्षाल के सम्बन्ध में प्रमुख विचारणीय बिन्दु :

1. अर्हन्त भगवान का अभिषेक नहीं होता, जिनबिम्ब का प्रक्षाल किया जाता है, जो अभिषेक के नाम से प्रचलित है।
2. जिनबिम्ब का प्रक्षाल मात्र शुद्ध जल से शुद्ध वस्त्र पहनकर किया जाए।
3. प्रक्षाल मात्र पुरूषों द्वारा ही किया जाए। महिलायें जिनबिम्ब को स्पर्श न करें
4. जिनबिम्ब का प्रक्षाल प्रतिदिन एक बार हो जाने के पश्चात् बार-बार न करें।

देवदर्शन के बिना बाह्य जैन नहीं और
जो आत्मदर्शन नहीं करता, वह भाव जैन नहीं।

Scanned with CamScanner

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ।। १ ।।
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सरताज ।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ।। २ ।।
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि-शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार ।। ३ ।।
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश ।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास ।। ४ ।।
धर्मामृत उर जलधि सौं, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग भूप ।। ५ ।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निरमल भाव ।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ।। ६ ।।
भविजन कौं भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार ।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार ।। ७ ।।
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल ।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ।। ८ ।।
तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष-निरविषता थाय ।। ९ ।।
चक्री सुर खग इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।। १० ।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।। ११ ।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ।। १२ ।।

Scanned with CamScanner

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥ १३ ॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥ १४ ॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥ १५ ॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥ १६ ॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥ १७ ॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारिकें, कीजे आप समान ॥ १८ ॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार ।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार ॥ १९ ॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसौं बनी, यातैं करौं पुकार ॥ २० ॥
वंदौ पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास ।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥ २१ ॥
चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥ २२ ॥

(मंगल पाठ)

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ॥ १ ॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव ।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दूँ स्वयमेव ॥ २ ॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरू उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो, वदूँ मन-वच-काय ॥ ३ ॥

Scanned with CamScanner

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म ।
मंगलमय मंगल करण, हरो असाता कर्म ॥ ४ ॥
या विधि मंगल करनतें जग में मंगल होत ।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत ॥ ५ ॥

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
अरिहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वन्दन ।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन ॥
और लोक के सर्वसाधुओं, को है विनय सहित वन्दन ।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को, बार-बार मेरा वन्दन ॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(वीर छन्द)

मंगल चार, चार हैं उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं ।
मन वच काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं ॥
श्री अरिहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल ।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, हैं केवलि कथित धर्म मंगल ॥
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम ।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम ॥
श्री अरहंत शरण में जाऊँ, सिद्धशरण में मैं जाऊँ ।
साधु शरण में जाऊँ, केवलिकथित धर्म शरणा जाऊँ ॥

ॐ नमो अर्हते स्वाहा पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।

मंगल विधान

अपवित्र हो या पवित्र, जो णमोकार को ध्याता है ।
चाहे सुस्थित हो या दुस्थित, पाप - मुक्त हो जाता है ॥ १ ॥
हो पवित्र - अपवित्र दशा, कैसी भी क्यों नहिं हो जन की ।
परमातम का ध्यान किये हो, अन्तर-बाहर शुचि उनकी ॥ २ ॥

Scanned with CamScanner

है अजेय विघ्नों का हर्त्ता, णमोकार यह मंत्र महा।
सब मंगल में प्रथम सुमंगल, श्री जिनवर ने एम कहा॥ ३॥
सब पापों का है क्षयकारक, मंगल में सबसे पहला।
नमस्कार या णमोकार यह, मंत्र जिनागम में पहला॥ ४॥
अर्हं ऐसे परं ब्रह्म-वाचक, अक्षर का ध्यान करुँ।
सिद्धचक्र का सद्बीजाक्षर, मन-वच-काय प्रणाम करुँ॥ ५॥
अष्टकर्म से रहित मुक्ति-लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ॥ ६॥
जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष निर्विष होता मानो॥ ७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

मैं प्रशस्त मंगल गानों से, युक्त जिनालय मांहि यजूँ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य सजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

स्याद्वाद वाणी के नायक, श्री जिनको मैं नमन कराय।
चार अनंत चतुष्टयधारी, तीन जगत के ईश मनाय॥
मूलसंघ के सम्यग्दृष्टि, उनके पुण्य कमावन काज।
करुँ जिनेश्वर की यह पूजा, धन्य भाग्य है मेरा आज॥ १॥
तीन लोक के गुरु जिन-पुंगव, महिमा सुन्दर उदित हुई।
सहज प्रकाश मई दृग-ज्योति, जग-जन के हित मुदित हुई॥
समवसरण का अद्भुत वैभव, ललित प्रसन्न करी शोभा।
जगजन का कल्याण करे अरु, क्षेम कुशल हो मन लोभा॥ २॥
निर्मल बोध सुधा-सम प्रकटा, स्व पर विवेक करावनहार।

Scanned with CamScanner

तीन लोक में प्रथित हुआ जो, वस्तु त्रिजग प्रकटावनहार ।।
ऐसा केवलज्ञान करे, कल्याण सभी जगतीतल का ।
उनकी पूजा रचूँ आज मैं, कर्म बोझ करने हलका ।। ३ ।।
द्रव्य-शुद्धि अरु भाव-शुद्धि, दोनों विधि का अवलंबन कर ।
करुँ यथार्थ पुरुष की पूजा, मन-वच-तन एकत्रित कर ।।
पुरुष-पुराण जिनेश्वर अर्हन्, एकमात्र वस्तू का स्थान ।
उनकी केवलज्ञान वह्नि में, करूँ समस्त पुण्य आह्वान ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

ऋषभदेव कल्याण कराय, अजित जिनेश्वर निर्मल थाय ।
स्वस्ति करें संभव जिनराय, अभिनंदन के पूजों पाय ।।
स्वस्ति करें श्री सुमति जिनेश, पद्म-प्रभ पद पद्म विशेष ।
श्री सुपार्श्व स्वस्ति के हेतु, चंद्रप्रभ जन तारन सेतु ।।
पुष्पदंत कल्याण सहाय, शीतल शीतलता प्रगटाय ।
श्री श्रेयांस स्वस्ति के श्वेत, वासुपूज्य शिव साधन हेतु ।।
विमलनाथ पद विमल कराय, श्री अनंत आनंद बताय ।
धर्मनाथ शिवशर्म कराय, शांति विश्व में शांति कराय ।।
कुंथु और अरजिन सुखरास, शिवमग में मंगलमय आश ।
मल्लि और मुनिसुव्रत देव, सकल कर्मक्षय कारण एव ।।
श्री नमि और नेमि जिनराज, करें सुमंगलमय सब काज ।
पार्श्वनाथ तेवीसम ईश, महावीर वंदों जगदीश ।।
ये सब चौबीसों महाराज, करें भव्यजन मंगल काज ।
मैं आयो पूजन के काज, राखो श्री जिन मेरी लाज ।।

Scanned with CamScanner

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत -केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 1 ॥

कोष्ठस्थ-धान्योपमकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु : परमर्षयो नः ॥ 2 ॥

संस्पर्शन संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण विलोकनानि ।
दिव्यान्मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 3 ॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु : परमर्षयों नः ॥ 4॥

जङ्घावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वा ।
नभोऽङ्गणस्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 5 ॥

अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि,
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्यं नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 6 ॥

सकामरुपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 7 ॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रम्हापरं घोर गुणांचरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 8 ॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषा-विषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्ल विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 9॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ 10 ॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानम् ।)

Scanned with CamScanner

श्री देव शास्त्र गुरू पूजन

स्थापना

(वीर)

वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर पावन चरणों में वंदन ।
शुद्धातम के साधक साधू संत ऋषीश्वर अभिनंदन ।।
नित्य बोधनी मां जिनवाणी, जग में नित जयवन्त रहो ।
मन मंदिर में सदा विराजो, देव शास्त्र गुरुवर जय हो ।।

(दोहा)

रोम - रोम से झलकती, शांति अपरम्पार ।
परिणति में प्रगटे प्रभो, वन्दूँ बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरू समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरू समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरू समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मानव छंद)

चैतन्य विलासी जिनवर, चैतन्य भाव दर्शाते ।
चैतन्य विहारी मुनिवर, चैतन्य गीत नित गाते ।।
समता रस पान कराती, मां स्व पर विवेक जगाती ।
श्री देव शास्त्र गुरू वन्दूँ - अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जल-जल, अगणित अनंत दुख पाये ।
विषयों में शांति मिली ना, अब शरण तुम्हारी आये ।।
प्रभु दिव्य ध्वनि सुन तेरी, परिणति में समता आती ।
श्री देव शास्त्र गुरू वन्दूँ-अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

आनंदमय हो मंगलमय प्रभु आराधना हमारी ।
पर्याय मूढ़ बन भटका, अब पायी शरण तुम्हारी ।।
अक्षय प्रभुता दर्शायी, पद पाउँ ध्रुव अविनाशी ।
श्री देव शास्त्र गुरू वन्दूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सुरभि से सुरभित, अतिशय शुद्धात्म दिखाया।
मैं भूल स्वयं का वैभव, विषयांधवना भरमाया ।।
निष्काम तत्व निज निरखूँ, छूटें कब विषय विजाती।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य रसामृत पीते, मुनिराज विचरते वन में।
चलते फिरते सिद्धों सम, चैतन्य निरखते तन में ।।
सब विषय वासना झूठी, तृप्ति स्वभाव से आती।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदर्शन से निज दर्शन, कर मोहमहांध निवारूँ।
स्व पर विवेक प्रगटाऊँ, शुद्धातम में रम जाऊँ।।
अपनी निधि अपने में ही, पानी में मीन प्यासी।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुवन में होली खेलें, मुनिराज मगन निज मन में।
ध्रुवधाम ध्येय अग्नि से, जल जाते कर्म सहज में ।।
चैतन्य-सुरभि प्रभु तेरी, दश धर्मी सौरभ लाती।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

दृष्टि में ध्रुव परमातम, अनुभव में प्रभु परमातम ।
हर श्वांस बसे परमातम, फिर क्यों न बनूं परमातम ।।
सब झूठे रिश्ते नाते, जिन शासन ही है साथी ।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन मुद्रा नित्य निहारूँ, जिन सम निजरूप संवारूँ।
निर्ग्रंथ पंथ पर चलकर, अर्हन्त दशा अवधारूँ ।।
भक्ति भावों का अनुपम, यह अर्घ्य सजाकर लाया ।
पाऊँ अनर्घ पद स्वामी, दातार आप-सा पाया ।।
निःसार जगत जड़ वैभव, लख महिमा अंतर जागी ।
श्री देव शास्त्र गुरू वंदूँ, अभिनन्दूँ महिमा आती ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

देवशास्त्र गुरू रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
गाऊँ गुणमाला प्रभो, पाऊँ पद अविकार ।।

(चौपाई)

जय जय श्री अरिहन्त जिनेश्वर, महामहिम मुनिनाथ मुनीश्वर ।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, मुक्ति मार्ग दर्शायो प्रभुवर ।।
शत शत इन्द्र करें तुम सेवा, तुम हो प्रभु देवन के देवा ।
सुरपति सहस्र नाम गुण गावे, तुम गुण सुमरत पार न पावे ।।
अन्तर्मुख छवि धन्य तुम्हारी, अन्तस्तत्त्व प्रकाशनहारी ।
दर्शन ज्ञान वीर्य बलधारी, सुख अनन्त सेवें त्रिपुरारी ।।
समवशरण की शोभा न्यारी, निराधार राजे अविकारी ।
रोम-रोम पुलकित हो जावे, जब जिनवर दर्शन भवि पावे ।।
धर्म तीर्थ के तुमही प्रणेता, मुक्ति मार्ग के तुमही नेता।

Scanned with CamScanner

कर्म रुप पर्वत के भेत्ता, महा सौख्य दातार महंता ।।
स्वाश्रित मुक्ति मार्ग बताया, समझ-समझ भविजन शिव पाया।
तुम बिन कौन मर्म दर्शावे, आत्म भान ही शम सुख लावे ।।
कहां निगोद नारक दुख पाया, कित तिर्यंच गती तड़पाया।
आज धन्य मानुष तन पायो, महा भाग्य प्रभु शरणा आयो ।।
यही भावना है हे स्वामी, तुम सम हो दृष्टि जग नामी ।
ऐसी भक्ति हृदय जगाऊँ, फिर न लौट मां गर्भ में आऊँ ।।
जिनवाणी माता उपकारी, स्व पर विवेक जगावनहारी ।।
मिथ्या भ्रांति नशावनहारी, दिव्य तत्त्व दर्शावनहारी ।
धन्य-धन्य निर्ग्रंथ मुनीश्वर, लेश नहीं जिनके आडम्बर ।।
दर्शन ही वैराग्य जगावे, चक्री वैभव भी न भावे ।
शुद्ध उपयोगी संत हमारे, मुक्ति वधू के कंत महा रे ।।
दर्शन महा भाग्य जो पावे, आतम आराधक हो जावे ।
सौम्यमूर्ति किसको न भावे, पशु भी बैर विरोध भुलावे ।।
चलते-फिरते तीर्थ हमारे, भव्य जननि के तारण हारे ।
तुम जैसी समता कब पाऊँ, शत्रु-मित्र सम भाव जगाऊँ।।
ज्ञानाभ्यास करूँ हर्षाऊँ, कब निर्ग्रन्थ दशा अपनाऊँ।
धन्य घड़ी कब ऐसी आवे, चिर समाधि में मन रम जावे ।।
देव शास्त्र गुरू सदा नमन है, जिनशासन ही सहज शरण है।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

भक्ति भाव से वंद्यकर, हर्षित हृदय अपार ।
प्रभु सम प्रभुता अनुभवूँ, शीघ्र होऊँ भवपार ।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

Scanned with CamScanner

श्री सीमंधर जिनेन्द्र पूजन

सीमंधर स्वामी थारी तो जय जयकार-2 ।। टेक ।।
शाश्वत जिन शासन जहँ वर्ते, महामहिम सुखकार ।
वैदेही हो रहे विदेही, धन्य विदेह मंझार ।। सीमं. ।।
समयसार स्वर लहरी सुनते, धरि प्रमोद भवि सार ।
नियमसारमय परिणति होवे, तू ही तारणहार ।। सीमं. ।।
कुन्दकुन्द आचार्य पधारे, तेरे ही दरबार ।
भुला गये सर्वज्ञ विरह प्रभु, रचा समय का सार ।। सीमं. ।।
विनय हमारी स्वीकारो प्रभु, अशरण शरण अधार ।।
भले दूर प्रभु रहो क्षेत्र से, बैठो हृदय मंझार ।। सीमं. ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मानव छंद)

जीवत्व शक्ति के स्वामी, चेतन निज रूप निहारो ।
दृग ज्ञान वीर्य सुख मंडित, अपनी प्रभुता उजियारो ।।
जो नहीं जनमता मरता, शाश्वत प्रभु सत्य सनातन ।
कर्ता भोक्ता न किसी का, ज्ञाता है अपना भगवन ।।
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, अद्भुत प्रभुता दर्शायी ।
जन्मादि व्याधि मिट जावे, हो तुम सम दशा हमारी ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति ।

शक्ति अचिंन्त्य का धारी स्वयमेव देव शुद्धातम ।
चंदन सम शीतल चिन्मय दर्शाया प्रभु परमातम् ।।
हे नाथ सर्वदर्शी हो, सर्वज्ञ जिनेश हमारे ।
सब लोकालोक झलकते स्वच्छत्व शक्ति के द्वारे ।।
सीमंधर नाथ जिनेश्वर अद्भुत प्रभुता दर्शायी ।
भव ताप विनाशो स्वामी, हो तुम सम दशा हमारी ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति ।

Scanned with CamScanner

अक्षय चैतन्य निलय में, अक्षय विलसो हे स्वामी।
पर के न कार्य कारण हो, अक्षय पद दाता नामी ॥
परिणम्य पारणामिक से, जानो सब जानन हारे।
नहिं ग्रहण त्याग की दुविधा, भोगें आनंद महा रे ॥
सीमंधर नाथ जिनेश्वर,शाश्वत ध्रुव धाम दिखाया।
उत्पाद ध्रौव्य व्यय शक्ति, से भ्रम का भार नशाया ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति।

चैतन्य वाटिका में ही, प्रभुवर विहार करते हो ।
सुरभित हो नाथ सुमन से, सबको सौरभ देते हो ॥
चिद्ब्रम्ह विलासी जिनवर, आनंद रसामृत पीते।
नहिं रही वासना कोई, आनंद निर्झर से झरते ॥
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, कब शील सुगुण प्रगटाऊँ।
प्रभु तुम समान हो जाऊँ, अपने में आप समाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति।

जब आतम अनुभव आवे, तब कुछ भी नहीं सुहावे।
यह अमृतरस का प्याला, कोई विरला ही पी पावे ॥
प्रभु शक्ति अनंतों धर्मी, से हो अनंत गुण मंडित।
शक्ति विरुद्ध धर्मी भी, से चेतन सदा सुरक्षित ॥
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, जो शरण तुम्हारी आये।
अपनी शक्ति पहचाने, वो तुम समान बन जाये ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति।

प्रभु भेद ज्ञान ज्योति से, अब मंगल दीप जलाऊँ।
मैं ममता छोड़ूं क्षण-क्षण, समता जीवन में लाऊँ ॥
एकत्व विभक्त सदा से, है ज्ञायक प्रभु हमारा।
परभावों से अति न्यारा आनंद रस ज्ञान पिटारा ॥
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, जो शरण तुम्हारी आये।
अपनी शक्ति पहचाने, वो तुम समान बन जाये ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति।

Scanned with CamScanner

अनहोनी कभी न होती, होनी भी कभी न टलती ।
है शक्तिपुंज परमातम, क्यों चिंता तुम्हें सताती ।।
प्रभु भाव अभावी शक्ति, हर कार्य सहज कर लाती ।
हमको निश्चिंत बनाती, पर गंध सहज विनसाती ।।
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, जो शरण तुम्हारी आये ।
अपनी शक्ति पहचाने, वो तुम समान बन जाये ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट् द्रव्यों का हे प्रभुवर, नित चक्र सुदर्शन चलता ।
षट् कारकीय क्षमता से , हर कार्य सहज ही होता ।।
प्रभु निज स्वभाव साधन से, सब ही सर्वज्ञ हुए हैं ।।
हे नाथ स्वयंभू हो तुम, आगम में कथन भरे हैं ।
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, जो शरण तुम्हारी आए ।
निज सम्प्रदान शक्ति फल, से तुम समान हो जाये ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अखिलेश्वर हे जगदीश्वर सीमंधर नाथ जिनेश्वर ।
शक्ति अनंत दर्शायी, निज महिमा जागी जिनवर ।।
भक्ति भावों से प्रभुवर यह अर्घ्य सजाकर लाया ।।
मुनि कुन्दकुन्द अमृतचंद्र, ने सोया भाग्य जगाया ।
सीमंधर नाथ जिनेश्वर, जो शरण तुम्हारी आये ।
अपना स्वरूप पहचाने, वह तुम समान हो जावे ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

सीमंधर भगवान के, गुण हैं अपरम्पार ।
गाऊँ जयमाला प्रभु, रोम-रोम हुलसाय ।।

Scanned with CamScanner

(वीर छंद)

जयवन्तो सीमंधर स्वामी, निज स्वरूप में करो विलास।
शुद्ध स्वानुभव सरिता बहती, मुद्रा जगा रही उल्लास ॥
निज स्वभाव सीमा में रहकर, भी असीम प्रभु केवलज्ञान।
धर्मामृत बरसाते हो प्रभु, कौन करे तेरा गुणगान ॥
सकल ज्ञेय ज्ञायक होकर भी, निज स्वरूप ही प्रभु भाया।
निजानंद रस लीन स्वयं हो, यही बोधि पाने आया ॥
धन्य-धन्य वे जीव आपका, लाभ सदा जो लेते हैं।
भव-भव के संचित कर्मों का, नाश स्वयं कर लेते हैं ॥
कुन्दकुन्द आचार्य श्री ने, प्रभु प्रत्यक्ष दर्शन पाया।
दिव्यध्वनि रस पान किया प्रभु, अति अपूर्व आनंद आया॥
आये मुनिश्री भरत क्षेत्र में, भवि जीवों को किया निहाल ।
रचे पंचपरमागम सुंदर, समयसार ने किया कमाल ॥
देव आपकी भक्ति में चित, आज सहज ललचाया है।
काललब्धि मेरी जागी है, मन में हर्ष समाया है ॥
पंच परावर्तन में प्रभुवर, भटक-भटक अति दुख पाये।
इस संसार महासागर में आज शरण तेरी आये ॥
भरत क्षेत्र में तीर्थंकर का विरह पड़ा है हे सर्वेश।
इसलिए प्रभु याद आपकी आती है नित ही करूणेश ॥
पूरब पुंडरीकणी नगरी में, आप विराजे हैं अरिहंत।
भव्य जनों के जीवन शिल्पी, मुक्ति विधाता श्री भगवंत ॥
मुनिसुव्रत तीर्थंकर युग था, तब पाया था केवलज्ञान।
यहाँ तेरवें भगवन होंगे, तब प्रभुवर लेगें निर्वाण ॥
शक्ति अनंती विलस रही हैं, शोभित चिदानंद भगवान।
सभी जीव भगवान आत्मा, समझाया हे दया निधान ॥
आज समझ में आया है प्रभु, वीतराग जिनधर्म महान।

Scanned with CamScanner

अमृत रस का पान कराता, यही बनाता है भगवान ।।
हे प्रभु साक्षात दर्शन हो, ऐसा दिन कब पाऊँगा ।
कब तुमसे सम्यक् शिक्षा ले, तुम समान बन जाऊँगा ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(दोहा)

देह देवालय में बसे, फिर भी सदा विदेह ।
मेरे भी मन में बसो, जय सीमंधर देव ।।
निज सीमा में संयमित, हुये सीमंधर नाथ ।
फिर भी चहुँदिशि महकती, धर्म सुगंध सुवास ।।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

सिद्ध भगवान

अशरीरी – सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्हीं मेरे ।
अविरूद्ध शुद्ध चिद्घन, उत्कर्ष तुम्हीं मेरे ।। टेक ।।

सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहन ।
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन ।।
हे गुण अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे ।। १।।

रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल ।
कुल गोत्र रहित निष्कुल, मायादि रहित निश्छल ।।
रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे ।।२ ।।

रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो ।
स्वाश्रित शाश्वत–सुख भोग, शुद्धात्म–विलासी हो।।
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे ।।३।।

भविजन तुम–सम निज–रूप, ध्याकर तुम–सम होते ।
चैतन्य पिण्ड शिव–भूप, होकर सब दुख खोते ।।
चैतन्यराज सुखखान, दुख दूर करो मेरे ।।४।।

Scanned with CamScanner

सिद्ध पूजन

(सोरठा)

सिद्ध अनन्तानंत, अविनाशी आनंदमय ।
जयवन्तो भगवन्त, सर्व सिद्धि दाता नमन ।।

(दोहा)

सिद्धालय शाश्वत बसो, त्रिभुवनपति जग शीर्ष।
हृदय विराजो हे प्रभो, जयवंतो जगदीश ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(भुजंगप्रयात)

निजातम की महिमामयी भावना से,
अचल ध्रुव अनूपम गति तुमने पायी।
त्रिभुवन तिलक शीर्ष चूड़ामणि प्रभु,
तुम्ही एक आदर्श शिवपथ सहाई ।।
ये संसार-सागर महा दुःख का घर ।
कहीं एक पल भी न सुख शांति पाया ।।
जयवन्तवर्ते प्रभो जैन शासन ।
महाभाग्य से प्रभु शरण तेरी आया ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनागम की महिमा कभी भी न भायी ।
निजातम का वैभव कभी न सुहाया ।।
अध्यात्म की लोरियाँ भी सुनी ना ।
इसी से भवाताप में दुक्ख पाया ।।
महाशान्त-रस से लबालब भरा जो ।

Scanned with CamScanner

दिखाया महा ज्ञान-सागर हमारा ।।
जयवन्तवर्ते प्रभो जैन शासन ।
महा भाग्य से प्रभु शरण तेरी आया ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अक्षत हो प्रभुवर तुम्ही नाथ जग में ।
शरणागतों को भी अक्षय बनाते ।।
सहे कष्ट पांचों परावर्तनों के ।
तुम्ही नाथ भव-भव भ्रमण से बचाते ।।
ये संसार बिजली की आभा सा अस्थिर ।
है ध्रुवधाम आनंद मंदिर दिखाया ।।
जयवन्तवर्ते प्रभो जैन शासन ।
महाभाग्य से प्रभु शरण तेरी आया ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

अहो वीतरागी परम शांत जिनवर ।
विषय वासना पर विजय तुमने पायी ।।
ये संसार सागर तो जल क्षार सम ही ।
कभी तृप्ती हुई है न होगी कदापि ।।
'सुदर्शन' सा पालूं प्रभो शील संयम ।
'सुमेरू' डिगे पर न मैं मन डिगाऊँ ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
सिद्धों की शरणों में जीवन सजाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता के सागर तुम्ही हो जिनेश्वर ।
परम तृप्ती तुमने स्वयं से ही पायी ।।
क्षुधाव्याधि से मुक्ति पाई सदा को ।
शरण आपकी ही मुझे भी सुहाई ।।

Scanned with CamScanner

जगे भूख ऐसी निजातम की भगवन ।
लगे प्यास परमात्म रस की सदा ही ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
सिद्धों की शरणा महाभाग्य पायी ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम की महिमामयी ज्ञान-ज्योति ।
यही मोह मिथ्यात्व भ्रम तम निवारे ।।
यही आत्म ख्याति प्रकाशे हे भगवन ।
सहज ज्ञानमय हूँ यही मात्र भासे ।।
"तुष मास भिन्नं" का कर भाव भासन ।
"शिवभूति" मुनिवर जी शिवपुर सिधाये ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
सिद्धों की शरणा महाभाग्य पाये ।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभो वीतरागी सुगंधी से सुरभित ।
प्रासाद सुन्दर है शोभित तुम्हारा ।।
हराया करम शत्रु को, दुर्ग जयकर ।
बजे यश का डंका, सदा ही तुम्हारा ।।
धरुँ ध्यान आतम का मैं भी प्रभूजी ।
यही ज्ञान वैराग्य सौरभ जगाये ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
सिद्धों की शरणा महा भाग्य पाये ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज सिद्ध हो प्रभु स्वयं बुद्ध हो तुम ।
सरस शांत रस में सदा मग्न रहते ।।
चैतन्य तरू पर फलें मुक्ति के फल ।

Scanned with CamScanner

इन्हीं भक्ति भावों से पूजन हैं करते ।।
शुभाशुभ के फल में फली चार गतियाँ ।
मिला स्वर्ग भी पर न सुख शांति पाये ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
सिद्धों की शरणा महा भाग्य पाये ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सजाऊँ प्रभो अर्घ्य आठों दरब ले ।
सहज भक्ति भावों से पूजन करूँगा ।।
न लौटूंगा संसार में अब कभी भी ।
सहज ज्ञान आनंद में नित रमूँगा ।।
महाशान्त-रस से लबालब भरा जो ।
दिखाया महा ज्ञानसागर हमारा ।।
जयवन्त वर्ते प्रभो जैन शासन ।
जजूँ अर्घ्य लेकर प्रभु पद तुम्हारा ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

स्वयं सिद्ध शुद्धात्मा - साध हुये भगवन्त ।
प्रभु सम प्रभुता अनुभवूँ, पाऊँ भव का अन्त ।।

(रोला)

जयवन्तो भगवन्त सिद्ध आदर्श हमारे ।
जयवन्तो भगवन्त सर्व जग जानन हारे ।।
जयवन्तो भगवन्त अचल अनुपम गति पायी ।
जयवन्तो भगवंत आत्म निधि हमें दिखाई ।।
तीन काल के सब सिद्धों को नमन हमारा ।
मात्र नाम ही धन्य भविक को तारणहारा ।।

Scanned with CamScanner

सम्यक दर्शन ज्ञान चरित, वीरज प्रगटाया ।
अगुरुलघु अवगाहन सूक्षम श्री जिनराया ।।
अव्यावाध परम आनंदमय परणति जागी ।
जयवन्तो भगवन्त पूजते शत इन्द्रादि ।।
स्वयं सिद्ध परमातम ध्याकर सिद्ध हो गये ।
कर्म कलंक समूल नष्टकर मुक्त हो गये ।।
तीन लोक के मुकुट तुम्हीं हो हे सिद्धेश्वर ।
निजानंद रसलीन तदपि हो त्रिभुवन ईश्वर ।।
पंचपरावर्तन में प्रभु अनंत दुख पाया ।
कोई संगी साथी नहीं बचाने आया ।।
पूजन करते नाथ हृदय हर्षित अति भारी ।
यही भावना ऐसी दशा होय कब म्हारी ।।
सिद्ध प्रभू के वंदन से निर्मलता आती ।
भव संतति खिरने लगती खुशियाँ भर जाती ।।
सहज स्वानुभवगम्य कौन तुमरे गुणगावे ।
वचनातीत स्वरूप वचन में कैसे आवे ।।
विषय कषायों में परिणति अब कभी न जावे ।
सतत स्वानुभवमय जीवन हो कब दिन आवे ।।
निर्मोही हो नाथ आप सम समता पाऊँ ।
आप - आप में लीन रहूँ अपने घर जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

सिद्ध प्रभु की वंदना, हरती भव दुख क्लेश ।
स्वयं सिद्ध की साधना, यही सिद्ध संदेश ।।

।। पुष्पाजलिं क्षिपामि ।।

Scanned with CamScanner

श्री पंच बालयति जिन पूजन

(ताटंक)

पंच बालयति पंचमगति को, प्राप्त हुए प्रभु करूं नमन ।
पंचम परम भाव आश्रय से, प्राप्त किया प्रभु मुक्ति सदन ॥
निज स्वभाव साधन अपनाया, निजानंद रस हुये मगन ।
हृदय हमारे आप विराजो, जयवन्ते प्रभु जिन शासन ॥

(दोहा)

चिदानंद चैतन्यघन, में निमग्न भगवंत ।
तिष्ठ तिष्ठ सन्निकट हो, पंच बालयति संत ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिन समूह ! अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिन समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिन समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

(वीर छंद)

देख आपकी शांत सौम्य छवि, कली-कली खिल जाती है।
दर्शन-अर्चन को आया पर, आँख बंद हो जाती है ॥
ज्ञान-नेत्र खुल जाते हैं प्रभु, धन्य घड़ी हो जाती है ।
निर्मल जल से करूं अर्चना, यही शांति मन भाती है ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति..

हे अनिमेष विलोकनीय प्रभु, हे अभिधेय प्रकाशनहार ।
भवाताप का मूल बताया, पर कर्तृत्व भ्रमावनहार ॥
सहज भाव की सौरभ सुरभित, भ्रमर बना आया प्रभु द्वार ।
चंदन-सम शीतलता पाऊँ, चंदन अरचूँ सुखदातार ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति..

सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी, अविनाशी अक्षय अभिराम ।
निज चैतन्य निलय में प्रभुवर, आप सतत करते विश्राम ॥
अक्षय निधि को भूल नाथ, चौरासी गति में भटकाया ।
देख आपकी अक्षत गरिमा, अक्षत ले अर्चन आया ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति..

Scanned with CamScanner

परम ब्रह्म में लीन जिनेश्वर, बालब्रह्मचारी मुनिनाथ।
काम बाण की व्याधि नाशो, मैं भी चलूँ आपके साथ॥
वेदक वेद्य विभाव भाव लख, विषय वासना विला गई।
हे अनंत सुख-भोगी योगी, पुष्प चढ़ाऊँ भावमयी॥
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति..

क्षुधा व्याधि की बात कहूँ क्या, धन अर्जन की भूख कहूँ।
ख्याति प्राप्ति-सी भूख न देखी, कैसे कब तक कष्ट सहूँ?
आत्म तत्त्व की भाव भासना, बिन पाये दुख घोर अनंत।
नेवज अर्पित करुँ भाव से, हो जाये प्रभु भव का अंत॥
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति..

अपने से अनजान स्वयं ही, महामोह वश अंध हुआ।
कर्त्ताधर्ता बना जगत का, मिली विफलता बंध हुआ॥
अन्तर दीपक भेदज्ञान का, आज जलाने आया हूँ।
सहज ज्ञान वैराग्य जगाने, शरण आपकी आया हूँ॥
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति..

स्वयं महंत बना रहता था, कर्मों को देता था दोष।
यह अनीति जिनशासन में प्रभु, चल न सकी पथ है निर्दोष॥
धूप-अनल में खेने से तो, कर्म और भी पुष्ट हुए।
राग द्वेष अब हो न किसी से, ऐसा आतम ज्ञान जगे॥
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति ...

दिव्य देवगति मिली, अनंती बार पुण्य का फल पाया।
पराधीन सुख में न निराकुल, लक्षण की किंचित् छाया॥
हे सुख के सम्राट! आप हो, लीन स्वयं में महासुखी।
पूजा का फल यही मिले प्रभु, होवे दृष्टि आत्ममुखी॥
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

जलफलादि वसु द्रव्य सजाकर भक्ति भाव से लाया हूँ ।
भव भय के भेदनहारे, प्रभु शरणा पा हर्षाया हूँ ।।
वासुपूज्य अर मल्लि नेमि जिन, पार्श्वनाथ सन्मति गुणखान ।
अर्घ्य समर्पित करुँ भाव से, पंचमगति पाऊँ निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति...

जयमाला

(दोहा)

परम ब्रह्म आनंदमय, मग्न हुये भव पार ।
भवसागर से तारने, तारण-तारण जहाज ।।

(भुजंगप्रयात तर्ज - प्रभो आपने एक ज्ञायक बताया)

परम वीतरागी के दरबार आये,
न तुम जैसा कोई जगत में दिखाये ।
महाभाग्य से आज दरश प्रभु के पाये,
तुम्हें देख संसार अब न सुहाये ।।
चिदानंद चेतन के नित गीत गाऊँ ,
स्वयं की ही महिमा, कहाँ और पाऊँ ।
स्वयं के ही वैभव को, स्वयं में ही पाकर,
स्वयं से स्वयं को, स्वयं में रिझाऊँ ।।
सहज होता समकित, सहज ज्ञानधारा,
सहज मुनि दशा होती, सहज सुख अपारा ।
सहज ऋद्धियाँ होती, नहीं दृष्टि उन पर,
सहज जिन धरम पाके, सहज में समाऊँ ।।
परम पूज्य परिणति को जो सबसे प्यारा,
वही वासु भगवन ने दिखाया सहारा ।
प्रथम बालयति ब्रह्मचारी हमारे,
प्रभू चंपापुर से ही शिवपुर पधारे ।।

Scanned with CamScanner

महामोह से पिंड मेरा छुड़ा दो,
हे मल्लि जिनेश्वर ! मुकति पथ दिखा दो।
जो तुमको सुहाया महा ज्ञान-सागर,
मेरा ज्ञान-सागर मुझे तुम बता दो ।।
धरम की धुरी धारी नेमि जिनेश्वर,
तजी राजकन्या हे करुणा के सागर ।
गिरनारी भी छोड़ी, शिवनारी पाके,
नमूँ मैं नमूँ नेमि, नियमसार ध्याके ।।
प्रभु पार्श्व परमेश परम सिद्धि दायक,
हो उत्तम क्षमा धर्म के धारी ज्ञायक ।
रे पारसमणि लोह सोना बनाता,
तुझे ध्याने वाला भी बन जाता पारस ।।
कठिन काम का रोग निज बल से टारा,
विकट विष-विषय वासना को पछारा ।
हे शासन के नायक तुम्हीं हो उजारे,
महावीर अगणित हैं वंदन हमारे ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति...

(दोहा)

आत्म शांति हो हे प्रभो, आया तेरे द्वार ।
हो समाधि सल्लेखना, वंदन बारम्बार ।।
वैरागी हो बालयति, पंचम गति के ईश ।
सिद्ध शिला शोभित सदा, तुमसे हे जगदीश ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जिसे अपने चैतन्यनाथ की दृष्टि नहीं एवं जिननाथ के प्रति भक्ति नहीं वह अनाथ है।

Scanned with CamScanner

श्री मुनिराज पूजन

(स्थापना)

(भुजंगप्रयात)

समता के सागर, गुरुवर हमारे ।
संसार-सागर, से अगणित उबारे ।।
शुद्धात्म सेवी, हे सन्मति प्रदाता ।
हमको भी तारो न हम आये द्वारे ।।
विषयों की भाषा भी, जिनको न भाती ।
बस आत्म - आराधना ही सुहाती ।।
आचार्य उवज्झाय साधू दिगम्बर ।
सबको है वंदन, अगणित हमारे ।।
शिवमार्ग-श्रृंगार संवर तुम्हारा ।
सतत आत्म अनुभव ही परिचय है प्यारा ।।
तुम्ही ज्ञान-सागर प्रभु तारणारे ।
पधारो मुनीश्वर चरण मन पखारे ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(सार छंद)

नीर लिये मुनिमन सम उज्ज्वल, मुनि पद पंकज धोवे ।
हूँ अनादि अनिधन श्रद्धा ही, जन्म-मरण दुख खोवे ।।
जीव राज चैतन्य विलासी, शाश्वत प्रभु अविनाशी ।
निज स्वभाव की भूल मुझे, भटकाती लख चौरासी ।।
तीन काल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

भव-आताप विनाशी अमृत, अनुभव मुनिवर पाये ।
भाव शुभाशुभ की ज्वाला से बचने प्रभु ढिंग आये ।।
महामोह की कुटिल कालिमा, पल-पल मुझे रूलाती ।
परमागम परमामृत सेवन, से ही समता आती ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारगति चौरासी योनी, घोर महा दुख पायो ।
यह संसार महा दुख सागर, आज समझ में आयो ।।
निज चैतन्य विलासी प्रभुवर, अक्षत धाम समाये ।
अक्षयपद पाने हे मुनिवर, शरण आपकी आये ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

विषय वासना के छूटे बिन, कौन सुखी हो पाया ।
मृगतृष्णा में भ्रमा चर्तुगति कौन बचाने आया ।।
धन्य-धन्य निर्ग्रंथ मुनीश्वर, आतम अनुभव करते ।
कामबाण की दुष्ट सर्पिणी, कीलित करके रखते ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा-नागिनी जब जब डसती, निज रस स्वाद न आवे ।
भक्ष्य-अभक्ष्य गिने बिन परणति, भव-भव में दुखपावे ।।
परमानंद सुधारस पीते, मुनिवर नहीं अघाते ।
आप बनाते आपहि खाते, षट रस उन्हें न भाते ।।

Scanned with CamScanner

तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान मात्र हूँ जाननहारा, बात यही मन भायी ।
निज को निज पर को पर जानूँ, सीख यही सुखदाई ।।
अन्तर दीप जलाने प्रभुवर, मिले दीप जग नामी ।
शाश्वत चेतन दीप दिखाया, तुमने त्रिभुवन स्वामी ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगल उत्तम शरण स्वयं हूँ, बोधि कौन दर्शावे ?
ध्यान ध्येय श्रद्धेय स्वयं हूँ, तुम बिन कौन बतावे ।।
शुक्ल ध्यान की अग्नि प्रज्वलित, हो प्रभू कर्म निवारे ।
शुद्धि की श्रद्धा ही खोले, बंद मुक्ति के द्वारे ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति...

जंगल में मंगल हो जाता, जहां मुनीश्वर जाते ।
समता शुचिता के पग पड़ते, तीर्थ वहीं बन जाते ।।
पुण्य फला अर्हन्त प्रभू का, समवशरण सुखकारी ।
मार्ग मार्गफल जिनशासन में, दर्शाया अविकारी ।।
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

निजानंद वैभव की मस्ती में, मुनिमस्त विचरते ।
तीन लोक के धनी स्वयं को सबसे बड़ा समझते ॥
ऋद्धि - सिद्धियाँ हाथ जोड़कर, खड़ीं अर्घ्य ले द्वारे ।
उदासीन निज रूप मगन मन, निज निधि निरखनहारे ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति...

जयमाला

सिद्धों की श्रेणी में आने वाला जिनका नाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है ॥ टेक ॥
परम दिगम्बर मुद्रा देखी, हर्षित हृदय हमारा है ।
रत्नत्रय धारी हे गुरुवर, तेरा एक सहारा है ॥
सोने का सूरज ऊगा ज्यों, निरख आपको लगता है ।
ज्ञानध्यान वैराग्यमूर्ति को, परख शान्त रस झरता है ॥
निज चैतन्य गुफा में बसते, शाश्वत यही मुकाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 1 ॥
मोह महा रिपु समझ आपने, छोड़ी गृहस्थ अवस्था है ।
सिद्धों जैसी शुद्धि पाने, ले ली परम प्रवज्या है ॥
भोग भुजंग समान देखकर, काँप गया तन-मन सारा ।
कदली तरु संसार लेखकर, सिमट गई जीवन धारा ॥
रत्नत्रय निधि की रक्षारत, रहते आठों याम हैं ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 2 ॥
दीक्षा लेते समय बोलते, माँ तू तन की जननी है ।
है अनादि जननी शुद्धातम, दूजी माँ जिनवाणी है ॥
देह रमाने वाली रमणी, तू नहिं रमणी मेरी है ।
शाश्वत रमण कराने वाली, मुक्ति-वधू ही मेरी है ॥

Scanned with CamScanner

पंच महाव्रत पंच समिति का, पहना सुन्दर जाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ।। 3 ।।
दश धर्मों के धनी आप ही, शूरवीर परिषह विजयी ।
हे त्रिगुप्ती धारी ऋषि मुनिवर, शुद्ध उपयोगी ज्ञानमयी ।।
पूरब भोग न चिन्तन करते, सुर पदवी की चाह नहीं ।
नहीं कोई प्रतिबंध है जिनको, सिर पर कोई भार नहीं ।।
आतम अनुभव अति आवश्यक, एक यही बस काम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ।। 4 ।।
बड़े पुत्र सर्वज्ञ प्रभु के, आनंद अमृत पीते हैं ।
प्रचुर स्वात्म रस संवेदन से, सच्चा जीवन जीते हैं ।।
चक्री शीश झुकाता फिर भी, रंच मान नहिं आता है ।
स्वर्गों जैसा वैभव भी प्रभु, तुमको लुभा न पाता है ।।
विषय कषायारम्भ न जिनके, ज्ञान ध्यान ही काम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ।। 5 ।।
यह अपूर्व अवसर कब पाऊँ, बाह्यान्तर निर्ग्रन्थ बनूँ ।
सर्व बंध-सम्बन्ध छोड़कर, महत् पुरुष के पंथ चलूँ ।
यही प्रतिज्ञा है हे भगवन, दूजी माँ न दुखी करुँ ।।
परम समाधि-मरण धारणकर, मृत्यु मेहात्सव सफल कँरु ।
मुक्ति-वधू ले जाये वहीं पर, जहाँ पूर्ण विश्राम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ।। 6 ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

मुनिवर-भक्ति हृदय बसे, देती पद निर्वाण ।
वन-वन विचरूँ नगन हो, कब दिन आवे धन्य ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।

Scanned with CamScanner

श्री गोम्मटेश्वर तीर्थ - पूजन

(पद्धरि)

हे बाहुबली हे आत्मबली, हे मोहजयी जिनवर महान।
हे वज्र तपस्वी महाऋषि, निजब्रह्मलीन आनंद धाम ॥
लिपटे भुजंग तन अंग अंग, लिपटी बेलें ज्यों तन मचान।
फिर भी थिर रहे महामुनिवर, कितना गाऊँ मैं गुरु यशगान ॥

(दोहा)

घोर परीषहजयी प्रभू, पोदनपुर के ईश।
गोम्मटेश हृदय बसो, जयवंतो जगदीश ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(छन्द-अवतार)

दर्शन अति महामनोज्ञ, प्रतिमा मनहारी।
अन्तर्मुख दृष्टि होय, दर्शत सुखकारी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन।
जय बाहुबलि भगवान, जल चरणन अर्पण ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति...

संताप रहित निज भाव, महिमा प्रगटायी।
भवताप नशावन हेतु, जिन शरणा भायी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी जग वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति...

अक्षत अखंड चिद्रूप, पद प्रभु दर्शाया।
पाऊँ अक्षत पद नाथ, दर्शत हर्षाया ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

चैतन्य ब्रह्म शिवरूप, ध्याऊँ अविकारी ।
दुर्दांत काम की पीर, मेटो भवहारी ।।
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति ...

प्रभु क्षुधा व्याधि को जीत, इन्द्रिय जय पायी ।
वर्षों तप किया महान, अचरज अति भारी ।।
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति...

ले ज्ञान दीप तप तेल, शोधा ध्रुव सारा ।
संसार समझ निःसार, तृणवत ही त्यागा ।।
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति...

प्रभु आर्त रौद्र दुर्ध्यान, तज निज ध्यान धरूँ ।
उत्तम क्षमादि दशधर्म लक्षण प्रगट करूँ ।।
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय सकल कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति...

प्रभु पुण्य पाप फल मांहि, दुख ही दुख पाया ।
भव-तरू का मूल मिथ्यात्व, क्षय हो जिनराया ।।
जयवन्ते तीर्थमहान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

भरतेश प्रथम चक्रेश, चरणन शिरनावे ।
हे प्रथम रतिपति नाथ, प्रथम मुक्ति पाये ।।
प्रतिमा अति महा मनोज्ञ, लख मन हर्षावे ।
इकटक निरखे भवि जीव, सुध बुध खो जावे ।।
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबलि भगवान, अर्घ्य करूँ अर्पण ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति ...

जयमाला

(दोहा)

आत्म ध्यान में मगन हो, पाया केवलज्ञान ।
भक्ति भाव पूरित हृदय, करूँ सहज गुणगान ।।

(पद्धरि)

हे महा तपस्वी बाहुबलि, हे आत्मबली महिमा महान ।
जयवंत रहे प्रभु जिनशासन, तुम सम जीतें रागादि थान ।।
प्रभु कामदेव पद पाकर भी, विषयों में तृप्ति नहीं पायी ।
संसार असार सहज लखकर, वैराग्य भावना उमड़ाई ।।
जब भरत चक्रवर्ती ने प्रभु, षट् खंड विजयश्री पायी थी ।
लेकिन बाहुबलि के सम्मुख, वह विजय स्वयं शर्मायी थी ।।
तीनों युद्धों में आप हुये विजयी, इतिहास बताता है ।
तत्काल दिगम्बर दीक्षा ली, गाता जग गौरव गाथा है ।।
पोदनपुर के सम्राट तुम्हें, महिमा न कभी जड़ की आयी ।
सब राज-पाट तृण-सम छोड़ा, पाने शिवपुर की ठकुरायी ।।
चैतन्य महासागर में प्रभु, नित आप मग्न ही रहते थे ।
जयवंत रहे जयवंत रहे, मुनि यती भव्य गुण गाते थे ।।
हे वज्र तपस्वी बाहुबलि, तुमने तप को अपनाया था ।
बेलें लिपटी प्रभुवर तन पर, पर ध्यान न विचलित हो पाया ।।
सर्पों की बांबी बनी प्रभु, तन पर भुजंग तब लिपट गये ।
मानो प्रभु के अभिनंदन में, वो अपने में ही सिमट गये ।।

Scanned with CamScanner

तीनों ऋतुयें बीती फिर भी, प्रभु ध्यान न पलभर भंग किया।
आहार विहार विकल्प नहीं, आनंद रसामृत पान किया ।।
चक्री ने नमन किया आकर, कैवल्य ज्ञान तब प्रकट हुआ।
अल्पज्ञ दशा का हुआ अंत, आनंद-आनंद भरपूर हुआ ।।
प्रभु शान्त सौम्य मुद्रा तेरी, गिरिविंध्याचल पर शोभ रही।
सारे जग की सुन्दरता को, यह अपने में ही गोप रही ।।
अति सुंदर विश्व विभूति थे, प्रतिमा भी मनहर लगती है।
जो एक बार दर्शन करता, छबि चित से नहीं उतरती है ।।
पक्षी उपसर्ग नहीं करते, छाया भी कभी न पड़ती है ।
तन-मन सब सुध खो जाती है, इतनी प्यारी छबि लगती है।।
वह धन्य हुये श्री नेमीचंद, जिन मुद्रा दर्शन करवाया ।
वे धन्य-धन्य चामुंडराय, प्रभु गोम्मटेश को पधराया ।।
प्रभु शरण आपकी आया हूँ, भव-सागर से कब तिर जाऊँ।
हे महातपस्वी बाहुबली, तुम जैसा ही शिवपद पाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति ...

(दोहा)

बाहुबली दर्शन हुये, महाभाग्य से आज ।
आतम दर्शन प्राप्त कर, पाऊँ शीघ्र स्वराज ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

निरखत जिनचन्द्र - वदन, स्व-पद सुरुचि आई।
प्रकटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की।
कला उद्योत होत काम- जामनी पलाई ।। निरखत. ।।
शाश्वत आनन्द स्वाद, पायो विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई ।। निरखत.।।
साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कैं आराधना सुहाई ।।निरखत.।।
धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्तें जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई ।। निरखत.।।

Scanned with CamScanner

आचार्य कुन्दकुन्द पूजन

(ताटंक)

हे कुन्दकुन्द आचार्य श्री, चैतन्य ऋद्धिधारी प्रणाम।
हे गगन बिहारी मुनि पुंगव, चैतन्य चक्रवर्ती ललाम॥
परमागम परमामृत रचना कर, कलीकाल सर्वज्ञ हुये।
हे मूल संघ के अधिनायक, तुम जैसे जग में तुम्ही हुये॥
आह्वानन करके आज तुम्हें, अपने मन में पधराऊँगा।
अपने उर के सिंहासन पर, गदगद हो नाथ बिठाऊँगा॥
मेरा आंगन पावन कर दो, हे नाथ हृदय में आ जाओ।
मेरे चैतन्य जिनालय में, हे मुनिवर आप समा जाओ॥

(दोहा)

हुये न हैं न होयेंगे, कुन्दकुन्द से देव।
महाभाग्य गुरूवर मिले, सहज मिटे भव टेव॥

ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव! अत्र अवतर - अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलि क्षिपामि।

(वीर)

परमागम का मकरंद अहो, मुनिवर निर्झर से झरता है।
परमामृत सेवन कर भविजन, चैतन्य कमल दल खिलता है॥
भगवान आत्मा सुनते ही, मिलती है शान्ति सहज स्वामी।
निर्मल जल चरण चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति ...

प्रभु सहज शान्त जीवन जीते, नहिं शत्रु मित्र का नाम कहीं।
चंदन-सी महक रही परिणति, करते समता रसपान सही॥
अहमिक्को खलु शुद्धो निर्मम, यह शांति मंत्र दातानामी।
चरणों में चंदन अर्पित है, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

चेतन की प्राण प्रतिष्ठा कर, अक्षय पद तुमने अपनाया ।
अक्षय स्वभाव का अनुभव कर, अक्षय वैभव ही दर्शाया ।।
ध्रुव अचल अनूपम गति पाऊँ, हो सफल साधना जग नामी।
अक्षत प्रभु चरण चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति...

शुभ-अशुभ विभावी भावों से, बस गुरूवर तुम्ही बचाते हो ।
आकिंचन अर ब्रह्मचर्य धर्म की, सबको सीख सिखाते हो ।।
विषयों में सुख की अभिलाषा से, सुखी कौन होगा स्वामी ।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति...

निर्दोष सरस आहार मिले, पर उदासीन ही रहते थे ।
शुद्धोपयोग से सहज तृप्त, आनंद रसामृत पीते थे ।।
है क्षुधा ज्ञान का ज्ञेय मात्र, यह बोध जगाऊँ हे स्वामी ।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति ...

कुछ मोह भाव वो नहीं मेरा, उपयोग मात्र हूँ दर्शाया ।
जिसमें सब ज्ञेय झलकते है, वह ज्ञायक प्रभु हूँ दिखलाया ।।
हूँ समयसार शाश्वत प्रदीप, चैतन्य दीप दाता नामी ।
मोहांध भाव क्षय हो जावे, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति...

आठों कर्मों में रहकर भी, आतम अबंध ही रहता है ।
गतियों में रहकर भी गति से, न्यारा अनुभव में आता है ।।
मैं हूँ अबद्ध अस्पर्शित प्रभु, चैतन्य रत्न निरखूँ स्वामी ।
दश धर्मों की सौरभ सुरभित हो, कुन्दकुन्द ऋषिवर स्वामी ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय सकलकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति...

जो शुद्ध स्वभाव निरखता है, वह शुद्ध बुद्ध हो जाता है ।
जैसी दृष्टी वैसी सृष्टी, भावों का फल वो पाता है ।।
शिवभूति मुनीश्वर सिद्ध हुये, तुष-मास मंत्र से हे स्वामी ।
अंजन फल मिला निरंजन पद, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति...

Scanned with CamScanner

हे श्रमण संस्कृति के गौरव, हे गगन-विहारी रमण राम।
हे पद्मनंदि हे वक्रग्रीव, हे कुन्दकुन्द मुनिवर प्रणाम ॥
हे गृद्धपिच्छ, श्री मुनि पुंगव, हे एलाचार्य गुरु महान।
हे वीतराग विज्ञान पथिक, सतपथदर्शी हे तीर्थधाम ॥
भक्ति भावों से अर्घ चढ़ा, अविचल अनर्घ प्रगटे स्वामी।
जयवंत रहे जिन धर्म सदा, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति ...

जयमाला

(दोहा)

कुन्दकुन्द की कलम को, नमन करूँ शतबार।
अद्भुत निधि तुम दे गये, समयसार सा सार ॥

(ताटंक)

आगर्भ दिगम्बर हे गुरुवर, हे पद्म-नंदि मुनिवर प्यारे।
आचार्य श्री हे मुनिपुंगव, जिन शासन के तुम रखवारे ॥
तुमने परमागम प्राभृत रच, सर्वज्ञ विरह को भुला दिया।
कलिकाल कोठरी महातमा में, तुमने दिव्य प्रकाश किया ॥
चेतन की प्राण प्रतिष्ठा की, अध्यात्म छंद तुमने गाये।
चिर निद्रा से हो जायें मुक्त, इस तरह दिव्य स्वर गुंजाये ॥
मैं हूँ स्वभाव से समयसार, यह समयसार में बतलाया।
जो काल अनंत नहीं समझा, वह कलीकाल में दर्शाया ॥
आचार्य श्री आत्मानुभूति में, मग्न सदा ही रहते थे।
अनुभव का अमृत पीते थे, भव बंधन सहज छुड़ाते थे ॥
पौन्नूरमलै पर हे गुरुवर, किस पावन तिथि पर आये थे ?
श्री समयसार जी रचने के, कैसे शुभ भाव संजोये थे ?
भगवान आत्मा अनुभवकर, लिख गये अमर वे गाथायें।
मैं नहिं प्रमत्त अप्रमत्त नहीं, ज्ञायक हूँ रच दीं रचनायें ॥
सीमंधर प्रभु के दर्शन का, गौरव गुरूवर तुमने पाया।

Scanned with CamScanner

चारण ऋद्धि के धनी किन्तु, चैतन्य ऋद्धि गौरव आया ।।
हे गुरुवर शाश्वत सुखदर्शक, रत्नत्रय पंथ तुम्हारा है ।
शुद्धोपयोगी हे सन्त नमूँ, बस आतम धर्म सहारा है ।।
परमागम प्राभृत भेंट दिया, अनमोल आत्मनिधि दर्शाने ।
चैतन्य निधि को भूले थे, सब अपनी महिमा को जाने ।।
विषयों की विषय वासना में, सारा जग पल-पल जलता है ।
करूणा के सागर आप बिना, यह व्यथा कौन हर सकता है ?
कैसे होंगे मुनि कुंदकुंद, कैसे छोटे लगते होंगे ?
ले पिछी कमंडलु ग्यार वर्ष में, गज-मंथर चलते होंगे ।।
पूरब भव में जब ग्वाला थे, तब तुमने शास्त्र का दान दिया ।
उस ज्ञानदान के फल से ही, मानो यह ज्ञान महान मिला ।।
वह धन्य हो गई घड़ी प्रभु, जिस क्षण समाधि की शरण बढ़े ।
कुन्दाद्री पर्वत धन्य हुआ, तुम जैसा योगी पाकर के ।।
वह धन्य हुई शान्तला मात, जिनने ऐसे सुत को जाया ।
वह धन्य धर्मी गुणकीर्ति पिता, जिनके घर योगी था आया ।।
वह धन्य हुई भारत भूमि, वो धन्य हुये भोजन-पानी ।
वे धन्य धर्मि-दाता जय हो, जय हो श्री कुन्दकुन्द ज्ञानी ।।

ॐ श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति ...

(दोहा)

कुन्दकुन्द आचार्य की, महिमा अपरम्पार ।
परम भक्ति हृदय बसी, यही करे भव पार ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

ज्ञानदान का स्वरूप और फल-

विद्या हि विद्यमानेयं वितीर्णापि प्रकृष्यते।
नाकृष्यते च चौराद्यैः पुष्यत्येव मनीषितम् ।।

किसी को भी विद्या देने से वह घटती नहीं है, अपितु बढ़ती है। उस विद्या को चोर लूट नहीं सकते, बन्धु-बान्धव उसमें से हिस्सा नहीं बाँट सकते, वह विद्या तो अपने इच्छित कार्यों को पूर्ण ही करती है !

Scanned with CamScanner

श्री आदिनाथ जिनेन्द्र पूजन

(स्थापना)

(वीर)

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर, के चरणों में करूँ नमन ।
मुक्ति मार्ग के प्रथम प्रवर्तक, श्री चरणों में अभिनंदन ।।
ब्रह्मा विष्णू आद्य महेश्वर, नाथ आप ही कहलाते ।
आप स्वयंभू अर जगदीश्वर, वृषभदेव जाने जाते ।।
भव्य जनों के भाग्य विधाता, आप हृदय में पधराओ ।
श्रद्धा भक्ति भाव विनय है, नाथ हृदय में बस जाओ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मानव छंद)

जीवत्व शक्ति से जीवन, पहचाना शिवपद पाया ।
प्रभु शान्त सौम्य मुद्रा लख, मेरा रोम-रोम हर्षाया ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति...

जिन शासन सत्य सनातन, सेवी सब सिद्ध हुये हैं ।
निज पर विवेक जागे बिन, भव ताप कलेश सहे हैं ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, चंदन नित चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति ...

तन मन धन सबसे न्यारा, चैतन्य स्वरूप दिखाते ।
अपने को पहिचाने बिन, गति-गति में गोते खाते ।।

Scanned with CamScanner

आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, अक्षत प्रभु चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति ...

प्रभु शील महाव्रत धारण, कर मुक्ति-वधू को पाये ।
आनंद मयी जीवन लख, संयम अपनाने आये ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, चरणों में सुमन चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति...

चैतन्य-रसामृत पीकर, परितृप्त हुये तुम त्यागी ।
आनंद अतीन्द्रिय पीते, मुनि वृंद महा बड़भागी ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, नेवज प्रभु चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति ...

प्रभु दिव्य देशना सुनकर, भ्रम मोहमहांध नशाऊँ।
अनुभवूँ ज्ञान की महिमा, मंगल प्रभात पा जाऊँ ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, मणि-दीपक चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति ...

जब आत्म विस्मरण होता, तब कर्म-चोर घर आते ।
जब आत्म जागरण होता, घर-धनी देख भग जाते ।।
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, पद धूप सुगंध चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति ...

शुभ-अशुभ कर्म के फल में, संसार मिला भटकाया ।
स्वर्गों सी अमरपुरी में, भी कौन अमर हो पाया ?
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, निर्मल फल चरण चढ़ाऊँ ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति ...

Scanned with CamScanner

प्रभु भक्ति भाव से पूजन, करते मन हर्षित भारी।
पदवी अनर्घ पाने को, चरणों में खड़ा पुजारी ॥
भव की सामग्री पाने, तो अर्घ्य अनंत बनाये।
अरहंत दशा तुम जैसी, पाने अब शरणा आये ॥
आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर, वसु विधि ले अर्घ्य चढ़ाऊँ।
ध्रुवधाम ध्येय की धुन में, तुम जैसा ही खो जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंचकल्याणक)

(सोरठा)

द्वितिया कृष्ण आषाढ़, मरू देवी उर में बसे।
मंगलमय दिन आज, धन्य धर्म बरसा हुई ॥

ॐ ह्रीं श्री आषाढ़ कृष्ण द्वितियायां गर्भ कल्याणक विभूषिताय आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम जन्म महान, चैत्र वदी नवमी दिना।
खुशियां अपरम्पार, तीन भुवन आनंदमय ॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्र कृष्ण नवमम्यां जन्म कल्याणक विभूषिताय आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकांतिक सुर आय, धन्य विचारी हे प्रभु।
चैत्र वदी नव धन्य, तप कल्याण मनायें हम ॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्र कृष्ण नवमम्यां तप कल्याणक विभूषिताय आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगट्यो केवलज्ञान, फाल्गुन वदी एकादशी।
धर्मतीर्थ सुखकार, खिरी दिव्य प्रभु देशना ॥

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्ण एकादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया प्रभु निर्वाण, धन्य हुई कैलाश गिरि।
माघ चर्तुदशी कृष्ण, नमन करूँ कर जोरिके ॥

ॐ ह्रीं श्री माघ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

(दोहा)

दासोऽहं रटता हुआ, आया प्रभु के पास ।
'द' दरसत ही मिट गया 'सोऽहं' रहा प्रकाश ।।
सोऽहं सोऽहं ध्यावता, रह नहिं सका 'स' कार।
दास अहं मय हो गया, अविनाशी अविकार ।।

(चौपाई)

जय जय श्री आदीश्वर स्वामी, प्रथम तीर्थंकर हो जगनामी।
सारे जग में नाम तुम्हारा, ब्रह्मा विष्णु कहे जग सारा ।।
जिन शासन के हो रखवारे, मोक्षमार्ग दर्शावन हारे ।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, राग-द्वेष जीते जगदीश्वर ।।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आये, नगर अयोध्या उत्सव लाये ।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, जन्मे थे तुम जब त्रिपुरारि ।।
भोग भूमि का अंत था आया, तुमने ही जीवन सिखलाया।
लाख तेरासी पूर्व बिताये, तत्त्व ज्ञान में रंगे-समाये ।।
ज्ञान विराग शक्ति के धारी, मुक्ति वधू वरने तैयारी ।
पावन जनम दिवस जब आया, सुरपति ने तब रास रचाया ।।
लख नीलांजन के जीवन को, पल भर में हुई प्राप्त निधन को।
धिक-धिक स्वारथ वृत्ति सारी, क्षण-भंगुर सब ही संसारी ।।
भव वन में जी भर भरमाया, शांति-सुधा का रंच न पाया।
जाति-स्मरण भव दिखलाये, अन्तर में वैराग्य समाये ।।
प्रभु जिनेश्वरी दीक्षा धारी, मुक्ति वधू वरने तैयारी ।
कर्म घातिया सब विनसाये, अपने प्रभु में आप समाये ।
शुक्ल ध्यान तुमने अपनाया, केवलज्ञान सहज प्रगटाया ।।

Scanned with CamScanner

समवशरण की शोभा न्यारी, गूंजी दिव्य देशना प्यारी ॥
भव्यजनों ने मोद मनाया, निज स्वभाव समझा सुख पाया।
वर्ष हजारों मर्म बताये, भरत क्षेत्र के भाग्य जगाये ॥
श्री कैलास शिखर जब आये, योग निरोध में ध्यान जमाये।
इसी भूमि पर ली ठकुराई, पावन हो गई धरती सारी ॥
भरतक्षेत्र के प्रथम तीर्थंकर, मोक्षमार्ग उद्घाटक प्रभुवर।
आदिनाथ प्रभु मुक्ति पधारे, आप तरे अगणित जन तारे ॥
धन्य भाग्य प्रभु दर्शन पाये, भव-भय से प्रभु कौन बचाये।
जीवन अपना धन्य बनाऊँ, ज्ञान ध्यान वैराग्य जगाऊँ॥
शुद्धातम का अनुभव पाऊँ, अपनी प्रभुता सहज जगाऊँ।
भवसागर से पार उतारो, आदि प्रभु जी हमें उबारो ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

तीर्थधाम कैलासगिरि, पाया पद निर्वाण।
मंगलार्थी मैं भी बनूँ, होय सहज कल्याण ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

'तीर्थवन्दना की सार्थकता'

अहो... शाश्वत् तीर्थस्वरूप शुद्धात्मा की आराधना का उत्साह जाग्रत होने पर ही तीर्थवन्दना सार्थक होती है।

है तीर्थ शाश्वत आत्मा, उसका आराधन जो करें।
वे आत्म आराधक जगत में, चरण पावन जहँ धरें॥
वे तीर्थक्षेत्र कहाय सुखकर, भाव से वन्दन करूँ।
हो आत्म साधक रत्नत्रय, परिपूर्ण कर भव से तिरूँ।

Scanned with CamScanner

श्री शांतिनाथ पूजन

(गीतिका)

श्री शांतिनाथ जिनेश की, सविनय करूँ मैं वंदना।
तीर्थेश चक्री रतिपति, भूषित प्रभु की अर्चना ॥
सिद्ध पद को साधकर प्रभु, शुद्ध बुद्ध स्वयं हुये।
परम शांति अपूर्व पाऊँ, आओ प्रभु मेरे हिये ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(छन्द-सखी)

संसार गहन वन में प्रभु, कोई न सहारा पाया।
ममता का बंधन कैसा, सुलझाने में उलझाया ॥
बिन आत्म ज्ञान के भगवन, तीनों पन व्यर्थ गंवाये।
हे शांति ! शांति-विधिदाता, अब शरण तिहारी आये ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जनमजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

जड़ चेतन की सब परणति, स्वाधीन सदा ही होती।
आधीन बनाने की ही, आकुलता नित प्रति रहती ॥
चंदन-सी शीतलता प्रभु, जीवन में कब आ जाये।
हे शांति ! शांति विधिदाता, हम शरण तिहारी आये ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत स्वभाव अपनाया, अक्षत स्वभाव दर्शाया।
हो उदासीन जग भर से, अब शरण आपकी आया ॥
संयोग वियोग लिये हैं, मन किसकी आश लगाये।
हे शांति ! शांति-विधिदाता, हम शरण तिहारी आये ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

प्रभु काम-भोग बंधन की, परणति क्यों रह-रह आती ?
विषयों के सेवन से तो, विपदा बढ़ती ही जाती ।।
तीर्थंकर चक्री रतिपति, पद पाकर नहीं लुभाये ।
हे शांति ! शांति के दाता, हम शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इक-इक विषयों के वश हो, प्राणी प्रिय जान गंवाता।
गज मृग अर मीन पतंगा, गति देख ये मन घबराता ।।
चक्री ब्रह्मदत्त सुभौम, षट्खंडी तृप्ति ना पाये ।
हे शांति ! शांति के दाता, हम शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य ज्ञान दर्पण में, झलके पल-पल जग सारा ।
यह चमत्कार चेतन का, जग का यह जाननहारा ।।
है अगम ज्ञान की महिमा, प्रभु तुम बिन कौन बताये ?
हे शांति ! शांति पद दाता, हम शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोह महांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

मिथ्यात्व असंयम अविरति, परमाद कषायें सताती ।
प्रभु आर्त-रौद्र परिणति ही, है मुझको नाच नचाती ।।
सत्तर कोड़ा-कोड़ी के, कर्मों से तुम्ही बचाते ।
हे शांति ! शांति-विधिदाता, ह शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी त्याग तपस्या भी की, अरू साधू पद भी पाया ।
शुद्धातम हूँ न समझा, बिन आत्मशांति दुख पाया ।।
संसार पाप-पुण्यों के, फल अब तक मैंने पाये ।
हे शांति ! शांति के दाता, हम शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सोलहवें तुम्हीं तीर्थंकर, पंचम चक्राधिपति हो ।
हो कामदेव बारहवें, पद पाकर भी त्यागी हो ।।
हे नाथ ! विश्व सारा ही, है गीत तुम्हारे गाता ।
सब शांति विधान रचाते, तू ही प्रभु शांति विधाता ।।
हम अर्घ्य सजाकर लाये, छवि वीतराग मन भाये ।
हे शांति ! शांति के दाता, हम शरण तिहारी आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक

(सोरठा)

देखे सोलह स्वप्न, प्रभु पधराये गर्भ में ।
ऐरा माँ हुई धन्य, भादों वदि सप्तमि दिना ।।

ॐ ह्रीं श्री भादोवदि सप्तमी गर्भ कल्याणक विभूषिताय शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐरावत असवार, प्रभु अभिषेक सुमेरू पर ।
हर्षित तीनों लोक, जेठ चतुर्दशि धनि घड़ी ।।

ॐ ह्रीं श्री जेठकृष्णचतुर्दश्यां जन्म कल्याणक विभूषिताय शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाना जगत असार, दीक्षा धरी जिनेश्वरी ।
लोकांतिक ऋषि आय, जेठ चर्तुदशि शुभ घड़ी ।।

ॐ ह्रीं श्री जेठकृष्णचतुर्दश्यां तप कल्याणक विभूषिताय शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

खिरी दिव्यध्वनि सार, प्रभु पायो कैवल्य धन ।
पौष सुदि दश धन्य, धर्म सभा शोभे सुखद ।।

ॐ ह्रीं श्री पौषसुदिदशमी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शाश्वत तीरथ धाम, श्री सम्मेदाचल महा ।
पायो प्रभु निर्वाण, जेठ चर्तुदशी शुभ दिवस ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ सुदीचतुर्दशी मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

जयमाला

(दोहा)

शांतिनाथ जिनराज की, जग में ख्याति अपार।
शांति प्राप्त हो हे प्रभु, आया तेरे द्वार ।।
अन्तर्मुख छबि आपकी, चित सिंहासन धार।
नाम मात्र भी जो जपे, विघ्न व्याधि हो क्षार ।।

(चौपाई)

जय जय शांतिनाथ जिन स्वामी, सहज शांति दाता सुख नामी।
सारे जग में नाम तुम्हारा, भव्यजनों को लागे प्यारा ।।
सोलहवें प्रभु हुये तीर्थंकर, कामदेव चक्री पदवीधर।
प्रभु सर्वार्थसिद्धि तें आये, तीन ज्ञानधारी कहलाये ।।
नगर हस्तिनापुर तीर्थेश्वर, जन्मे हर्षित त्रिभुवन सुर नर।
जन्मत ही नारकि सुख पाये, तीन भुवन आनंद मनाये ।।
षट खंडाधि विजय श्री पायी, तृप्ति न उसमें कहीं दिखाई।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्तकर, कभी गर्व नहिं आया उन पर ।।
दर्पण मोही जीव निहारे, जड़ देखे अर जड़हि संवारे।
तुमने दर्पण सहज निहारा, दीक्षा लेने भाव संवारा ।।
जो जाने सो जाननहारा, और सभी कुछ मुझसे न्यारा।
जाति स्मरण में सब जाना, धिक्-धिक् जग वैराग्य समाना ।।
अहो जिनेश्वरी दीक्षा धारी, लौकांतिक अनुमोदनकारी।
जयवंते मुनिधर्म तीर्थेश्वर, सोलह वर्ष रहे योगीश्वर ।।
केवलज्ञान दशा प्रगटायी, खिरी दिव्यध्वनि अति सुखदायी।
मोहीजन तुमको न जाने, लेके मनोकामना आवें ।।
हे प्रभु ! तुम हो अर्न्तयामी, वीतराग शाश्वत सुखधामी।
वीतराग-निधि तुम देते हो, ममता मोह सहज हरते हो ।।
भविजन शरण तुम्हारी आते, भेदज्ञान कर समता पाते।
विषयों में मन कभी न जाये, तुम समान परणति हो जाये ।।

Scanned with CamScanner

श्री सम्मेद शिखर पर आये, कूट कुंदप्रभ से शिव पाये ।
तीर्थ व्युच्छिती कभी न आयी, जब से तुमने ली ठकुरायी ।।
श्री आहार पपौरा तीरथ, थोवन रामटेक सोनागिर ।
बहोरीबंद है तीरथ सुंदर, तुमसे शोभित हैं जिन मंदिर ।।
आत्मार्थी दर्शन पाते हैं, सुंदर छबि लख खो जाते हैं ।
तत्वारथ श्रद्धान जगाऊँ, तुम समान समता सुख पाऊँ ।।
हे प्रभो शांतिनाथ जिन स्वामी, शांति-विधी दाता जगनामी ।
बार-बार वंदन करता हूँ, शांत छबि मन में भजता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

हिरन चिन्ह शोभे प्रभु, शांतिनाथ भगवान ।
आत्म शांतिदाता तुम्ही, जग गावे यशगान ।।
शांतिनाथ जिनवर नमूँ, ऋद्धि-सिद्धि दातार ।
भाऊँ आतम भावना, हो जाऊँ भव पार ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

वीर जिनेश्वर अब तो मुझको, मुक्ति मार्ग बतलाओ ।
निज को भूल बहुत दुख पाये, अब मत देर लगाओ ।। टेक ।।
जाना नहीं आपको मैंने, पंच पाप में लीन हुआ ।
आतमहित में रहा आलसी, विषयन माहिं प्रवीन हुआ ।
छूटैं विषय-कषाय प्रभो, ऐसा पुरूषार्थ जगाओ ।। 1 ।।
पर में इष्ट-अनिष्ट ठानकर, हर्ष-विषाद सु-माना ।
पर निरपेक्ष सहज आनन्दमय, ज्ञायकतत्त्व न जाना ।।
महिमावंत परम ज्ञायक प्रभु, अब मुझको दरशाओ ।। 2 ।।
आस्रव-बंध हैं दुख के कारण, संवर-निर्जरा सुख के ।
चतुर्गति दुखरूप अवस्था, सुख मुक्ति में प्रगटे ।।
अब तो स्वामी शिवपथ में, मुझको भी शीघ्र लगाओ ।।3।।
ऐसी स्तुति करते-करते, इकदिन मन में आई ।
कैसे अन्तस्तत्त्व 'आतमन्', बाहर देय दिखाई ।
प्रभो आपकी मुद्रा कहती अन्तर्दृष्टि लाओ ।।4 ।।

Scanned with CamScanner

श्री पारसनाथ पूजन

(स्थापना)

पारस नाम, पारस नाम, मेरे प्रभु का पारस नाम।
सब सुख धाम, प्रभु का नाम, मेरे प्रभु का पारस नाम॥
समता सागर आप कहाये, कमठासुर का मान गलाये।
भक्त बने तेरे भगवान, मेरे प्रभु का पारस नाम॥
श्री सम्मेद शिखर पर आये, आत्म ध्यान धर शिवपद पाये।
पाया शाश्वत सुख विश्राम, मेरे प्रभु का पारस नाम॥
अन्तर्मुख मुद्रा अति प्यारी, आत्म शांति दर्शावनहारी।
आओ पधारो प्रभु अभिराम, मेरे प्रभु का पारस नाम॥

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अवतार)

समता सागर जिननाथ, चरण शरण आया।
अन्तर्मुख शान्त स्वरूप, लख प्रभु हर्षाया॥
हे पार्श्वनाथ जिनराज, दर्शन सुखकारी।
हे क्षमा मूर्ति भगवान, भविजन हितकारी॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सी शीतल शान्त, दिव्य ध्वनि तेरी।
लख नाग नागिनी पीर, मुक्त कियो तुम ही॥
हे पार्श्वनाथ जिनराज, दर्शन सुखकारी।
हे क्षमामूर्ति भगवान, भविजन हितकारी॥

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अक्षय पद दाता नाथ, अक्षय पद ध्याऊँ ।
क्षत का अभिमान असार, तज ऋजुता लाऊँ ।।
हे पार्श्वनाथ जिनराज, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति भगवान, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे बालयति जिनदेव, काम-विजय पाई ।
है विकट वासना व्याधि, जीती दुखदाई ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा-व्याधि को जीत, तुम अर्हन्त हुये ।
अष्टादश दोष निवार तुम भगंवत हुये ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप रतन-उद्योत, रवि - शशि तम न हरे ।
प्रभु भेद विज्ञान प्रकाश, मोह महांध नशे ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु किया क्रोध का त्याग, कर्म नशे कैसे ?
ज्यों शीतल पड़े तुषार, फसल जले जैसे ।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

विषमय विधि फल को त्याग, शिवफल प्राप्त किया।
फल पाऊँ तुम समनाथ, दर्शत भाव जगा ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कमठ किया उपसर्ग, दश दश भव भारी।
बन गया जैन वह जीव, लख समता थारी ।।
प्रभु भक्ति भाव से आज, अर्घ्य लिये आया।
पाऊँ अनर्घ पद नाथ, तुम सम प्रभु पाया ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, दर्शन सुखकारी ।
हे क्षमामूर्ति जिनराज, भविजन हितकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंचकल्याणक अर्घ्य)

(सोरठा)

दोज वदी वैशाख, अंतिम गर्भ कल्याण शुभ।
वामा माता धन्य, दिक्कुमारी सेवा करें ।।

ॐ ह्रीं श्री वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भ मंगल विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति।

तिथि एकादशि पौष, अंतिम जन्म लियो प्रभू।
तीन भुवन आनंद, गिरि सुमेर तीरथ हुआ ।।

ॐ ह्रीं श्री पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति।

लख संसार असार, साकेत वैभव श्रवण कर।
एकादशि तिथि पौष, पारस प्रभु दीक्षा धरी ।।

ॐ ह्रीं श्री पौष कृष्ण एकादश्यां तपो मंगल विभूषिताय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति।

Scanned with CamScanner

चैत्र चतुर्थी धन्य, ज्ञान ज्योति जगमग जली।
खिरी देशना दिव्य, भाग्य विधाता भविक के॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्र कृष्ण चतुर्थी केवलज्ञान मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति।

शिखर सम्मेद महान, टोंक सुवर्णभद्र नित नमूं।
प्राप्त कियो निर्वाण, श्रावण शुक्ला सप्तमी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष मंगल मंडिताय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति।

जयमाला

(दोहा)

गुण अनंत के हो धनी, प्रभु पारस भगवान।
भक्ति हृदय में गूंजती, करूँ सहज गुणगान॥

(वीर छंद)

हे पार्श्वनाथ, करूणानिधान, महिमा महान मंगलकारी।
हे क्षमामूर्ति ! जयवंत रहो ! हे सौम्यमूर्ति ! महिमा धारी॥
हे अश्वसेन वामानंदन, तुम नगर बनारस जन्म लिया।
अपना जीवन तो धन्य किया, सारी जगती को धन्य किया॥
गजराज योनि में हे भगवन्, तुमने सम्यक दर्शन पाया।
संयम धारण कर लिया प्रभो, विषयों का रस सब ठुकराया॥
प्रभु जुगल नाग नागिन जलते, देखा संबोधन उन्हें दिया।
वो पदमावति धरणेन्द्र हुये, अपना जीवन उन धन्य किया॥
प्रभु विषय-वासना जय पाने, हुई उदासीन परणति प्यारी।
भर यौवन में दीक्षा धारी, शिव रमणी वरने तैयारी॥
प्रभु आप ध्यान में मग्न रहे, लख कमठ क्रूर अति बौराया।
प्रभु पर उपसर्ग किया भारी, ओले पत्थर जल बरसाया॥
श्रेणी आरोहण हुआ तभी, कैवल्य ज्ञान प्रभु ने पाया।

Scanned with CamScanner

हुई समवशरण रचना सुंदर, भविजन अमृत पीने आया ॥
कोई अन्तरिक्ष पारस कहता, कोई चिन्तामणि पारस जाने।
सांवलिया पारसनाथ तुम्हें, कह गाते भक्त सदा गाने ॥
तुम तो प्रभु वीतराग जिनवर, सर्वज्ञ हितैषी तीर्थंकर।
भव-भव की करुण कथा बीती, तुम तो प्रभु मुक्त हुये दिनकर ॥
भौतिक पारसमणि तो केवल, लोहे को स्वर्ण बनाता है।
लेकिन जो पार्श्व शरण आता, वह स्वयं पार्श्व बन जाता है ॥
जो भक्ति भावना से प्रभु की, हर्षित हो पूजन करते हैं।
वो सर्व सिद्धियाँ पाते हैं, सेवा को देव तरसते हैं ॥
कुछ भोले प्राणी प्रभु सम्मुख, धन-धान्य मांगने आते हैं।
तुमने निःसार समझ त्यागा, वो इसमें लाभ समझते हैं ॥
प्रभु के विहार करने से ही, भूमि बिहार यह कहलाई।
लाखों ऋषि मुनि यति सन्तों ने, यहीं दिव्य देशना बरसाई ॥
सांवलिया पारसनाथ शिखर जी, भले विराजे कहते हैं।
तुम सम ही मुक्त दशा पायें , हम शत-शत वंदन करते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

(दोहा)

सर्प चिह्न प्रभु पग बसे, पार्श्वनाथ भगवान।
चेतन चिन्ह हृदय बसे, क्यो न होय निर्वाण ॥

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

जिनेन्द्र स्तुति

करनौं कछु न करतैं कारज, तातैं ध्यानि प्रलंब करे हैं।
रह्यौ न कछु पांयन तैं पैवौ, ताही तैं पद नाहिं टरे हैं ॥
निरख चुके नैनन सब यातैं, नैन नासिका अनी धरे हैं।
कानन कहा सुनैं यौं कानन, जोगलीन जिन राज खरे हैं ॥

Scanned with CamScanner

श्री भगवान महावीर पूजन

देवाधिदेवं गत सर्व दोषं, स्वानंदभूतं धृत शांत रूपम् ।
नरामरेन्द्रेर्नुत पादयुग्मं, श्री वीरनाथं प्रणमामि नित्यम् ।।

(चांद्रायण छंद)

शासन नायक वर्धमान की करूँ वंदना ।
सन्मतिदाता सन्मति प्रभु की करूँ अर्चना ।।
महामहिम महावीर मोह को दूर भगाया ।
धर्म अहिंसा का सब जग को पाठ पढ़ाया ।।
अनेकान्त का मंगल सूत्र हमें पहनाया ।
सन्तोषामृत पीने धर्म अकिंचन गाया ।।
आओ हमारे हृदय वीर प्रभु सन्मति आओ ।
वर्धमान महावीर पधारो बोधि जगाओ ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मानव छंद)

प्रभु भक्तिभाव - जल से, नित तेरे चरण पखारूँ ।
अन्तर्दृष्टी हो तुम सम, जन्मादि व्याधि निरवारूँ ।।
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, जन्मादि व्यथा हर लेना ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर भावों की ममता में, जल-जल अगणित दुख पाये ।
बस अनेकान्त विद्या ही, भव-तरणी ताप मिटावे ।।
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, भवताप आप हर लेना ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

क्षणभंगुर जीवन कलियाँ, कब कौन घड़ी मुर्झावे ?
अक्षत पद पाया तुमने, अक्षय पद पाने आये ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ॥
अतिवीर धीर बन जाऊँ, भव भ्रमण शीघ्र हर लेना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म भावना भाऊँ, विषयों में नहीं लुभाऊँ ।
परिवर्तन पंच सहे दुख, तज सप्त व्यसन सुख पाऊँ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, प्रभु काम व्यथा हर लेना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार चंदनासति से, लेकर अभिशाप मिटाया ।
ली क्षुधा व्याधि से मुक्ति, कैवल्य आज प्रगटाया ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, यह क्षुधा-व्याधि हर लेना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अंधियारा, भव-भव स्वामी दुख पाये।
तुम्हें दीपावली मुबारक, मेरा एक दीप जल जावे ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, मिथ्यात्व-तिमिर हर लेना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं आर्त-रौद्र परिणति हो, वो सहज समाधि लगाऊँ।
हो सहज तत्व आराधन , निष्कर्म दशा अपनाऊँ ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, प्रभु अष्ट कर्म क्षय करना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

शुभ-अशुभ भाव के फल में, चहुँगति दुख ही दुख पाया।
कभी ज्ञानाभ्यास किया ना, अब शरण तिहारी आया ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, निर्वाण महा फल देना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य सजाकर लाया, पाऊँ अनर्घ पद स्वामी।
तुमही अनन्त सुख सागर, दाता हो अर्न्तयामी ॥
हे महावीर प्रभु मेरे, सन्मति प्रभु सन्मति देना ।
अतिवीर धीर बन जाऊँ, समता समाधि प्रभु देना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंचकल्याणक अर्घ्य)

(सोरठा)

सुदि अषाढ़ षष्ठमि दिना, मां त्रिशला उर आय।
रत्नों की बरसा हुई, सुरपति मन हर्षाय ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगल विभूषिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

चेत सुदी तेरस तिथि, धन्य प्रभू अवतार ।
तीन लोक आनंदमय, हरि मन हर्ष अपार ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगल विभूषिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी दिना, जाना जगत असार।
दीक्षा धरी जिनेश्वरी, धन्य ज्ञान वैराग ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगल विभूषिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

दशमी सुदि वैसाख की, उपजो केवलज्ञान ।
दिव्य ध्वनि सुन भव्यजन, करें आत्मकल्याण ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कार्तिक श्याम अमावसी, पायो प्रभु निर्वाण।
पावापुर तीरथ हुआ, दीपावलि शुभ जान ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णअमावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

धीर वीर गंभीर प्रभु, महावीर भगवान।
वर्धमान सन्मति प्रभु, नमूँ जोर जुग पान ॥

(मानव छंद)

हे वीतराग प्रभु सन्मति, सन्मति दाता अभिनंदन।
आदर्श तुम्ही अशरीरी, मेटो भव भव के बंधन ॥
हे वीतराग प्रभु मेरे, जिनशासन दुर्लभ पाया।
भव-भव विषयों में फंसकर, पल-पल अनंत दुख छाया ॥
मन-मंदिर में प्रभु तेरी, दिन-रात गूंजती बातें।
मैं भी प्रभु मुक्ति लहूँगा, होंगी अमृत बरसातें ॥
पर्याय सिंह की पायी, मुनिवर संबोधन भाया।
सम्यक दर्शन पाकर के, शिव मार्ग सत्य अपनाया ॥
त्रिशला के राजदुलारे, ज्ञानी ध्यानी वैरागी।
शादी प्रसंग ठुकराया, धुन मुक्ति वधू की जागी ॥
प्रभु शांत सौम्य छबि तेरी, अन्तर्मुख मुद्रा प्यारी।
हर पल ही रहूँ निरखता, पा जाऊँ पद अविकारी ॥
प्रभु तेरे दर्शन से ही, निज दर्शन सम्यक पाऊँ।
चैतन्य प्रभू अनुभव कर, प्रभुता के गीत गुंजाऊँ ॥
हे नाथ तीर्थपति तुमने, बतलाया धर्म अहिंसा।
साक्षात मुक्ति का कारण, मेरा मन करे प्रशंसा ॥
भगवान आप भक्तों से, कुछ देते न कुछ लेते।
पर भक्त आपसे भक्ति, में मुक्ति-मंत्र ले लेते ॥

Scanned with CamScanner

परिणाम सहज परिणमता, ध्रुव यूं का यूं रह जाता ।।
ऐसा प्रभु ज्ञायक हूँ मैं, मुक्ति का स्वयं विधाता ।
बस जाननहार जनाता, परमार्थ यही मनभाता ।।
प्रभु पुण्य-पाप परिणति से चेतन का कैसा नाता ?
ग्यारह गणधर में पहले, गौतम थे गणधर ऋषिवर ।
त्रय लाख श्राविकायें थीं इक लाख थे श्रावक सुंदर ।।
भावी तीर्थंकर श्रेणिक राजा भी यहीं विराजे ।
थे सप्त शतक केवलि प्रभु सब अंतरिक्ष में राजे ।।
जिनशासन अहो ! अकर्ता-वादी शासन कहलाता ।
जो जैसी दृष्टि रखता, वह फल वैसा ही पाता ।।
प्रभु धन्य-धन्य तुमने ही, मुक्ति की राह दिखाई ।
अपनी निधि अपने में ही, सुख शांति अपूरव आई ।।
प्रभु सदा आपको ध्याऊँ, तुम जैसा ही बन जाऊँ ।
जो भूल हुई अब ना हो, बस निज प्रभु में रम जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वामीति स्वाहा।

(दोहा)

सिंह चिन्ह शोभित चरण, महावीर भगवान ।
मोह शत्रु पर जय करूँ, पाऊँ पद निर्वाण ।।

(परिपुष्पांजलि क्षिपामि)

सुपार्श्वनाथ स्तुति

पारस सुपारस है वही पारस करे जो लोह को ।
वह आत्मा ही है सुपारस जो स्वयं निर्मोह हो ।।
रति राग वर्जित आतमा ही लोक में आराध्य है ।
निज आतमा का ध्यान ही बस साधना है साध्य है ।।

Scanned with CamScanner

श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पूजन

स्थापना

(दोहा)

शाश्वत शिखर सम्मेद श्री, तीरथराज महान।
मुनि अनंत भगवंत ने, यहीं लिया निर्वाण ॥

(चांद्रायण छंद)

तीन काल के जिनवर सिद्ध होंय जिस भू पर।
तीन काल के मुनिवर चरण पड़े जिस दर पर ॥
तीन काल के भव्य इसी भू पर आते हैं।
शाश्वत सिद्ध क्षेत्र का यश गणधर गाते हैं ॥
तीर्थराज सम्मेदाचल की करूँ वंदना ।
भावतीर्थ से तिरुँ करुँ आतम - आराधना ॥
मुनि अनंत निर्वाण पधारे सम श्रेणी में ।
तीन लोक सिर राज रहे कलगी सम प्रभु जे ॥
आओ पधारो नाथ सभी तीर्थंकर आओ ।
कोटि-कोटि मुनि मुक्त हुये सब हृदय समाओ ॥
शाश्वत सिद्धिधाम, तुम्हारा अभिनंदन है ।
मुक्ति पधारे कोटि-कोटि प्रभुवर वंदन है ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

(वीर)

मुनिवृंदों के पावन थल का, कण-कण वैराग्य जगाता है।
सम्मेदशिखरजी तीर्थ सदा, आराधक भाव सजाता है ॥
निज मंगलमय शुद्धात्म तीर्थ, जीवन मंगलमय हो जाये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जो भाव सहित वंदन करते, सिद्धों सम ध्यान लगाते हैं।
भवताप रहित हो जाते हैं, वे जगत पूज्य बन जाते हैं।।
चंदन से चरचूं चरणाम्बुज, जो सन्त मुनि भगवंत हुये।
जयवंते श्री सम्मेद शिखर, जयवंते मुनि जो मोक्ष गये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत मुक्ति का पावन थल, सम्मेद शिखर कहलाता है।
तीर्थंकर हुये अनंत मुक्त, सबका यह मोक्ष विधाता है।।
चारों ही गतियाँ अति दुखमय, अक्षयपद पाकर मुक्त हुये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम भावना भाकर प्रभु-तुम कामजयी हो गए नाथ।
चैतन्य ब्रह्म को निरख रहे, तुम सम हो जाउँ मैं सनाथ।।
एकाभवतारी लौकांतिक, अनुमोदन करते धन्य भये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे महातपस्वी महातीर्थ, है ज्ञानस्वभाव अनाहारी।
इस देह-व्याधि के मंदिर से, छोड़ूँ मैं भी रिश्तेदारी।।
इस क्षुधा-व्याधि को जीत सकूँ, वंदूँ प्रभु तुम तो मुक्त हुये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक जितने भी सिद्ध हुये, अर जो भविष्य में भी होंगें।
सब भेदज्ञान की ज्योति जला, अनुभव कर मुक्ति श्री लेंगे।।
इस महाज्योति से ज्योति जला, वंदूँ मुनिवर जो मुक्त हुये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हँस हँसकर कर्म सदा बांधे, रो रोकर सहता आया हूँ।

Scanned with CamScanner

अपनी प्रभुता को भूल गया, भव-भव में गोते खाया हूँ॥
संसार महासागर दुखमय, वसु कर्म नाश भव-मुक्त हुये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म तत्त्व का अनुभव ही, शाश्वत तीरथ सम्मेद शिखर।
यह ही भव्यों को धर्मस्थल, बस भाव वंदना होय सफल॥
प्रभु पाप-पुण्य फल से विरक्त, निज रस में आप प्रमत्त हुये।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि जो मोक्ष गये॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जयवंते तीर्थ सम्मेद शिखर, जयवंते आराधक महान।
जयवंते रत्नत्रय तीरथ, सर्वोदय तीरथ मुक्ति-यान॥
पंचमगति पाने भव्य पथिक, मुनि वृंद यहाँ ही आते हैं।
शुद्धातम ध्यान लगाते हैं, भव-सागर से तिर जाते हैं॥
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, पाऊँ अनर्घ पद हे स्वामी।
जयवन्ते श्री सम्मेद शिखर, जयवन्ते मुनि अर्न्तयामी॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर क्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(ताटंक)

जय तीर्थराज सम्मेद शिखर, भविजन ही दर्शन पाता है।
यहीं आतम ध्यान लगाता है, यहीं सिद्ध प्रभू बन जाता है॥
पर्वत का कण-कण वंदनीय, सिद्धों की याद दिलाता है।
हे जीवराज ! जागो सत्वर, यह अवसर तुम्हें जगाता है॥
तीर्थंकर बीस जिनेश्वर ने, यहाँ मुक्तिवधू का वरण किया।
मुनिराज असंख्य अनंतों ने, कण-कण को आकर धन्य किया॥
जहाँ साधु संत के चरण पड़ें, वह भूमि तीर्थ हो जाती है।
यहाँ द्रव्य तीर्थ और भाव तीर्थ, संगम सरिता दिखलाती है॥
दिनकर की प्रतिदिन शुभ यात्रा, इस गिरि वंदन से होती है।

Scanned with CamScanner

प्रभु पारस शरण जिसे मिलती, वह पाता निश्चित मुक्ति है ।।
सीता गंधर्व सरस झरने, मुक्ति के गीत सुनाते हैं ।
साधक सन्तों के पग धोकर, अपना सौभाग्य बढ़ाते हैं ।।
सुरपति अपने परिवार सहित, यहाँ भक्ति-भाव से आता है।
एकाभवतारी इन्द्रराज, मुक्ति के वाद्य बजाता है ।।
श्री कुंथुनाथ कुन्थु-रक्षक, यह प्रथम टोंक सबसे मंगल ।
मन हर्षित गदगद हो जाता, जब मिलते प्रभु के चरण धवल ।।
चौबीस जिनेश्वर के गणधर, शुद्धात्म ध्यान धर मुक्त हुये ।।
श्री वृषभसेन गौतम आदिक, सबके पद वन्दूँ हर्ष लिये ।।
श्री कूट मित्रधर नमिनाथ, इस दिव्य भूमि पर आये थे ।
श्री नाटककूट अरह जिनवर, समता-सागर में समाये थे ।।
प्रभु मोह-मल्ल का नाश किया, श्री मल्लिनाथ जिनवर स्वामी ।
श्री संबल कूट किया पावन, आतम संबल से जग नामी ।।
श्री संकुल कूट श्रेयांसनाथ, निःश्रेयस पद को प्राप्त किया ।
चारों गति के दुखियारों को, शिवपथ का श्रेयस मार्ग दिया ।।
श्री सुविधिनाथ जी सुप्रभ कूट, श्रीपद्म प्रभु जी मोहन कूट ।
निर्जर टोंक मुनिसुव्रतजी ने, पाई अक्षय निधि अटूट ।।
ललित कूट से मोक्ष पधारे, चन्द्रप्रभ जी चन्द्रानन ।
सम्मेदशिखर प्रभु दर्शन पा, मैं धन्य हो गया हे भगवन ।।
कैलाश शिखर अष्टापद से, श्री आदिनाथजी मुक्त हुये ।
श्री बालि महाबलि मुनिवर, जयवंते मुनि जो मुक्त हुये ।।
श्री शीतलनाथ कूट विद्युतवर, स्वयंप्रभ कूट अनंतनाथ ।
श्री धवल कूट संभव जिनवर, नमूँ वासुपूज्य चम्पापुर जय ।।
अभिनंदन प्रभु का अभिनंदन, आनंद कूट ने जस पाया ।
श्री धर्मनाथ सुदत्त कूट, अविचल से सुमत सुपद पाया ।।
हे शांतिनाथ शांतिदाता, श्री कुन्द कूट से मुक्त हुए।
महावीर प्रभु पावापुर से, मुक्ति वधू के कंत हुए ।।

Scanned with CamScanner

श्री सुपार्श्व जिनवर भवरज, हर कूट प्रभास किया पावन।
विमलनाथ पद विमल लिया, जय कूट सुवीर मुक्ति आंगन॥
श्री अजितनाथ जिनवर जीता, रिपुमोह सिद्धवर करूं प्रणाम।
श्री नेमिनाथ करुणा सागर, गिरि गिरनार लिया विश्राम॥
श्री पार्श्वनाथ का अंतिम दर्शन, मन आनंदित करता है।
सुवर्णभद्र में आत्म ध्यान धर, साधक कल्मष हरता है॥
सिद्ध अनंतानंत शिखर से, मोक्ष गये और जायेंगे।
सर्व सिद्धि दातार आत्मा, ध्याकर मुक्ति पायेंगे॥
नंदीश्वर की अनुपम रचना, बाहुबली के शुभ दर्शन।
ऊँचा मानस्तंभ मनोहर, पार्श्वनाथ का समवशरण॥
चौबीसी के चरण पखारुँ, अपना जीवन धन्य करुँ।
यह संसार-भ्रमण मिट जावे, मुनिव्रत धारूँ मुक्ति वरुँ॥
सम्मेद शि खर की पावन रज, माथे से वंदन करता हूँ।
कर्मों की रज कण रहित बनूँ, प्रभु यही प्रार्थना करता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनंतानंत मुनिश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

शाश्वत तीर्थ सम्मेद की, महिमा अपरम्पार।
भाव सहित वन्दन करुँ, पाऊँ भवदधि पार॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

नेमिनाथ स्तुति

आसन बिना आसन जमा गिरनार पर घनश्याम तन।
सद्बोध पाया आपने जग को बताया नेमि जिन॥
स्वाधीन है प्रत्येक जन स्वाधीन है प्रत्येक कण।
पर द्रव्य से है पृथक् हर द्रव्य अपने में मगन॥

Scanned with CamScanner

श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्र पूजन

(स्थापना)

(रोला छंद)

तीर्थंकर की खान अयोध्या का अभिनंदन,
भगवन्तों की शान साधना भूमि वंदन ।।
यह अनादि से तीर्थंकर जनती आई है,
रत्नों की बरसात यहीं होती आई है।
यहीं जिनेश्वर मातायें शुभ स्वप्न देखतीं,
और धन्य जीवन कर लेतीं समकित पातीं।
चौबीसी में पंच जिनेश्वर यहीं हुये हैं,
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमत अनंत हुये हैं।
महाभाग्य हम सबके पावन भूमि आये,
धन्य हुये हैं नेत्र सभी ने दर्शन पाये ।
हृदय विराजो सभी सिद्ध परमेश पधारो,
मंगलमय जिनधर्म मर्म प्रभु वर दर्शाओ ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्याजी अतिशय क्षेत्र सर्व जिनसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(विजया)

प्रभो ज्ञान आनंद मंदिर में सुंदर ।
अन्तरमुखी सौम्य मुद्रा निहारी ।।
निजानंद में केलि करते हो जिनवर,
यही हो दशा आप सम प्रभु हमारी ।
जनम अर मरण दुःख सहते अनंतों,
बहुत काल बीता शरण आज आया ।
करुं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति .....

Scanned with CamScanner

भवाताप ज्वर वासना डाले डेरा,
भंवर में फंसा दिख रहा न किनारा ।
भरा आत्मा में सहज सुख समुंदर,
सुनी देशना दिव्य तेरे ही द्वारा ।
समझ जाग जाये, ये मन मान जाये ,
न भटकूं प्रभु चार गति कष्ट कारा ।
करुं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति .....

अक्षत हो प्रभुवर तुम्ही नाथ जग में,
शरणागतों को भी अक्षत बनाते !
अक्षत अखंडित शुद्धातम है शाश्वत,
दरश करते तेरे दरश आत्म पाते ।
धरूं ध्यान ऐसा प्रभु सम निरंतर,
बहे शांत रस की प्रभो ज्ञानधारा ।
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति .....

प्रभो काम की वासना जीती कैसे ?
सहज शील संयम का लेकर सहारा।
विषय वासना से तड़पता था क्षण-क्षण ,
तुम्ही ने दिखाया ये मंदिर हमारा ।
विषय भोग लगते प्रभू क्यों सुहाने ।
सदा ये ही जीते मैं क्यों इनसे हारा ।।
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामकलंक विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति .....

Scanned with CamScanner

क्षुधा देह व्याधि सहे कष्ट चेतन,
है अज्ञान की ये गहल महिमा भारी ।
तृप्ति हुई व्यंजनों से कभी भी क्या ?
अनशन स्वभावी दशा तुमने धारी ।
प्रभो शान्त रसपान करते तुम्हीं हो,
यही शांति पाने शरण तेरी आया ।
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधापीड़ा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति .....

सहज ज्ञान ज्योति जगे प्रभु हृदय में,
चिनानंद चैतन्य चिन्मय निहारूं ।
महामोह तमहर ,प्रभो ज्योति पाउँ ।
न परमाणु पर भी मैं स्वामित्व धारूं ।
प्रभो ज्ञान वैराग्य ऐसा जगा दो,
निजानंद में ही रमे मन हमारा ।
करूं अर्चनाआदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया ।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति ..

कर्मों को क्या दोष दूं हे जिनेश्वर,
स्वयं जो किये कर्म फल वैसे पाये ।
अनीति है मेरी मढ़े दोष पर पर,
महन्तपने में स्वयं गोते खाये !
महाजन मुनीश्वर मगन निज में रहते,
वही आत्म वैभव मुझे लागे प्यारा ।
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया !

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति .....

महामोक्ष फल आपने नाथ पाया,
भव भव भ्रमण की खतम हुई कहानी ।

Scanned with CamScanner

महावज्र पौरुष, हुये मुक्त प्रभुवर
यही हो दशा नाथ मेरी सुहानी ।
चहुंगति में चेतन थका भव भ्रमण कर
दिखाया शुद्धातम का शाश्वत सहारा
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ महाभाग्य पाया।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति .....

सजाऊँ प्रभो अर्घ्य आठों दरब ले,
भक्ति तुम्हारी हृदय बस गयी है।
न भटकूंगा संसार में अब कभी भी,
मिले आप प्रभुलब्धि भी पक गयी है
जगेनाथ पुरुषार्थसम्यक हमारा
नशे कर्म की कालिमा कष्टकारा ।
करूं अर्चना आदि प्रभु सम सभी की,
अयोध्या जी तीरथ है प्यारा हमारा

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति .....

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर भगवंत की, जन्म भूमि सुखधाम ।
सरयू नदी के तीर पर, बसा अयोध्या धाम ।
आत्म तीर्थ आराधना, तीन भुवन में सार ।
हुई सफल शिव साधना, यहीं सहज सुखकार।

(वीर)

शाश्वत तीरथ धाम अयोध्या, जग में महामहान है।
तीर्थंकर की खान अयोध्या, तीर्थों की ये शान है ॥
यहां सदा ही महापुरुषजन, लेते आये हैं अवतार ।
आता है सौधर्म इंद्र, धर्मी लेकर सारा परिवार ॥
कोषाध्यक्ष कुबेर यहां, रत्नों की करता है बरसात ।
जयवंते जिनधर्म हमारा, त्रिभुवन व्यापी अति आल्हाद ॥
ऋषभ अजित अभिनंदन भगवन , सुमत अनंतनाथ प्रभुवर ।

Scanned with CamScanner

पांचों तीर्थंकर यहीं जन्मे, भाग्य विधाता शिव सुखकर
भरत प्रथम चक्री वैरागी, षटखंडाधिपति शासन ।।
बाहुबली से कामदेव , यहीं विरक्त हुए भगवन ।
रघुकुल भूषण रामचंद्र दशरथ नंदन जग को भाये ।
अष्टम थे बलभद्र आप लक्ष्मण से नारायण पाये ।
सीता जैसी महासती भी यहीं कभी विचरी आयीं ।।
चरम शरीरी लवकुश जन्मे, पावागढ से मुक्त हुये ।।
अग्नि परीक्षा सीता सति की देख मुनीश्वर यहीं हुये ।।
बालि महाबलि मुनि वन्दूं, वन्दू हनूमान भगवान ।
और अनंतों महापुरुषों से शोभित हुई यह भूमि महान्
दर्शाया भगवान आत्मा, इसकी महिमा है न्यारी ।
भव्य जीव अनुभव करते हैं, बन जाते शिव अधिकारी ।
अहो जीवराजा कहकर ही सन्त हमारे जगा रहे ।।
महामोह से हमें जगाने, दिव्य देशना सुना रहे ।
भेद ज्ञान की महिमा अनुपम भव सागर लगता खारा ।
आतम अनुभव रस जल मीठा भव सागर तारणहारा।
आनंदमय निज अनुभूति से महामोह करके परिहार ।।
पर ममत्व पर भाव तजूं में पर कर्तृत्व तजूं दुखकार ।
सहज परिणमन होता भासे, ऐसा हो प्रभु सम्यग्ज्ञान ।
कुछ भी इष्ट अनिष्ट न भासे, तजूं मोह माया दुखखान।
भाउं मैं निर्ग्रन्थ भावना, कब मुनि बन वन वन विचरूं।
करूं निर्जरा सब कर्मों की समता धर शिवनारि वरूं ।।
सिद्धालय में आप विराजे, भवनालय से मुक्त हुये !
अपने पास बुला लो भगवन, यही भक्ति भव पार करे।

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति .....

(दोहा)

शुद्धातम को साधकर, तिरे अनंतों धीर ।।
ज्ञान ध्यान वैराग्य ही, तरणी दो गंभीर

पुष्पाजलिं क्षिपेत्

Scanned with CamScanner

श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्र पूजन

(वीर)

कुंडलपुर जी सिद्धक्षेत्र में आदिनाथ प्रभु रहे विराज।
हे त्रिलोक के नाथ स्वयंभू, भव्य जनों के हो सरताज॥
भरत क्षेत्र के अंतिम केवलि, श्रीधर प्रभु यहाँ मुक्त हुये।
धन्य हुई यह पावन भूमि, खिरी दिव्य ध्वनि सिद्ध हुये॥
जिन संस्कृति की अमर धरोहर, सिद्ध क्षेत्र कुंडलपुर तीर्थ।
हृदय विराजो हे तीर्थेश्वर, पाऊँ परम विशुद्धि शीघ्र॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुरसिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुरसिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुरसिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(ताटंक)

कितनी सुन्दर जिन प्रतिमा है, महाभाग्य दर्शन पाये।
पल पल रहूँ निरखता प्रभु को, रोम-रोम मम हर्षाये॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, भक्ति-भाव-जल लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप की अग्नि भयंकर, दुखिया हैं सब संसारी।
तत्त्वज्ञान की शीतल वर्षा, तुम ही करते त्रिपुरारी॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, निर्मल चंदन लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

क्षण-भंगुर सब रूप संपदा, अब न कभी लुभाऊँगा।
निज चैतन्य स्वरूप सम्पदा, शाश्वत नित अपनाऊँगा ॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, अक्षत लेकर आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम-केतु का ध्वंस करूँ मैं, काम रहित प्रभु हो जाऊँ।
सुकृत भी तो भोग-मूल हैं, बस शुद्धातम ही ध्याऊँ ॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, पुष्प संजोकर लाया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग विराग न मन में भाया, शुष्क ज्ञान में मस्त रहा।
त्याग विराग हुआ तो उसमें, धर्म मान सन्तुष्ट रहा ॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, नेवज लेकर लाया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह-तिमिर के कारण जग में, चारों दिशि है अंधियारा।
आत्मज्ञान के बिना प्रभु जी, कैसे होवे उजियारा ॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, दीप चढ़ाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव अशुभ ही नहीं अहो प्रभु, शुभ से भी बंधन होता।
सब कर्मों को सदा निमंत्रण, भाव आस्रव ही देता ॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, धूप दशांगी लाया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

फल पाने की मनोकामना, जग में भ्रमण कराती है।
नारायण प्रतिनारायण पदवी, इसी भाव से आती है॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, फल चरणों में लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ प्रभु प्रथम तीर्थंकर, ब्रह्मा विष्णु तुम्ही महेश।
मुक्तिमार्ग के आद्य विधाता, दिव्यध्वनि दाता परमेश॥
श्रीधर प्रभुवर श्री पद पाया, मैं भी पाने आया हूँ।
आज प्रभो आदीश्वर दर पर, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शुद्धातम में मगन हो, हुये सिद्ध भगवान।
श्रीधर प्रभुवर पथ चलूँ, पाऊँ पद अम्लान॥

(चौपाई)

जय जय श्री-श्रीधर जिन स्वामी, मुक्त हुये हे त्रिभुवन नामी।
अंतिम केवलि आप हमारे, कुंडलपुर से मुक्ति पधारे॥
पंचमगति तुमने प्रगटायी, भव संतति से मुक्ति पायी।
आगम गावे गान तुम्हारा, भव्यजनों को तारण हारा॥
जय जय श्री आदीश्वर स्वामी, हे प्रभु तुम हो अंतर्यामी।
तीन भुवन में नाम तुम्हारा, ब्रह्मा, विष्णु, कहे जग सारा॥
पद्मासन प्रतिमा मनहारी, सारे जग में ख्याति तुम्हारी।
औरंगजेब यहाँ जब आया, अतिशय देख विरोध नशाया॥
राजा छत्रसाल भी आये, प्रभु दर्शन कर समता पाये।
तत्त्व ज्ञान की सीख जगायी, शांति यहाँ उनने भी पाई॥
शरण आपकी तारणहारी, अंतर्मुखी सौम्य छवि प्यारी।

Scanned with CamScanner

यह संसार महावन भारी, महामोह भारी बीमारी ।
शिव मारग नहीं कहीं सुझावे, विषय वासना जियत जलावे।
शुद्धातम तुम ही दर्शाते, भेद ज्ञान की कला सिखाते ।।
अरे हजारों समवशरण से, लाभ नहीं जो भी मिल पाता।
एक अचल जिनमुद्रा लखकर, लाभ जगत जन है पा जाता ।।
कैसी सुन्दर जिन प्रतिमा है, कैसा सुंदर प्रभु का रूप ।
रहूँ निरखता पल-पल तुमको, साधूँ सुन्दर आत्म स्वरूप ।।
अर्हन्त प्रभु साक्षात विराजे, मन आनंदित हो जाता ।
लगता प्रभु हमसे कहते हैं, तेरा जग से क्या नाता ।।
हम भी आतम ध्यान लगावें, परमातम पद में खो जावें ।
जग में और नहीं भरमावें, तुम जैसा ही शिवपद पावें ।।
प्रभू आपकी सदा शरण हो, भाव समाधि सहित मरण हो।
कुंडलपुर वाले जिनवर की, सदा शरण हो भव विजयी की ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंडलपुर सिद्धक्षेत्रे आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरन, सिद्ध स्वभाव महान ।
रत्नत्रय पद प्रगट कर, पाऊँ शिव अम्लान ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

विश्व की विभूति को विनश्वर विचारि,
जिन, देह गेह सों सनेह त्यागि तप धारा है।
धाराधर सम पाप पुंज को प्रभंजन है,
करम करिन्द को मृगिन्द बनि मारा है ।।
काम क्रोध मोह मद लोभ क्षोभ मान छल,
सकल उपाधि को समाधि से विडारा है।
पाय बोध केवल सुबोधि दिये जग जन,
ऐसे जिनदेव को नमो नमो हमारा है ।।

Scanned with CamScanner

श्री नैनागिरि जी सिद्ध क्षेत्र पूजन

(वीर छंद)

नैनागिरिजी सिद्ध क्षेत्र से, वरदत्तादि पंच ऋषिराज।
मुक्त हुये प्रभु समश्रेणी में, सिद्ध शिला पर रहे विराज॥
भेद ज्ञान का महामंत्र ले, आत्म ध्यान धर मुक्त हुये।
पंचपरावर्तन परिभ्रम तज, पंचमगति से युक्त हुये॥
पार्श्व प्रभु का समवशरण भी, इसी भूमि पर आया था।
धन्य - धन्य वे धर्मी श्रावक, जिनने लाभ उठाया था॥
स्वयं सिद्ध सब जीव जिनेश्वर, शुद्ध बुद्ध प्रभु आतमराम।
ऐसा बोध दिया भविजन को, कोटि-कोटि मैं करूं प्रणाम॥

(दोहा)

रेशंदीगिरि तीर्थ कहूँ, या नैनागिरि तीर्थ।
ज्ञान-नैन मेरे खुले, प्रभु जी दो आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादिपंचऋषिवराः सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(मानव छंद)

चैतन्य मग्न मुद्रा लख, चैतन्य रसिक बन जाऊँ।
प्रभु देह-दृष्टि भव वर्धक, वो भूल न अब दुहराऊँ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्योसहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य भाव भवनाशी, ध्वनि सुनी तत्त्व पहचाना।
पंचेन्द्रिय विषयों में तो, भव-ताप सहे दुख नाना॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूं, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूं, चंदन चरणाग्र चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

संयोग सभी क्षणभंगुर, चैतन्य भाव अविनाशी ।
कभी हुआ स्वर्ग का वासी, पर मिली न शांति जरा सी ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, अक्षत चरणाग्र चढ़ाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

विषयों की चिर अभिलाषा, किसकी कब पूर्ति हुई है ?
संस्कार बिना की सुविधा, में मिलती शांति नहीं है ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, श्रद्धा से सुमन चढ़ाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह क्षुधा-वेदनी नागिन, कभी तृप्त नहीं दिखती है।
कभी तृष्णा-खाई भरी क्या, तृप्ति तो अंदर ही है ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, नेवज चरणाग्र चढ़ाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हूँ ज्ञान मात्र ध्रुव ज्ञायक, जड़ देहादि से न्यारा ।
यह ज्ञानकला जब जागे, पा जाऊँ जगत किनारा ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, चरणों में दीप चढ़ाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों के बंधन बांधे, हँस-हँस कर कर्म कमाये ।
अब करूँ ज्ञान संचेतन, जिनध्वनि सुन साहस आये ॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, यह धूप दशांगी चढ़ाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

फल चारगती दुख पाये, सुख शांति कहीं न पाया।
भव बंधन अब न चाहूँ, मुझे पंचम भाव लुभाया॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूँ, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूँ, निर्मल फल चरण चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब अर्घ्य चढ़ाऊँ ऐसा, जो पंचमगति पहुँचाये।
सब सिद्धों के स्वर में स्वर, मेरा प्रभु अब मिल जाये॥
श्री पार्श्वनाथ जिन वन्दूं, वरदत्तादि मुनि ध्याऊँ।
नैनागिरि तीरथ वन्दूं, भावों से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ऋषि मुनि यति साधू नमूँ, पद धारूँ निर्ग्रंथ।
आतम परमातम लखूँ, चलूँ सहज शिवपंथ॥

(वीर छंद)

सम श्रेणी में सिद्ध प्रभु जी, सिद्धालय में रहे विराज।
उन सबको हम वंदन करते, हम भी पायें निज पद राज॥
पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रभु का, समवशरण यहाँ आया था।
दिव्य ध्वनि भी यहीं खिरी थी, अमृत यहीं बहाया था॥
श्री वरदत्तराय इन्द्रदत्त, श्री गुणदत्त अर सागरदत्त।
यहीं आपकी हुई साधना, ज्ञान-ध्यान में हुये प्रमत्त॥
भव तन भोगों से विरक्त हो, श्रेणी मांड हुये अरिहन्त।
इसी भूमि से मुक्तिश्री पा, सिर पर राज रहे भगवन्त॥
पर्वत पर पैंतीस जिनालय, अति सुंदर पावन अभिराम।
सत्रह जिन मंदिर नीचे हैं, जिन प्रतिमायें दिव्य ललाम॥

Scanned with CamScanner

महावीर स्वामी जिन मंदिर, जल मंदिर कहलाता है।
पावापुर निर्वाण क्षेत्र की, ये ही याद दिलाता है ।।
पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रतिमा, अन्तरमुखी विराज रही।
खडगासन नव हाथ है उन्नत, हमसे है कुछ बोल रही ?
हे भविजन ! मालूम तुम्हें क्या ? तुम निगोद से आये हो।
नरकादिक चारों गतियों में, कष्ट अनन्ते पाये हो ।।
आज हुये सैनी जैनी तुम, मोह-नींद से जग जाओ।
अपनी प्रभुता को पहचानो, और न अब तुम भरमाओ।।
सभी जीव परमात्म स्वरूपी, सिद्ध समान स्वभाव महान।
शुद्धातम है नाम सभी का, मात्र जानना अपना काम ।।
राग-द्वेष सब भाव औपाधिक, ये सब आते-जाते हैं।
अपने ज्ञान-रूप दर्पण में, मात्र झलक दिखलाते हैं ।।
स्वपर प्रकाशक शक्ति हमारी, कभी न दूषित होती है।
रत्न समान स्फटिक मणि सम, ऐसी पावन ज्योति है ।।
भेदज्ञान का महामंत्र ही, सच्ची शांति दिलाता है।
शत्रु-मित्र अब कोई न दिखता, ऐसा ज्ञान जगाता है ।।
विषय-कषायों से बचने प्रभु, सिद्ध क्षेत्र पर हम आये।
आत्म साधना साधें ऐसी, मुक्ति श्री हम भी पायें ।।
नैनागिरि में नैन हमारे, तत्त्व ज्ञान से खुल जायें।
जैसे सिद्ध प्रभू समतारस, पीते हम भी सुख पावें ।।
मुनियों जैसा जीवन होवे, ज्ञान ध्यान में मग्न रहूँ।
महल, मसान मरन अर जीवन, कंचन काँच समान गिनूँ।।
कीच कनक में भेद न मानूँ, सबमें समता भाव धरूँ।
चक्रवर्ती इन्द्रादिक पद की, कभी कामना नहीं करूँ ।।
इस तन का प्रभु कौन भरोसा, आज रहे या कल जावे।
परिणामों का भी न भरोसा, इन्द्रिय ज्ञान न संग जावे ।।

Scanned with CamScanner

ज्ञान मात्र जीवन है मेरा, रोम - रोम में वश जावे।
सपने में भी यही दिखावे, मोह - क्षोभ सब विनसावे॥
सच्चा सिद्ध क्षेत्र शुद्धातम, ध्यानी इससे सिद्ध हुये।
जिसको निज गौरव आ जावे, वही जगत से मुक्त हुये॥
नैनागिर नयनाभिराम यह, क्षेत्र पार्श्व प्रभु को वंदन।
वरदत्तादि मुनीश हुये जो, सिद्ध हुये नित अभिनंदन॥

ॐ ह्रीं श्री नैनागिरिसिद्धक्षेत्रे वरदत्तादि पंच ऋषिराजेभ्यो सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ज्ञान-नैन पावन हुये, दर्शत श्री जिनराज।
सिद्ध क्षेत्र में सिद्धि हो, पाऊँ सिद्ध समाज॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।

हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि के मिथ्या तपन हरी॥ टेक॥
सरधा भूमि सुहावनि लागे संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी॥1॥
स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सु-भक्ति भरी॥2॥
जप-तप परमानन्द बढ़यो है, सुखमय नींव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी॥3॥

परमात्म प्रतीक अष्ट द्रव्य

जल से निर्मलनाथ, चंदन से शीतल प्रभो।
अक्षत से अविनाश, पुष्प सदृश्य कोमल विभो॥
रत्नदीप समज्ञान, षट रस व्यंजन से सुखद।
सुरभित धूप समान, सरस सुफल सम सिद्ध पद॥

Scanned with CamScanner

श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर पूजन

(दोहा)

द्रोणागिरि शुभ तीर्थ से, गुरुदत्तादि मुनीश ।
पाई पंचमगति प्रभो, जयवंतो जगदीश ।।

(अडिल्ल)

धन्य तीर्थ द्रोणागिरि पावन धाम है ।
लघु सम्मेद शिखर जी जिसका नाम है ।।
गुरुदत्तादि मुनीश इसी भू पर भये ।
निज स्वभाव साधन से शिवपद पा गये ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि साधना ।
देह तजी पर तजी नहीं आराधना ।।
अचल रहे प्रभु आतम बल की ढाल से ।
हृदय पधारो नाथ जजूँ हर्षाय के ।।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अवतार)

मिथ्यामल धोने नाथ, समकित जल लाऊँ।
प्रभु जन्म-मरण का रोग, तुम सम विनशाऊँ ।।
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन-सम शीतल शांत, परणति सुखकारी ।
अज्ञान जनित संताप, क्षय हो दुखहारी ।।
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

अक्षत पद के दातार, तुमसा प्रभु पाया।
समझा संसार असार अक्षत मन भाया ॥
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शील स्वभाव महान, अब्रम्ह भाव नशे।
मन मेरु समान अडोल, होय अकंप लशे ॥
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा-वेदनी व्याधि, कैसे विनसायी।
परिपूर्ण तृप्ति हे नाथ, निज में ही पायी ॥
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महामहिम निज भाव, ज्ञायक दर्शाया।
चैतन्य-प्रदीप प्रकाश, पाने हूँ आया ॥
द्रोणागिरि तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

Scanned with CamScanner

कर्मों को दया न नाथ, उदय सदा आवे।
बस ज्ञान ध्यान वैराग्य, भव-भय विनसावे॥
द्रोणागिर तीर्थ महान, वन्दूँ हर्षाऊँ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाप-पुण्य फल मांहि, हर्ष विषाद तजूं।
शाश्वत शिवफल सुखदाय, आतम देव भजूँ॥
द्रोणागिर तीर्थ महान, वन्दूं हर्षाऊँ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पदवी अनर्घ जिननाथ, पाने आया हूँ।
भक्ति भावों के पुंज, लेहर्षाया हूँ॥
सब सिद्धों का सम्मान, भावी सिद्ध करे।
जयवन्ते धर्म महान, शाश्वत हृदय बसे॥
द्रोणागिर तीर्थ महान, वंदूँ हर्षाऊँ।
गुरुदत्त हुये भगवान, समता प्रगटाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

समता सुधा का पान करके, जो सदा निःसंग है।
शोकार्त न करता जिन्हें प्रतिकूल कोई प्रसंग है॥
कृषक ने उपसर्ग ढाया था, सताने के लिये।
गुरुदत्त मुनि साधन बना वह मोक्ष पाने के लिये॥

Scanned with CamScanner

(तर्ज - चलो सम्मेद शिखर चालो....)

तीर्थ द्रोणागिरि तो चालो, तीर्थ द्रोणागिर तोचालो।
तीरथ कर लो, भाव जगा लो, कल्मष धो डालो॥ टेक॥

यही भूमि गौरवशाली, गुरुदत्त ऋषि आये।
जय उपसर्गजयी समताधर सिद्ध सुपद पाये॥
लघु सम्मेद शिखर तीरथ भी यही कहाता है।
सिद्धों की श्रेणी में मिलने मन ललचाता है॥
भावना प्रभुता की भा लो॥ तीरथ कर लो ...॥
धन्य - धन्य मुनि दशा शांति का झरना झरता है।
पंचमहाव्रत समिति गुप्ति चारित्र दमकता है॥
कंचन कांच बराबर जिनके, महल मशान समान।
शत्रु-मित्र की बात कहाँ सब दिखते हैं भगवान॥
दिगम्बर मुद्रा तो ध्या लो॥ तीरथ करलो ...॥
जिन्हें कंकड़ों जैसा भासे, मणि-मुक्ता का ढ़ेर।
जिनका समता धन खरीदने, को असमर्थ कुबेर॥
जिन्हें मिला चैतन्य-खजाना, सहज शांति का धाम।
जैन धर्म के हीरे मोती, लुटा रहे अविराम॥
दिगम्बर मुद्रा तो ध्यालो॥ तीरथ करलो ...॥
ज्ञान विराग शक्ति से शोभित, मुनिवर धर्म महान।
आत्मधर्म अपनाते भविजन, कर लेते कल्याण॥
नग्न दिगम्बर मुद्रा जिनकी, निर्विकार अभिराम।
अनियतवासी आत्मनिवासी, महासुखी ऋषिधाम॥
पूर्व भवों का बैरी आया, किया घोर उपसर्ग।
केवलज्ञान आपने पाया, लिया वहीं अपवर्ग॥
बैर भावों को धो डालो॥॥ तीरथ करलो ...॥

Scanned with CamScanner

फलहोड़ी बड़गाम अनूपम, द्रोणागिरिजी क्षेत्र ।
गुरूदत्तादि मुनीश्वर दर्शे, धन्य हुये मम नेत्र ।।
यहीं मुनीश्वर हुये जिनेश्वर, पाया केवलज्ञान ।
दिव्य ध्वनि भी यहीं खिरी थी, यहीं लिया निर्वाण ।।
साधना सम्यक अपना लो ।। तीरथ कर लो ... ।।
चौबीसी जिन मंदिर सुंदर, भव्य मूर्ति जिन धन्य ।
दर्शन महा भाग्य से पाये, जागा है अति पुण्य ।।
व्रती आश्रम में जिन मंदिर, महा मनोहारी ।
जय उपसर्गजयी मुनि वन्दूँ, दर्शन अविकारी ।।
आत्मदर्शन भविजन पा लो ।। तीरथ करलो ... ।।
सिद्ध प्रभू की करूँ वंदना, सिद्ध दशा ही सार ।
समयसार ही साध्य जगत में, रत्नत्रय दातार ।।
सिद्धायतन जिन मंदिर सुंदर, प्रतिमा अति मनहार ।
यहीं आराधन करने आओ, द्रोणागिरि दरबार ।।
आत्म अनुभव भविजन पा लो ।। तीरथ करलो ... ।।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

सिद्ध क्षेत्र की वंदना, भाव सहित जो होय ।
मिट जावे भव-भव भ्रमण, पंचमगति सुख होय ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंच परमेष्ठी वंदना

अर्हन्त सिद्ध सूर उपाध्याय साधु सर्व, अर्थ के प्रकाशी मांगलिक उपकारी हैं ।
तिनको स्वरूप जान राग तैं भई जौ भक्ति, काय को नमाय स्तुति को उचारी है ।।
धन्य-धन्य तुमही सै काज सब आज भये, कर जोरि बार-बार वन्दना हमारी है ।
मंगल कल्याण सुख ऐसी हम चाहतु हैं, होहु मेरी ऐसी दशा जैसी तुम धारी है ।।

Scanned with CamScanner

श्री आहारजी सिद्ध क्षेत्र पूजन

स्थापना

(चांद्रायण)

श्री आहार जी सिद्ध क्षेत्र पर आइये ।
शांतिनाथ-सी शांति अपूरव पाइये ।।
त्रय चौबीसी प्रभू बहत्तर पूजिये ।
अन्तरमुख मुद्रा लख आनंद लीजिये ।।
मदन कुमार जी कामदेव यहीं मुक्त हुये ।
विषकंवल मुनिनाथ सिद्ध हो शिव गये ।।
महाभाग्य से प्रभु दर्शन हम पा गये ।
हृदय पधारो नाथ भक्ति स्वीकारिये ।।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(वीर छंद)

महा भाग्य प्रभु दर्शन पाये, रोम - रोम में हर्ष अपार।
प्रीति चित्त से जिनवाणी सुन, जन्म-मरण का हो परिहार ॥
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।
श्री आहार जी सिद्ध क्षेत्र पर, सिद्ध समान धरूँ निज ध्यान ॥

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-आताप मिटाने वाली, सच्ची माता जिनवाणी ।
स्व पर विवेक जगाती माता, दुःख मिटाती प्रभु वाणी ॥
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान।श्री आहार जी.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जिनवाणी माँ सदा सुनाती, अक्षत पद की गाथायें ।
संयोगों का नहीं भरोसा, क्षत-विक्षत फल विपदायें ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कैसे भोगूं भोग जहर-सम, लगते सुन्दर हैं विद्रूप ।
काम बाण की पीड़ा नाशूं, देखूँ सुन्दर शांत स्वरूप ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धातम अनुभव रस पीकर, तृप्त रहें मुनिनाथ जिनेन्द्र ।
जड़ रस मुझको भी न सुहावें, ऐसी शक्ति दो आत्मेन्द्र ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छह द्रव्यों में जीव द्रव्य हूँ, मुझमें है चैतन्य प्रकाश ।
भेदज्ञान-दीपक दाता प्रभु, यही करेगा मोह विनाश ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाविक-नाव न्याय जैसा ही, कर्मों का हमसे सम्बन्ध ।
जागृत हो तो कर्म कटेंगे, गर प्रमाद तो भ्रमण प्रबंध ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाप-पुण्य पर भावों का फल, चार गति दुख ही पाये ।
पाप-पुण्य से भिन्न ज्ञानघन, समझे तो शिव सुख आये ।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूँ शांतिनाथ भगवान ।श्री.।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य सजाऊँ, दो अनर्घ पद हे स्वामी।
धरूँ पंथ निर्ग्रंथ दिगम्बर, तुम्ही भवांतक जगनामी ॥
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, वंदूँ शांतिनाथ भगवान।
श्री आहार जी सिद्ध क्षेत्र पर, सिद्ध समान धरूँ निज ध्यान ॥

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

तीन लोक के जिन भवन, कृत्रिम अकृत्रिम सर्व।
विनय सहित वंदन करूँ, तजूँ मान मद गर्व ॥

(वीर छंद)

श्री अहार जी तीर्थ क्षेत्र पर, जिन मंदिर अतिशय अभिराम।
शांतिनाथ प्रभु यहीं विराजे, शत-शत वंदन करूँ प्रणाम ॥
त्रय चौबीसी जिन प्रतिमायें, अन्तर्मुखी विराज रहीं।
दर्शन कर अन्तर्मुख होऊँ, फिरे दृष्टि प्रभु भाव यही ॥
हे जिनदेव ! आप बिन जग में, कौन बताये आतमराम ?
बिना आपके कौन बतावे, प्रभुता मेरी महा महान ॥
चक्रवर्ती जैसी विभूति भी, मिली तृप्ति न हो पायी।
इन्द्रादिक के पद पाये पर, चैन कहीं न दिखलायी ॥
जिसने निज स्वरूप को जाना, उसने शिवपद प्रगटाया।
जिसने पर से मोह किया, उसने अब तक भवदुख पाया ॥
परभावों की मदिरा पीकर, मैं भी स्वामी भ्रमित हुआ।
दिव्य ध्वनि जब सुनी प्रीति से, तब मन में अति हर्ष हुआ ॥
छह द्रव्यों में जीव द्रव्य हूँ, आगम में बतलाया है।
नव तत्त्वों में छुपी हुई, जो ज्योति उसे समझाया है ॥
ज्ञान निरन्तर झरता रहता, ज्ञायक तत्त्व यही भगवान।
कहाँ खोजता-फिरता चेतन, घर में धनी स्वयं धनवान ॥

Scanned with CamScanner

सिंह और गजराज जीव भी, अनुभव करके धन्य हुये।
शिवभूति मुनि जैसे जग में, भेदज्ञान से मुक्त हुये ।।
धन्य - धन्य निर्ग्रंथ दिगम्बर, तारण-तरण महान हैं।
आत्म ध्यान में मग्न सदा, करते अमृत-रस पान हैं ।।
भूतकाल अपराध हुये जो, प्रागभाव से समझूँ भिन्न।
और वासना भविष्यकाल की, प्रध्वंसा से देखूँ अन्य ।।
गुणग्राही दृष्टि अपनाऊँ, सभी जीव परमात्म स्वरूप।
एक समय की ही विकृति है, अंदर में शुद्धात्म स्वरूप ।।
पापभाव से द्वेष करूं न, पुण्यभाव से प्रेम नहीं।
पाप-पुण्य दोनों भावों को, भिन्न गिनूँ बस भाव यही ।।
होनी अनहोनी न होवे, चिंता कभी न मन आवे।
जैसे बंध बंधे पूरव भव, वैसा ही फल जग पावे ।।
शांति मंत्र श्री शांतिनाथ ने, हमें एक बतलाया है।
हर प्रसंग में ज्ञाता रहना, धर्म यही समझाया है ।।
मुनि भगवन्तों की आराधना, जीवन में कब आ जावे।
सिद्ध समान सुपद प्रभु मेरा, और नहीं कुछ मन भावे ।।
देह भिन्न है, राग भिन्न है, होता स्वयं जगत परिणाम।
दिव्य ध्वनि का सार यही है, मात्र जानना मेरा काम ।।
सिद्ध क्षेत्र भी यही भूमि जहाँ, मुनियों ने निर्वाण लिया।
धन्य किया मानव जीवन, अर जगती को भी धन्य किया ।।

ॐ ह्रीं श्री आहारजी सिद्धक्षेत्रे शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरन, आत्म स्वभाव महान।
नमहुँ ताहि जातें भये, अरिहंतादि महान ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

ज्ञानी का लक्ष्य वीतरागता है, वह पुण्य की सेवा नहीं करता, पुण्य उसकी सेवा करता है।

Scanned with CamScanner

श्री पपौराजी अतिशय क्षेत्र पूजन

(चांद्रायण)

श्री पपौरा तीर्थ क्षेत्र पर आइये ।
जिन मंदिर अति भव्य, दर्श सुख पाइये ॥
शांत छवि प्रभु अन्तरमुख मुद्रा महान ।
रोम-रोम पुलकित हो जावे पा निधान ॥
एक शतक अर आठ, जिनालय शुभ जिनेन्द्र ।
धन्य - धन्य साधर्मी, पधराये जिनेन्द्र ॥
चौबीसों तीर्थेश, हृदय पधराऊँगा ।
भाव विशुद्धी जगे मुक्ति पद पाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(मानव छंद)

जीवत्व शक्ति न जानी, चिति शक्ति नहीं पहचानी ।
जड़ प्राणों से जीवित हूँ, कैसी मति हुई बौरानी ॥
परसत्ता में प्रतिबंधित, होकर अनंत दुख पाये ।
नौ माह गर्भ दुख भोगे, जनमे तड़पे बिलखाये ॥
जिनदर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूंगा ।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूंगा ॥

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिन-रात काम की चिंता, पल भर भी चैन नहीं है ।
क्रमबद्ध परिणमन सारा, फिर भी क्यों बेचैनी है ॥
जीवन अनमोल मिला है, जी रहा अर्थ के खातिर ।
कुछ साथ नहीं जाना है, पर मोह नचाता जी भर ॥
जिनदर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूंगा । शुभ तीर्थ.।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

कितने भव धार चुका हूँ, निज घर में कभी न आया।
कितनी गतियाँ बदली हैं, चेतन प्रभु कभी न भाया।।
इन्द्रादिक पद क्षणभंगुर, सब राग आग में जलते।
चक्री तीर्थंकर पद भी, थिर नहीं कहीं हैं दिखते।।
जिनदर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूंगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूंगा।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे सब भोग घनेरे, यह पुण्य निरतिशय पाया।
जो भोग रहे मुनिजन सुख, ऐसा पुरूषार्थ न जागा।।
प्रभु काम भोग बंधन की, चर्चा अब नहीं सुहाती।
यह काम-वासना जीतूँ, वो सीख आप से मिलती।।
जिनदर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूंगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूंगा।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों से तृप्ति न होती, सन्तोष कभी नहिं आता।
खारा जल पीने से तो, है कष्ट और बढ़ जाता।।
भोगों में अति आसक्ति, कब होगी नाथ विरक्ति ?
सेये व्यंजन जीवन भर, नहीं हुई कभी भी तृप्ति।।
जिनदर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूंगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूंगा।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञेयों को कितना जानूँ, पहचानूँ होड़ लगी है।
यह ज्ञेय-लुब्धता की भी, बीमारी बहुत बड़ी है।।
जिनवाणी मां कल्याणी, मिथ्यातम दूर भगावे।
जब आतम अनुभव आवे, तब और न कछू सुहावे।।

Scanned with CamScanner

जिन दर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूँगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूँगा ।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन राग-आग में जलता, तपता सहता दुख भारी।
क्या धर्म ध्यान होवेगा, जाना ना ध्येय अविकारी ।।
कोल्हू का बैल बना मैं, दिन-रात दुःख सहता हूँ।
हँस - हँस कर्मों को बाँधे, रो - रो कर फिर कहता हूँ।।
जिन दर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूँगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूँगा ।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर पर मृत्यु मंडराये, अर खबर नहीं है पल की।
बेहोश जिंदगी जीता, फल क्या होगा चेतन जी ।।
प्रभु पुण्य निरतिशय बांधा, स्वर्गादिक फल भी पाये।
कहीं आत्म शांति न पाई, अब शरण तुम्हारी आये ।।
जिन दर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूँगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूँगा ।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-दुख की महाव्यथा यह , प्रभु तुमको कथा सुनायी।
कुछ कहूँ ना कहूँ तो भी, तुम सब जानो जिनरायी ।।
मन हल्का हो जाये प्रभु, ऐसी अब दिशा दिखाओ।
मुझे शिवपुर गैल दिखाओ, दुर्गति से शीघ्र बचाओ ।।
जिन दर्शन कर निज दर्शन, परमारथ अब साधूँगा।
शुभ तीर्थ पपौरा आया, संकल्प सिद्ध पद लूँगा ।।

ॐ ह्रीं श्री पपौरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

(दोहा)

तीर्थ पपौरा क्षेत्र शुभ, वन्दूँ बारम्बार ।
अति मनोज्ञ जिनबिम्ब लख, होवे हर्ष अपार ।।
एक शतक अर आठ शुभ, जिन मंदिर अभिराम ।
धन्य हमारे पूर्वज जिनने, पधराये जिन धाम ।।
जुगों - जुगों तक भव्य जन, आयेंगे इस क्षेत्र ।
अन्तर्मुख हो जायेंगे, खोल ज्ञान के नेत्र ।।
अहो शताब्दी बारवीं, में पधराये बिम्ब ।
अचल विराजे जिन प्रभु, जिनवर मानस्तंभ ।।
यहाँ भोंयरे भी बने, कूप बने शुभ सार ।
बर्तन मिलते थे यहाँ, आवेदन अनुसार ।।
महातेज आनंदमय, महाज्योति परताप ।
अविनाशी अनुपम प्रभु, भोगो शिवसुख आप ।।
श्री अर्हन्त जिनेन्द्र ही, अशरण शरण आधार ।
अनन्त चतुष्ट के धनी, वन्दूँ बारम्बार ।।
जिन मुद्रायें जगत में, कृत्रिम-अकृत्रिम जान ।
सब ही वन्दूँ भाव से, मेटो अघ दुख-खान ।।
वत्थु सहावो धर्म का, उद्घोषक जिनधर्म ।
जो समझे वो ही तिरे, छूटे भवदुख कर्म ।।
रत्नत्रय जयवन्त हो, प्रगटे परिणति सार ।
यही मुक्ति का मार्ग है, दिव्य देशना धार ।।
छः आवश्यक पालकर, टालूँ पाप जिनेन्द्र ।
एकज आवश्यक परम, ध्याऊँ बनूँ मुनीन्द्र ।।
अन्तर्मुख मुद्रा सहित, शोभित श्री जिनराज ।
दर्शन से शांति मिले, मिटे भ्रांति संताप ।।
राग-द्वेष अर मोह वश, रूल्यो अनंतों काल ।

Scanned with CamScanner

ज्ञान - विराग जगे प्रभू, आनंद हो तिहुंकाल ।।
आतम ही परमात्मा, आतम ही भगवान ।
दिव्य देशना सुन प्रभू, जगा आज बहुमान ।।
आठ अंग प्रगटें प्रभू, आठ दोष टल जाय ।
अष्टम वसुधा प्राप्त हो, विनय यही जिनराय ।।
प्रभु वंदन पूजन भजन, सुरपति करें महान ।
महाभाग्य वन्दूं प्रभु, पाऊँ पद निर्माण ।।

ॐ ह्रीं श्री पपोरा अतिशय क्षेत्र स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनेन्द्र की अर्चना, संचित दुरित पलाय ।
भक्ति सहित करता विनय, शिवसुख दो जिनराय ।।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

निर्ग्रन्थों का मार्ग ...

निर्ग्रन्थों का मार्ग हमको प्राणों से भी प्यारा है .....
दिगम्बर वेश न्यारा है ..... निर्ग्रन्थों का मार्ग ।। टेक ।।
शुद्धात्मा में ही, जब लीन होने को, किसी का मन मचलता है ।
तीन कषायों का, तब राग परिणति से, सहज ही टलता है ।।
वस्त्र का धागा... वस्त्र का धागा ..., नहीं फिर उसने तन पर धारा है ।
दिगम्बर वेश न्यारा है ..... निर्ग्रन्थों का मार्ग ।।1।।
पंच-इन्द्रिय का, विस्तार नहीं जिसमें, वह देह ही परिग्रह है ।
तन में नहीं तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा ही गृह है ।।
पर्यायों से पार ..., पर्यायों से पार, त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है ।
दिगम्बर वेश न्यारा है ..... निर्ग्रन्थों का मार्ग ।।2।।
मूलगुण पालन, जिनका सहज जीवन, निरन्तर स्वसंवेदन ।
एक ध्रुव सामान्य, में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण ।।
निर्विकल्प अनुभव, निर्विकल्प अनुभव से ही, जिनने निज को श्रृंगारा है ।
दिगम्बर वेश न्यारा है ..... निर्ग्रन्थों का मार्ग ।।3।।
आनन्द के झरने, झरते प्रदेशों में, ध्यान जब धरते हैं ।
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता, श्रेणी जब चढ़ते है ।।
अन्तर्मुहूरत में... अन्तर्मुहूरत में ही, जिनने अनन्त चतुष्ट धारा है ।
दिगम्बर वेश न्यारा है ..... निर्ग्रन्थों का मार्ग ।।4।।

Scanned with CamScanner

श्री देवगढ़ अतिशय क्षेत्र पूजन

(स्थापना)

(तर्ज – चलो सम्मेद शिखर चालो)

देवगढ़ जिन मंदिर आओ, देवगढ़ प्रभु दर्शन पाओ।
अपनी प्रभुता देख लो, बाहर न भरमाओ ।।
ऐसा ही प्रभु मैं भी हूँ, यह जिनवर दर्शाय ।
भवों-भवों के संचित पातक, क्षण भर में विनशाय।।
महापुण्य के ही प्रताप से, प्रभु दर्शन मिलते ।
जिनदर्शन से आतम दर्शन, भविजन पा लेते ।।
शान्त मुद्रा पल भर ध्याओ, दो घड़ी निज प्रभु को ध्याओ ।
अपनी प्रभुता देख लो, बाहर न भरमाओ ।।
धन्य देवगढ़ अतिशय देखो, कण-कण में भगवान।
जहाँ नजर डालो, प्रभु ही प्रभु, भगवन्तों की खान।।
धन्य-धन्य वे जैनी, जिनने मंदिर बनवाये ।
अन्तरमुखी भाववाही, जिनप्रतिमा पधराये ।।
आत्मन निज प्रभू को ध्याओ, दो घड़ी शांति यहां पाओ
अपनी प्रभुता देख लो, बाहर न भरमाओ ।।

(दोहा)

कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब जिन, वन्दूँ बारम्बार ।
अन्तर्मुख छवि सौम्य लख, हर्षित हृदय अपार ।।

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ।

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनबिम्ब समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Scanned with CamScanner

(मानव छंद)

निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ, जन्मादिक व्यथा मिटाऊँ।
प्रभु वीतराग दर्शन कर आत्मदर्शन पा जाऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें।
महाभाग्य देवगढ़ आया, खोजूँ अपनी अस्ति मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन प्रभु-चरण चढ़ाऊँ, भव ताप रहित हो जाऊँ।
वस्तु स्वरूप चिंतन कर, सुखसागर निज लहराऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत प्रभु-चरण चढ़ाऊँ, शाश्वत अक्षय सुख पाऊँ।
चौरासी लाख बिलों में, अब और न फिर दुख पाऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सुरभित सुमन चढ़ाऊँ, यह काम व्यथा विनशाऊँ।
तज अशुचि देह की क्रीड़ा, अब और न पीड़ा पाऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नेवज प्रभु चरण चढ़ाऊँ, चिर क्षुधा व्याधि जय पाऊँ।
चिर तृप्ति प्रदायी व्यंजन, से शाश्वत सुख प्रगटाऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीपावलि का उजियारा, नहिं मोह तिमिर विनसावे।
यह भेद ज्ञान का दीपक, प्रभु मुक्ति पंथ दिखलावे ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

दश अंगी धूप चढ़ाऊँ, दश धर्म सहज प्रगटाऊँ ।
चैतन्य भाव की सौरभ, जहाँ रहूँ वहीं महकाऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें।
महाभाग्य देवगढ़ आया, खोजूँ अपनी अस्ति मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कल्पद्रुम फल ले आऊँ, नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ।
ऐसे प्रभु कहाँ मिलेंगे, जी भर निरखूँ ध्रुव ध्याऊँ ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति-भावों से भरकर, वसुविधि शुभ अरघ सजाया।
यह जीवन धन्य बनाऊँ, दुर्लभ प्रभु शरणा पाया ॥
अब तक बहु भेष धरे हैं, छवि भा गई आज दिगम्बर।
चिंतामणि प्रगट्यो हिय में, अब रहा न कोई आडम्बर ॥
जिन तारण तरणहि सेऊँ, परवाह करे क्या जब्बर ?
जो शांति न तुमसे पावे, वो भटके मोही समुंदर ॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिनबिम्ब सभी अभिनन्दूँ, जागे सौभाग्य हमारे ॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इसमें ॥ महाभाग्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित समस्त सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

जिन प्रतिमा जिन सारिखी, कही जिनागम मांहि।
चंद्रवदन अवलोकते, आनंद रस बरसाहिं ॥

(रोला)

धन्य-धन्य देवों के गढ़ तो देखो आओ ।
जहाँ दृष्टि जाती है प्रभु दर्शन ही पाओ ॥
धन्य-धन्य प्रभु जिनदर्शन की कैसी गरिमा ।
ऋषि-मुनि गणधर भी गाते हैं, जिन प्रभु महिमा ॥

Scanned with CamScanner

अधोलोक जिन भवन शाश्वत पूजूँ स्वामी ।
सात करोड़ बहत्तर लाख, भजूँ जिन नामी ।।
मध्य लोक के चार शतक अट्ठावन वन्दूं ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ शिक्षा पाऊँ प्रभु अभिनन्दूं ।।
उर्ध्व लोक जिनमंदिर, के दर्शन कर आऊँ ।
लख चौरासी सहस, सन्तानवे तेईस ध्याऊँ ।।
प्रभु की अन्तर्मुख मुद्रा, अब मन में भाती ।
शान्त चित्त हो निर्विकल्प, हो जाऊँ कहती ।।
तीन लोक के कृत्रिम, अकृत्रिम जिनगृह वन्दूँ ।
जिन प्रतिमायें महामनोहर, नित अभिनन्दूँ ।।
अहो ! सैकड़ों समवशरण, से जो प्रभावना ।
वैसी होती अचल बिम्ब से वो प्रभावना ।।
सात तत्त्व का मूक, संदेशा जो देती है ।
जीवराज जिनराज लखो मानो कहती है ।।
मेंढक ने प्रभु पूजन का जब भाव जगाया ।
पूजन के पहले ही, उसने शुभ फल पाया ।।
'जौ' के जितनी जिन प्रतिमा, जो जन रखता है ।
उसको पुण्य अपार जिनागम, भी कहता है ।।
प्रतिमा प्रक्षालन प्रतिदिन, जो जन करते हैं ।
समवशरण साक्षात उन्हें, दर्शन मिलते हैं ।।
सौ कामों को छोड़, देव के दर्शन करना ।
छोड़ हजारों काम दिव्य ध्वनि चित में धरना ।।
दिव्य देवगढ़ पावन भू, दर्शन शुभ पाये ।
धन्य-धन्य वो धर्मी, जिनने प्रभु पधराये ।।
भाव सहित वंदन करता हूँ हे जिनस्वामी ।
मैं भी तुम जैसा हो जाऊँ अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री देवगढ़ स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

चौबीसों तीर्थेश के, दर्शन अति मनहार ।
भाव सहित पूजन करूँ, पाऊँ सौख्य अपार ।।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री पिसनहारी मढ़िया जिन मंदिर पूजन

(चलो सम्मेद शिखर चालो)

पिसनहारी मढ़िया आओ, पिसनहारी मढ़िया आओ ।
नंदीश्वर दर्शन कर चेतन, निज दर्शन पाओ ।।
मानस्तंभ मान हरता है, मान शान तज लो ।
महावीर प्रभु की मुद्रा लख, अन्तर्मुख हो लो ।।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला, मढ़िया तीरथ धाम ।
चौबीसों प्रभु दर्शन करलो, धरलो आतम ध्यान ।।पिसनहारी मढ़िया. ।।
बाहुबली की सुन्दर मुद्रा, देखो बुला रही ।
चेतो चेतन मोह नींद से, जागो जगा रही ।
पिसनहारी का श्रम तो देखो, प्रभुवर पधराये ।
संस्कृति के ये तीर्थ धरोहर, समता लुटा रहे ।। ।।पिसनहारी मढ़िया. ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ स्थित सर्व जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ स्थित सर्व जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ स्थित सर्व जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(मानव छंद)

प्रभु शरण तिहारी आये, अन्तर्मुख छबि मन भाये ।
प्रभु परम शान्त मुद्रा लख, अन्तर्दृष्टि हो जावे ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो सोचा कभी न होता, जो होता कभी न भाता ।
जो भाता नहीं ठहरता, भव ताप सहा नहिं जाता ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
चंदन प्रभु चरण चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

मैं चेतन देह अचेतन, समझाते ज्ञानी ध्यानी ।
मुक्ती की राह निराली, समझाती माँ जिनवाणी ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
अक्षत पद प्रभु श्रृंगारा, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैतन्य ब्रह्म बिन जाने, चहुँगति भ्रमते दुख पाये ।
विषयों वश भव-भव भटके, तिलभर भी शांति न पाये ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
चरणों में सुमन चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज से तृप्ति किसी की, क्या हुई कभी क्या होगी ?
आनंद रसामृत पीते, तुम तृप्त हुये हे योगी ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
नेवज प्रभु चरण चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्या भेद ज्ञान बिन होगा, इस जीवन में उजियारा ।
निज पर को भिन्न पिछानूँ, भटकूँ न भव गलियारा ।।
मढ़िया जी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
चरणों में दीप चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों कर्मों से न्यारा, यह आतम राम हमारा ।
बंधन-दृष्टि से बंधन, मैं तो हूँ जाननहारा ।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा ।
चरणों में धूप चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा ।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

प्रभु निज स्वभाव साधन से, फल पंचमगति जिन पायी।
मैं भी निज में रम जाऊँ, हो भ्रमण अंत दुखदायी।।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा।
मैं फल चरणाग्र चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शांत सौम्य मुद्रा लख, निज की महिमा आ जाती।
परिणाम शान्त हो जाते, परिणति अंतर ढल जाती।
सम्यकदर्शन हो जाता, मुनि मुद्रा भी खिल जाती।।
श्रेणी आरोहण होता, अर सिद्ध दशा मुस्काती।
मढ़ियाजी तीर्थ हमारा, हमको प्राणों से प्यारा।।
भावों के अर्घ्य चढ़ाऊँ, जिन शासन मिला सहारा।।

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

संस्कारधानी तिलक, तीरथ मढ़िया क्षेत्र।
दर्शन कर लो भाव से, खुलें ज्ञान के नेत्र।।

(चौपाई)

जय तीर्थ क्षेत्र मढ़िया महान, भविजन धारो यहाँ आत्म ध्यान।
जिन मुद्रायें मनहर ललाम, अन्तर्मुख छबि दैदीप्यमान।।
नंदीश्वर जिन मंदिर विशाल, आनंद आनंद चित हो खुशाल।
चौबीसों प्रभु पर्वत मंझार, भविजन दर्शन कर हों निहाल।।
श्री आदीश्वर जिनवर महान, छबि निरखत होवे आत्म ज्ञान।
शासन नायक श्री महावीर, दर्शन कर पाऊँ जलधि तीर।।
जय हो जय बाहुबलि महान, गोम्मटेश्वर की छबि तुल्य जान।
माँ धन्य पिसनहारी कमाल, पधराये प्रभु सुन्दर विशाल।।

Scanned with CamScanner

अनुमोदन करता बार-बार, माँ तेरा श्रम सार्थक सुसार।
नव निर्मित जिन मंदिर विशाल, पारस प्रभु शोभें अति खुशाल॥
जय जय पारस जय जय महान, तुम क्षमामूर्ति अतिशय निधान।
अनगिनत जनम धारे अपार, दुख मेंटन समरथ आप द्वार॥
तुम बिन प्रभु कौन कहे हूँ जीव, ज्ञायक परमातम हूँ सदैव।
देखूँ निज शाश्वत आत्मदेव, जिन आज्ञा मानूँ तज कुटेव॥
ये भोग-भुजंग समान जान, कंपित मन मेरा मृग-समान।
कैवल्य ज्ञान सबसे महान, प्रभु पाऊँ मैं कब यह निधान॥
शक्ति तो है सिद्धों समान, भूला हूँ भगवन निज निधान।
प्रभु पूर्व जन्म दुखमय अपार, भटका चहुँगति अज्ञान धार॥
मुनि भगवन्तों के दर्श पाय, सुनी दिव्य ध्वनि तत्वार्थ सार।
तन से चेतन को भिन्न जान, श्रावक पद धारूं आत्म ध्यान॥
अब सफल करूँ प्रभु जनम सार, समझूं समझाऊँ समयसार।
मैं वंदूँ बारम्बार नाथ, शिवपथ दीजे कीजे सनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

शुद्धातम को साधकर, हुये अनंतों पार।
दिव्य देशना दे गये, वंदूँ तारण हार॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सव्वेपि य अरहंता तेण विणाणेण खविद कम्मं सा।
किच्चातधोवदेसं णिव्वाणदा ते णमो तेसिं॥

सभी अरहंतों ने जिस विधि से कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया है और सभी आत्माओं को वही उपदेश दिया है, ऐसे अरहंतों को नमस्कार हो।

– कुन्दकुन्दाचार्य – प्रवचनसार 82

Scanned with CamScanner

श्री चैतन्य धाम पूजन

(स्थापना)

(रोला छन्द)

जयवन्ते चैतन्य धाम, यह तीर्थ हमारा ।
आत्म रसिक भव्यों को, अनुपम यही सहारा ॥
अन्तर्मुख छबि जिनबिम्बों की, यहाँ निहारो ।
जिनदर्शन से निजदर्शन कर भाव सम्हारो ॥
वीतराग छबि देख, हृदय पुलकित हो जाता ।
भव-भव का सन्ताप, हिमालय-सा गल जाता ॥
आओ प्रभूजी, मेरे मन-मंदिर में आओ ।
जब तक मुक्ति न पाऊँ तब तक हृदय समाओ ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिन समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिन समूह ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिन समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मानव छंद)

हूँ चेतन जाननहारा, सुन दिव्यध्वनि श्रुतधारा ।
आनंद अपूरब आता, जागा सौभाग्य हमारा ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति

जिनदर्शन से निज दर्शन, होते भवताप उतरता ।
समता आती अंतर में, कोई शत्रु-मित्र न दिखता ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
चंदन प्रभु-चरण चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

Scanned with CamScanner

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति

अक्षय स्वभाव अनुभवते, अक्षय स्वभाव दर्शाते ।
क्षत का अभिमान करूँ क्या ? अद्भुत सामर्थ जगाते ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
अक्षत प्रभु-चरण चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति

चैतन्य विहारी प्रभुवर, निज में विहार नित करते ।
पंचेन्द्रिय विषय सुखों को, विषधर समान ही तजते ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
चरणों में पुष्प चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति

चैतन्य-रसामृत पीते, तुम तृप्त हुये हे स्वामी ।
यह क्षुधा देह की पीड़ा, मेटो हे अन्तर्यामी ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
नेवज प्रभु-चरण चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति

प्रभु जाननहार जनाता, यह बात समझ अब आई ।
ज्ञेयाकारों में भी तो, ज्ञायक ही दिया दिखाई ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
चरणों में दीप चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति

संसार-महाभव वन में, विष-वृक्ष फले न चाहूँ ।
कैसा भी हो कर्मोदय, समता ही मन में धारूँ ॥
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
ले धूप दशांग चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ॥

Scanned with CamScanner

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ-अशुभ भाव के फल में, चारों गति के दुख पाये।
नहिं रहे कामना कोई, यह मंत्र सीखने आये ।।
चैतन्य धाम शुभ तीरथ, लगता कितना मनहारा ।
निर्मल फल चरण चढ़ाऊँ, जयवंते तीर्थ हमारा ।।

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य धाम में चेतन, की स्वर लहरी महकाती ।
चातकवत चेतन आते, परिणति अंतर ढल जाती ।।
भावों के अर्घ्य सजाऊँ, शुद्धात्म भावना भाऊँ ।
निर्ग्रन्थ दशा अपनाकर, अर्हन्त सिद्ध पद पाऊँ ।।
वृषभादिक वीर जिनेश्वर, प्रभु पूजन करने आया ।
चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ, मेरा चेतन धाम दिखाया ।।

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, सब देवों के देव ।
नाथों के तुम नाथ हो, नमूं सहज स्वयमेव ।।

(चौपाई)

जयवन्ते शुभ तीर्थ हमारा, आत्म साधकों को गुरू द्वारा ।
भव्यजनों को अतिशय प्यारा, चेतनधाम ये तीर्थ हमारा ।।
जयवंते जिनदेव हमारे, मुक्तिमार्ग दर्शावनहारे ।
महामनोज्ञ जिनेश निहारे, ऐसा ही हूँ भाव सम्हारे ।।
यह अनादि अनिधन जग सारा, है स्वाधीन परिणमन सारा।
है स्वतंत्र अणु-अणु समझाया, मैं तो हूँ बस जाननहारा ।।
विश्व व्यवस्था अति मनहारी, जो माने उसकी बलिहारी।
मोह करे कोलाहल सारा, भूल गया जिन आगम प्यारा ।।
ज्यों मृग दौड़े फिरे विपिन में, मृगतृष्णा वश भटके वन में।
त्यों चेतन प्रभु इस भववन में, भटके चौरासी योनिन में ।।

Scanned with CamScanner

राग-द्वेष सबसे हैं न्यारे, चिदानंद भगवान हमारे ।
ग्रहण-त्याग-बिन महिमा न्यारी, सोहे चेतन प्रभु अविकारी ॥
धन्य-धन्य अर्हन्त जिनेश्वर, शत-शत इंद्र नमें जगदीश्वर ।
प्रभु सर्वोदय तीर्थ तुम्हारा, स्याद्वाद बहती ध्रुव धारा ॥
अनेकान्तमय वस्तु बतायी, सारी भ्रमणा दूर भगायी ।
प्रभु ! सुरपति तेरे गुणगावें, गणधर गावें पार न पावें ।
राग बिना प्रभु जगजन तारे, क्रोध भाव विन कर्म निवारे ॥
शीलव्रती फिर भी सुख भोगी, योगी हो या प्रभू अयोगी ।
रत्नत्रय निधि के तुम धारी, पंचकल्याणक तदपि विरागी ॥
प्रभु सर्वज्ञ आपको मानें, या आत्मज्ञ तुम्हें पहचानें ।
यत्न साध्य से शिवपद पाया, फिर भी सहज साध्य समझाया ॥
कैसी महिमा अचरज भारी, बातें लगें अटपटी सारी ।
शान्त सुधारस नित पीते हो, फिर भी क्षुधारोग रीते हो ॥
तुमरो सुजस कौन कह पावे ? गणधर भी कह पार न पावे ।
गुण अनन्त कैसे कर गाऊँ, मनमंदिर में तुम्हें बिठाऊँ ॥
बार-बार मैं शीश नवाऊँ, तुम जैसी प्रभुता प्रगटाऊँ ।
नेमीश्वर यहाँ विचरे होंगे, ढूंढ़ो चरण कहाँ वो होगें ?
सिद्ध क्षेत्र तारंगा आओ, चेतनधाम अवश्य पधारो ।
वीतराग प्रभु दर्शन पाओ, जीवन अपना धन्य बनाओ ॥
चेतन धाम विद्यालय प्यारा, ज्ञान निकेतन सरस हमारा ।
यहीं ज्ञान संस्कार दिलाओ, बोधि समाधि नींव जमाओ ॥
जयवंते यह तीर्थ हमारा, भव्यजनों को एक सहारा ।
अशरण जग में शरण सहारा, जिन शासन जयवंत हमारा ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

चौबीसों श्री जिनचंद के, चरण कमल चितलाय ।
आनंदकंद दशा प्रभु, कब तुम-सम प्रगटाय ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री स्वर्णपुरी सोनगढ़ पूजन

(तर्ज – कुण्डलपुर की धूल सर लगाने आया हूँ....)

सोनगढ़ की साधना भूमि में आया हूँ ।
अपने आतम देव को जगाने आया हूँ ।।
सीमंधर भगवान की मुद्रा बड़ी प्यारी है ।
वैदेही भगवान की आभा ही न्यारी है ।।
मानस्तंभ देखते ही मान गलता है ।
परमागम मंदिर से प्रभु ज्ञान मिलता है ।।
पंचमेरु दर्शन से निज दर्शन होते हैं ।
नंदीश्वर के अर्चन से आनंद झरते हैं ।।
समवशरण मंदिर में मन शान्त होता है ।
कुन्दकुन्द के दर्शन कर मन नाच उठता है ।
आत्म के आराधकों की भूमि न्यारी है ।
गूंजती गुरुदेव की जहाँ वाणी प्यारी है ।।
ऐसी पावन भूमि के दर्शन को आया हूँ ।
सोनगढ़ की साधना भूमि में आया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित सीमंधर महावीर स्वामी आदि समस्त जिनबिम्ब समूह ! जिनागम अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब समूह ! जिनागम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब समूह ! जिनागम अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(मानव छंद)

भगवान आत्मा हूँ मैं, समझे बिन मोह न जाता ।
गुरुदेव गर्जना सुनकर, आतम का गौरव आता ।।
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, जल से हे अर्न्तयामी ।।

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

पर्याय-दृष्टि से जिनवर, पग-पग पर कष्ट उठाये।
दी द्रव्य-दृष्टि गुरूवर ने, दिन मंगलमय अब आये॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिनतीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, चंदन चरचूँ अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा

चारों गतियों में रहकर, ज्ञायक प्रभु रहता न्यारा।
ज्यों कमल कीच अस्पर्शित, चेतन त्यों जाननहारा॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, अक्षत अर्पित अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य ब्रह्म की चर्चा, में मन इतना रम जाता।
विषयों की बातें छोड़ो, जहाँ दिवस याद न आता॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, सुमनों से अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

शुभ-अशुभ अखाद्य बताके, ज्ञानामृत भोज बताये।
आनंद-रसामृत पीने, समरस के स्रोत झराये॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, नेवज अर्पित जगनामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु तत्त्व ज्ञान-दीपक से, शुद्धातम भान कराया।
क्रमबद्ध नियत सब परिणति, से यहीं मोक्ष दिखलाया॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, ले दीप जजूँ अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

जड़कर्म न सुख-दुख देते, पर परिणति असर न डाले।
ध्यानाग्नि जलाये अमंगल, निज ध्येय के धर्म निराले॥
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, ले धूप जजूं अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

नवतत्वों में भी रहकर, नव तत्व रूप न होता ।
चैतन्य तत्त्व आराधन, शाश्वत मुक्ती फल देता ।।
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, शिवफल पाऊँ जगनामी ।।

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हूँ समयसार परमातम, परमागम से पहचानूँ ।
कभी शुद्ध पक्ष नहिं आया, पक्षातिक्रांत अब जानूँ ।।
चिन्मात्र परम ज्योर्तिमय, हूँ शाश्वत देव निरंजन ।
निज गुण का अर्घ्य बनाऊँ, शोभे अनर्घ जीवनधन ।।
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, पाऊँ अनर्घ अभिरामी ।।

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(तर्ज – भावना रथ पर चढ़ जाऊँ)

सोनगढ़ जिनमंदिर आऊँ, सोनगढ़ तीरथ कर आऊँ ।
सीमंधर प्रभु दर्शन करके, निज दर्शन पाऊँ ।।
हे वैदेहीनाथ आपसे, दिव्य ध्वनि सुनकर ।
कुंदकुंद ने परमागम में, रचे छंद मनहर ।।
सभी जीव भगवान आत्मा, गुण अनन्त धारी ।
अन्तरमुख अनुभव से होती, अनुभूति प्यारी ।।
आत्म बल अपना अपनाऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
प्रथम श्री सीमंधर मंदिर, अति सुंदर भगवान ।
लगते हैं विदेह से सीधे, आये दया-निधान ।।
प्रतिमा सुंदर महामनोहर, भावमयी शोभे ।
अन्तर्मुख होने को प्रेरित, करती मनमोहे ।
आत्म दर्शन मैं भी पाऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
मानस्तंभ दर्श करते ही, मानी मान गले ।
स्वाभिमान अपना आ जाये, मिथ्या मोह टले ।।

Scanned with CamScanner

इन्द्रभूति जैसे जीवों ने, प्रभु दर्शन पाकर ।
शिष्य पाँच सौ संग दीक्षा ली, गणधर पद धरकर ।।
तीर्थ मैं भी तो हो आऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
स्वाध्याय मंदिर में आके, सुनो समय का सार ।
गूंज रही गुरूदेव गर्जना, धन्य कुंद अवतार ।।
भारत के कोने-कोने से, साधर्मी आते ।
दिव्य देशना सुनते आत्मार्थी बनके जाते ।।
ध्यान-अध्ययन चित में लाऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
चलो चलें परमागम मंदिर, नेत्र करें हम धन्य ।
यहाँ बोलती है दीवारें, परमागम के छंद ।।
यहीं विराजे महावीर प्रभु, वर्धमान भगवान ।
समयसार पाँचों परमागम, भरत क्षेत्र की शान ।।
ज्ञान सम्यक मैं उपजाऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
ढ़ाई द्वीप में पंचमेरू हैं, यहीं दर्श कर लो ।
नंदीश्वर कब जा पाओगे, यहीं भक्ति भर लो ।।
दिव्य ध्वनि वचनामृत, पढ़ लो, टंकोत्कीर्ण हुये ।
आदिनाथ के दर्शन कर लो, प्रथम जिनेश हुये ।।
आत्म धुन में प्रभु खो जाऊँ ।। सीमंधर प्रभु ....।।
जम्बूद्वीप अकृत्रिम रचना यहीं रची सुंदर ।
भव्य जनों के मनमंदिर में ज्योति जले अंदर ।।
गोम्मटेश बाहुबलि भगवन यहीं विराजे हैं ।
अति सुंदर जिन प्रतिमा लखकर भव खिर जाते हैं ।।
आत्मदर्शन पाने आऊँ - सीमंधर प्रभु ....।।

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब जिनागमाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

निज स्वभाव की साधना, साधो साधक आय ।
गूँज रही गुरू गर्जना, अब भी नित सुखदाय ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री रक्षाबंधन पर्व पूजन

(ताटंक)

श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक को करूँ नमन।
मेरू समान अकंप आपका, दृढ़ चारित्र करूँ वंदन ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, साधु दिगम्बर महा महान।
सिद्धों की श्रेणी में आने, वाला है जिनका शुभ नाम ।।
जयवन्ते वात्सल्य अंगधारी श्री विष्णु कुमार मुनी ।
धन्य आपका महा समर्पण, सदा रहेगा जगत ऋणी ।।
हुये पुनर्दीक्षित प्रायश्चित, धर्मध्यान धर मोक्ष गये ।
साधर्मी रक्षा की शिक्षा, हम सबको भी सौंप गये ।।
रक्षा बंधन पर्व आज मिल, हम सब सहज मनायेंगे ।
मुक्ति श्री पाने का हम सब, शुभ संकल्प सजायेंगे ।।
आओ सब मुनिराज पधारो, हृदय कमल में आ जाओ।
सब जीवों पर समता धारूँ, तत्त्वज्ञान वह दे जाओ ।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य आदि सप्तशतक मुनि विष्णु कुमार मुनिवराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य आदि सप्तशतक मुनि एवं विष्णु कुमार मुनिवराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य आदि सप्तशतक मुनि विष्णु कुमार मुनिवराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(मानव छंद)

ऋषि मुनि यति साधु समागम, बड़भागी सन्त हमारे।
निर्मल जल चरण चढ़ाऊँ, भविजन के तुम्ही सहारे ।।
आचार्य अकंपन वन्दूँ ,ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ।
विष्णु कुमार अभिनन्दूँ, वात्सल्य अंग अपनाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

जहाँ शत्रु मित्र न कोई, सब जीव हैं जाननहारे।
भवताप मिटाने गुरुवर, तुमने दी सीख महा रे॥
आचार्य अकंपन वन्दूँ, ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ।
विष्णु कुमार अभिनन्दूँ, वात्सल्य अंग अपनाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य-गुफा में मुनिवर, निर्भय हो मस्त विचरते।
अक्षय पद दाता तुमही, अक्षय-निधि-की विधि देते॥
आचार्य अकंपन वन्दूँ, ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ॥ विष्णु॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शील बाढ़ नव धारी, अन्तर में ब्रह्म निरखते।
स्वर्गादिक के सुख वैभव, आकर्षित रंच न करते॥
आचार्य अकंपन वन्दूँ, ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ॥ विष्णु॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अब संयम रतन सम्भालूँ, सारी कल्मष धो डालूँ।
फिर महत् पुरूष संग विचरूँ, अर क्षुधा व्याधि अघ टालूँ॥
आचार्य अकंपन वन्दूँ, ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ॥ विष्णु॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधियारे में उजियारा, हो जाये जहां मुनि जाते।
जहं चरण तुम्हारे पड़ते, वहीं तीर्थ क्षेत्र बन जाते॥
आचार्य अकंपन वन्दूँ, ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ।
विष्णु कुमार अभिनन्दूँ, वात्सल्य अंग अपनाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु ज्ञान-ध्यान-अध्ययन में, मुनिराज मगन मन रहते।
कर्मों की वंशावलि ही, सारी क्षण-क्षण में दहते ।।
आचार्य अकंपन वन्दूँ ऋषि सप्त शतक नित ध्याऊँ ।
विष्णु कुमार अभिनन्दूँ, वात्सल्य अंग अपनाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भवफल अनन्त हम पाये, कहीं शांति नहीं दिखलाये।
जिस पंथ चले योगीश्वर, वह पंथ आज मन भाये ।।
आचार्यअकंपनवन्दूँ,ऋषिसप्तशतकनितध्याऊँ ।। विष्णु।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन चरण चढ़ाऊँ, मुनि भक्ति हृदय में लाऊँ।
करुणा के सागर तुमसे, बस मुक्ति श्री ही चाहूँ ।।
आचार्यअकंपनवन्दूँ,ऋषिसप्तशतकनितध्याऊँ ।। विष्णु।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यपद निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वात्सल्य अंग के धनी, मुनि श्री विष्णुकुमार।
विजय हुई मुनि धर्म की, गूंजी जय-जयकार ।।

(वीर)

आया पर्व महामंगलमय, घर-घर मंगलाचार हुआ।
आज हुआ उपसर्ग निवारण, जन-जन हर्ष अपार हुआ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, श्री अकंपनाचार्य महान।
प्राण भले जायें तो जायें, छोड़ा नहीं धरम अर ध्यान ।।
उज्जैनी नगरी में इक दिन, संघ मुनीश्वर का आया।
वर्मा राजा ने दर्शन कर, महाभाग्य अपना पाया ।।

Scanned with CamScanner

लेकिन जिन शासन की महिमा, नहीं मंत्रियों को भायी।
बलि मंत्री ने मुनि निंदा कर, मानी अपनी चतुरायी ॥
श्रुतसागर मुनि श्रुत के सागर, ने जवाब भरपूर दिया।
साधर्मी से बहस न करना, भाषा समिति को गौण किया ॥
श्री अकम्पनाचार्य मुनीश्वर, नहिं बोले गंभीर हुये।
संकट में अब संघ पड़ेगा, गुरु गंभीर विचार रहे ॥
श्रुतसागर को भूल समझ, आई बोले प्रभु क्षमा करें।
प्रायश्चित देना सो देवें, हुई भूल जो माफ करें ॥
महा ज्ञान के सागर से भी जब ऐसी थी भूल हुयी।
वाणी के अनुचित प्रयोग से, भारी विपदा खड़ी हुयी ॥
श्रुतसागर जी स्वयं संघ से, उस विवाद थल पर आये।
बलि ने वार किया उन ऋषि पर, यक्ष ने कीलित हाथ किये ॥
अपमानित हो गया बलि पर, अकल ठिकाने न आई।
देश निकाला हुआ कषायें, किन्तु और ही हरयायी ॥
नगर हस्तिनापुर के नृप श्री, पद्मराय जी कहलाये।
अपनी चतुराई से बलि फिर, उनके मंत्री बन आये ॥
सप्त दिवस का राज्य लिया, जब संघ यहाँ पर फिर आया।
किया घोर उपसर्ग दुष्ट ने, सारा जग फिर थर्राया ॥
घास उगायी मुनी के चारों ओर गमन न कर पावें।
काँटो की बाड़ी लगवाई, यज्ञ रचाया तड़फाने ॥
चर्म केश तो जले असंख्यों, सूक्ष्म जीव भी जलते थे।
धुआँ मुनीश्वर के रंध्रों में गया कंठ सब छिलते थे ॥
मौन लिया उपसर्ग समय तक, आत्म ध्यान में मग्न हुये।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु अर, शुद्धातम ही शरण दिखे ॥
जितना भी उपसर्ग हुआ सब, साम्यभाव से सहन किया।
दोष लगाया नहीं बली को, कर्मोदय है जान लिया ॥

Scanned with CamScanner

हाहाकार मचा अवनि पर, बलि तूने क्या कर डाला ?
महा क्षमा-सागर सन्तों पर, क्रूर जाल क्यों रच डाला ?
सच पूछो तो बली स्वयं ही, आर्त ध्यान में जलता था।
शीतल शांत ध्यान में बैठे, मुनि का क्या कर सकता था ?
विष्णुकुमार ऋद्धिधारी मुनि, वामन वेष बना आये।
तीन पांव बलि से धरती ले, फिर विराट छबि दिखलाये॥
दो पग में भूमंडल नापा, तीजा पग अब कहाँ रखें।
बलि ने कहा पीठ नापो प्रभु, बड़ी भूल हुई क्षमा करें॥
बलि पर रखा पैर ज्यों ही तो, अवनि अम्बर कांप गया।
दूर किया उपसर्ग मुनिश्वर, जग में जय-जयकार हुआ॥
विष्णुकुमार मुनिश्वर मुनि पद, मुनि रक्षा करने छोड़ा।
ऊँचे पद को त्याग दिया था, गृहस्थपने नाता जोड़ा॥
इसीलिये यह पर्व आज, "रक्षा बन्धन" कहलाता है।
रक्षा के भावों में बंधन भी जिन धर्म बताता है॥
धन्य-धन्य वे धर्मी श्रावक, जिन छोड़ा भोजन पानी।
जब तक मुनि उपसर्ग टले नहिं, पढ़ते मन में जिनवाणी॥
जैसे ही उपसर्ग निवारण हुआ, मंगलाचार हुआ।
घर-घर में पड़गाहन करने, हर श्रावक तैयार हुआ॥
लिये कजलियाँ श्रावक आये, मानो सच उपसर्ग टला।
लिये जवारे आये जब जन, खुशी आज सब उदय टला॥
घोर हुआ उपसर्ग मुनिश्वर, लेकिन क्रोध नहीं लाये।
सभी जीव भगवान आत्मा, सिद्ध समान नजर आये॥
धन्य-धन्य मुनिराज अकंपन, महा साहसी वज्र समान।
रहे मेरु सम ही अकंप तुम, महा तपस्वी मुनि भगवान॥
हे मित्रो ! जिनधर्म और, धर्मायतनों पर कभी कहीं।
दुष्ट लोग आक्रमण करें, तो पीछे हटना कभी नहीं॥

Scanned with CamScanner

चाहे धन वैभव लुट जाये, ताने सुनना पड़ें तुम्हें।
तन-मन-धन सर्वस्व लुटाकर, रक्षा करना सदा तुम्हें॥
साधर्मी वात्सल्य निभाना, कभी उपेक्षा न करना।
उपगूहन करना दोषों का, दुर्लभ साधर्मी मिलना।
जयवन्ते जिनशासन प्यारा, जयवन्ते मुनि धर्म महान॥
वात्सल्य हो सब जीवों में, सबका हो आदर सम्मान।
जिनदर्शन पूजन नित करना, छः आवश्यक आचरना॥
सर्व समर्पण करके भी जिन शासन की रक्षा करना॥
रक्षाबंधन पर्व यही शिक्षा देने, को आया है।
आत्मधर्म की रक्षा करना, गुरु ने यही सिखाया है॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य एवं मुनि विष्णुकुमार आदि सप्तसतक मुनिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यपद निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलमय मंगल करन - श्री जिनधर्म महान।
तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति हो, रक्षक श्री भगवान॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपामि॥

देखो जी आदीश्वर स्वामी...

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है॥टेक.॥
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है॥1॥
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है॥2॥
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है॥3॥
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन सबको नाश बताया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके "दौल" तास जस गाया है॥4॥

Scanned with CamScanner

श्री सिद्ध क्षेत्र गजपंथा पूजन

(चांद्रायण)

गजपंथा में महामुनीश्वर जो भये ।
रत्नत्रय का पंथ धार शिवपुर गये ।।
धन्य हुई बलभद्र मुनिन की साधना ।
आठ कोड़ि मुनिवृंदों की आराधना ।।
अगणित मुनिवर चरण पड़े इस भूमि पर।
यहीं ध्यान में रमते होंगे ऋद्धिधर ।।
कण-कण पावन गजपंथा गिरिराज का।
सम श्रेणी में आप विराजें शाश्वता ।।
हे प्रभो ! मेरे हृदय-कमल में आईये ।
भव-सागर से हमको पार लगाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल नंदी नंदीमित्र सुप्रभ सुधर्म सुदर्शन सप्त बलभद्र आदि आठ करोड़ मुनिवराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(मानव)

चेतन-स्वरूप समझे बिन, प्रभु अगणित कष्ट उठाये ।
चारों गतियों में भटके, जन्मादि मरण दुख पाये ।।
अन्तर्मुख छवी निहारूँ, अर अन्तर्मुख हो जाऊँ ।
अपनी प्रभुता अपने में, लख सहज शांति पा जाऊँ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी ।
मुनि आठ कोटि पद वन्दूँ, बलभद्र नमूँ सुखकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल बलभद्र आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अद्भुत छवि आज निहारी, मम रोम-रोम पुलकित है ।
धनि धन्य घड़ी हुई मेरी, चिंतामणि पा हर्षित है ।।

Scanned with CamScanner

विषयों की तपन बुझाने, बस आत्म ज्ञान ही चंदन।
समता के सागर जिनवर, जयवन्ते यह जिन शासन ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल बलभद्र आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक पद भी अस्थिर, कहीं शांति नही है तिल भर।
बस ज्ञान मात्र अवलोकन, ही देता आनंद झर-झर ।।
निज भाव सदा ही निर्मल, मुनि वृंद मगन मन रहते।
अक्षय-स्वभाव पाने को, अक्षत-स्वभाव अनुभवते ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शील स्वभाव निरखते, रतिपति भी तुमसे हारा।
निज में विहार नित करते, बहती आनंद की धारा ।।
विषयों की भीषण ज्वाला, प्रभु तुम्हें नहीं छू पाती।
वह कला मुझे भी दे दो, हे ब्रह्मलीन शिववासी ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चपल इन्द्रियों पर जय, पाकर तृप्ति है पायी ।
हो निजानंद रसस्वादी, यह क्षुधाव्याधि विनशाई ।।
विषयों की तृष्णा से प्रभु, नहीं तृप्ति कभी भी आती।
बस अनाहारी प्रभु निरखूँ, अनुभूति ही शांति दिलाती ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने भी सिद्ध हुये हैं, अर जो भविष्य में होगें।
सिद्धत्व भाव अंतर लख, निज बल से सिद्ध हुये है ।।
लाखों दीपक जल जावें, अज्ञान-तिमिर नहिं जाता।
क्षणभर का आतम अनुभव, प्रभु मोक्षमार्ग दर्शाता ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु सिद्धचक्र में शामिल, होने की युक्ति बतायी ।
मैं स्वयं सिद्ध प्रभु सम हूँ, मुक्ती की रीति सिखाई ।।
चैतन्य-भान बिन कितने, ही बार समाधि लगाई ।
हे ऋषिवर आतम की धुन, बस तेरे निकट ही आई ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी ।
मुनि आठ कोटि पद वन्दूँ, बलभद्र नमूँ सुखकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वर्गादि विभूति न चाहूँ, विषयों में नांहि लुभाऊँ।
बस ज्ञान - ज्ञान ही भासे, चित कहीं नहीं भरमाऊँ ।।
चैतन्य भाव भासन हो, मैं शरण आपकी आया ।
अपनी निधि पाने भगवन, फल तुम्हें चढ़ाने लाया ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी ।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदनादि द्रव्यों से, प्रमुदित हो अर्घ्य बनाया ।
भवभय के भेदन हारे, भगवान आपको पाया ।।
इन्द्रादिक दास तुम्हारे, लौकांतिक गीत गुंजाते ।
शुद्धात्म सुधारस पीने, अब आया शरण तुम्हारे ।।
गजपंथा सिद्धाचल जी, निर्वाण भूमि अति प्यारी ।।मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(सखी)

गजपंथा तीरथ पावन, सिद्धालय नमन हमारा ।
अतिशयमय भूमि यही है, जहाँ हुआ सन्त उजियारा ।।
वैरागी सन्त मुनीश्वर, कभी इसी भूमि आये थे ।
संसार असार समझकर, निज समयसार पाये थे ।।
बलभद्र आदि मुनियों ने, यहीं आतम ध्यान लगाया ।
कैवल्य-कला अपनायी, निर्वाण यहीं से पाया ।।
बलभद्र सुदर्शन सुप्रभ नंदि, नंदिमित्र मुनि आये ।
श्री विजय अचल सुधर्म, भगवंत मुक्ति-श्री पाये ।।

Scanned with CamScanner

अहो ! आठ कोटि मुनियों ने, यहीं सिद्ध दशा अपनायी ।
अशरीरी ज्ञानशरीरी, सिद्धों की भक्ति सुहायी ॥
पर्वत के तले तलहटी, यहीं पार्श्व प्रभु के दर्शन ।
अन्तरिक्ष विराजे भगवन, मानो हम आये मधुवन ॥
नेमीश्वर जिनवर प्रतिमा, अति ही विशाल मनहारी ।
मानो गिरनार शिखर ही, आया है अतिशयकारी ॥
यहीं अति सुंदर जिनमंदिर, सीमंधर बीस जिनेश्वर ।
अति भावमयी प्रतिमा हैं, जयवन्ते धर्म यतीश्वर ॥
शासन नायक सन्मति प्रभु, चौबीसी सहित विराजे ।
जिनदर्शन कर निजदर्शन, कर लो भविजन बतलाते ॥
प्रभु भूत भविष्यत की भी, चौबीसी सौम्य निराली ।
भक्ति भावों से निरखो, बन जाओ वैभवशाली ॥
सातों बलभद्र शिखर पर, खडगासन प्रभु पधराये ।
अति धवल मनोज्ञ जिनेन्द्र, महाभाग्य जो दर्शन पाये ॥
यहीं सिद्ध शिला है सिर पर, सिद्धों की सभा विराजी ।
जब काल लब्धि आ जाती, तब सिद्ध दशा भा जाती ॥
तुम ही हो अर्न्तयामी, तुम ही हो सबके स्वामी ।
तुम ही करूणा सागर हो, निस्पृह हो तुम जगनामी ॥
तुम ही सर्वज्ञ जिनेश्वर, तुम वीतराग परमेश्वर ।
रवि - शशि से तुम बढ़कर हो, शिवपथदर्शी सत् दिनकर ॥
प्रभु गुण अनन्त है तेरे, कवि कह न सके है सीमा ।
सुरगुरू भी कह नहि पाये, तेरी अनंत है महिमा ॥
प्रभु भक्तिभाव से आये, जयंवते श्री जिन शासन ।
हम चलें सत्य शिवपथ पर, गजपंथा तीरथ वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री विजय अचल आदि आठ करोड़ मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गजपंथाजी तीर्थ शुभ, वंदूँ धर नित ध्यान ।
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजयगिरि पूजन

(चांद्रायण)

पाँच पांडवों ने मुनि मुद्रा धारकर ।
मुक्ति वधू को पाने पकड़ी थी डगर ।।
पालीताना पावन तीरथ आय के ।
आत्म ध्यान में मग्न हुये मुनिराज वे ।।
अर्जुन भीम युधिष्ठिर शिव पद पा गये ।
आठ कोड़ि मुनि मुक्त इसी भू पर भये ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि साधना ।
हृदय-कमल में आओ पधारो वंदना ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र युधिष्ठिर अर्जुन भीम आदि आठ करोड़ मुनि सिद्ध समूह ! अत्र अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र युधिष्ठिर अर्जुन भीम आदि आठ करोड़ मुनि सिद्ध समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र युधिष्ठिर अर्जुन भीम आदि आठ करोड़ मुनि सिद्ध समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(जोगीरासा)

जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनंत गंवाया ।
स्वांग स्वभाव भिन्न समझे बिन, शांति कहीं न पाया ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनि पद, वन्दूँ नीर चढ़ाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेपांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो सिद्ध पद प्राप्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब तक पर पदार्थ में ममता, समता कैसे आवे ?
अपनी प्रभुता अपने में है, तुम बिन कौन बतावे ।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनि पद, वंदन चंदन लाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

उज्जवल तंदुल धवल सुअक्षत, सम अक्षय निधि पायी।
अक्षय पद पाने हे भगवन, शरण तिहारी भायी ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनी पद, अक्षत तुम्हें चढ़ाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्पर्शन रसना इन्द्रियवश, दुखिया जग के प्राणी ।
आत्म ब्रह्म में रमूँ सदा ही, सुनूँ सदा जिनवाणी ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनि पद, वन्दूँ पुष्प चढ़ाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धातम अनुभव-रस जैसा, रूचिकर जड़रस नांही ।
अनुभव-रस सेवी मुनि कहते, चख लो अमृत भाई ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनी पद, वंदन नेवज लाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिन्तामणि चैतन्य दीप ले, स्व पर विवेक जगाऊँ।
आतम में अपनापन लाऊँ , मोहमहांध नशाऊँ ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनी पद, वन्दूँ दीप चढ़ाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टकर्म जो दुख के दाता, जहाँ आदर वहाँ जाते ।
आत्म ध्यान के धनी आपके, पास नहीं वो आ पाते ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनी पद, वन्दूँ धूप चढ़ाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्वज्ञान से हो निःशंक, निःकांक्ष भाव पा जाऊँ।
नहीं कामना रहे मोक्ष की, फल श्रेयस अपनाऊँ।।
धन्य-धन्य उपसर्गजयी मुनि, शत्रुंजय गिरि आये ।
पांडव आदि असंख्यमुनी पद, वंदू फल ले आये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

Scanned with CamScanner

अर्घ्य समर्पित भक्ति भाव से, लिये शरण में आया।
महा भाग्य से मिले प्रभु जी, धर्म-मर्म मन भाया ।।
अपने में अपनापन लाऊँ, ममता मोह हटाऊँ ।
हे उपसर्गजयी मुनि पांडव, तुम सम समता पाऊँ ।।
अर्जुन भीम युधिष्ठिर वन्दूँ, शत्रुंजय गिरि आये ।
मुनि असंख्ये मुक्त हुये हम, अर्घ संजोकर लाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

जय उपसर्गजयी मुनि, जय जिन धर्म महान।
जयवंते निर्ग्रन्थ पद, वीतराग विज्ञान ।।
भक्ति भाव से हे प्रभो ! आया तेरे द्वार।
इस असार संसार से, करो प्रभु उद्धार ।।

(रोला)

धन्य-धन्य पाँचों पांडव मुनि तुम्हें नमन है।
शत्रुंजय से मुक्ति पधारे अभिनंदन है ।।
धन्य-धन्य मुनि दीक्षा ली वैराग्य सम्हारा।
शत्रु मित्र का भेद नाश समता पद धारा ।।
धन्य-धन्य कुरूवंश हंस तुम मुक्त हो गये।
अन्तःकृत तुम हुये केवली कंत हो गये ।।
धन्य-धन्य शुद्धोपयोग के साधनहारे ।
धन्य-धन्य रत्नत्रय निधि के बाँटनहारे ।।
अहो भगवती दीक्षा, तुमने जब अपनायी।
राजपाट परिग्रह छोड़ा, तृण सम लख भाई ।।
आप जितेन्द्रिय हुये, अतीन्द्रिय जीवन जीते।
मोह मान माया मत्सर भावों से रीते ।।
पृथ्वी शैय्या, चादर था आकाश तुम्हारा।
चलते-फिरते सिद्ध, आपको नमन हमारा ।।

Scanned with CamScanner

परिग्रह चौबीस भेद, सभी के तुम थे त्यागी।
परीषह बाईस जीत, हुये तुम ही बड़भागी ॥
केवलज्ञान तलहटी में तुम ही रहते थे।
सिद्ध प्रभु से क्षण-क्षण में बातें करते थे ॥
तप्त लोह आभूषण, तन पर जब पहराये।
लकड़ी जैसी देह जली, पर कोप न लाये ॥
धन्य युधिष्ठिर धर्मराज, घड़ी कैसी आई।
उपसर्गों को जीत मुक्ति श्री लक्ष्मी पायी ॥
लक्ष भेदिया महा धर्नुधर अर्जुन मुनिवर।
कर्मवंश का नाश किया चल दिये शिखर पर ॥
भीम महाबलवान आत्मबल जब अपनाया।
राग-द्वेष भवचक्र नाश कर शिवफल पाया ॥
शत्रुंजय पर्वत महान को वंदन करता।
आठ कोड़ि मुनि मुक्त हुये अभिनंदन करता ॥
तुम जैसी समता मेरे जीवन में आये।
जयवंते जिनधर्म नियम से मुक्ति दिलाये ॥

ॐ ह्रीं श्री पालीताना सिद्धक्षेत्रे पांडव आदि आठ करोड़ मुनीश्वरेभ्यो जयमाला अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आत्मशांति का मूल है, वीतराग विज्ञान।
नमूं ताहि जातें भये, अरिहंतादि महान ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

भव्य जीवों को प्रातः काल उठकर जिनेन्द्र देव तथा गुरु का दर्शन करना चाहिए, भक्ति पूर्वक उनकी वन्दना-स्तुति भी करना चाहिए और धर्म का श्रवण भी करना चाहिए। इसके बाद ही अन्य गृह आदि सम्बन्धी कार्य करने योग्य है, क्योंकि गणधर आदि महापुरुषों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-इन चार पुरुषार्थों में धर्म का ही सब में श्रेष्ठ निरूपण किया है तथा उसी को मुख्य माना है।

- श्री पद्मनन्दि आचार्य

Scanned with CamScanner

श्री सोनागिर सिद्ध क्षेत्र पूजन

(दोहा)

श्री सोनागिर शीश पर, कोटि-कोटि मुनिराज।
सिद्ध हुये सम श्रेणी में, मस्तक रहे विराज॥
चन्द्रप्रभ भगवान का, समवशरण द्युतिवान।
धन्य हुये भविजन अहो, सुन ज्ञायक यशगान॥
नंग - अनंग कुमार का, धन्य हुआ अवतार।
साढ़े पाँच करोड़ मुनि, यहीं हुये भवपार॥
ऋद्धिधारी शुभचंद्र मुनि, के पग रज स्पर्श।
हुई शिला सोनागिरी, इसमें क्या आश्चर्य ?
जिन मंदिर जिनवर नमूँ, मनहर दिव्य ललाम।
परमागम मंदिर नमूँ, शोभे अति अभिराम॥

ॐ ह्रीं श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पाँच कोटि मुनि सिद्ध समूह ! अत्र अवतर अवतर। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(भुजंगप्रपात)

महाभाग्य से जिन धरम मिल गया है तो, महा मोह मिथ्या मलिनता हरूँगा।
परम शान्त मुद्रा हृदय भा गई है, जनम अर मरण के भरम सब तजूँगा॥
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा॥

ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादि निधन वस्तुयें भिन्न-भिन्न,
सहज परिणमनशील तुम ही बताते।
न सुख दुख का दाता जगत में है कोई,
यही शांति का मंत्र सबको सिखाते॥

श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा॥

ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु इन्द्र चक्रादि पद सब विनश्वर ,
हैं नश्वर सभी ढ़ेर संयोग सारे ।
न करना भरोसा विषय भोग सुख का ॥
न तजना भरोसा चिदानंद का रे ॥
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ॥
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैतन्य का हो प्रभु भाव भासन,
विषयों में मन स्वप्न में भी न जावे ।
तजूँ राग नागिन विषय वासना धुन ॥
सहज ब्रह्म चिद्रूप ही मन समावे ॥
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ॥
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

सदा शांति समता का रस पान करते,
क्षुधा-वेदना तुमसे शरमा गयी है ।
परम तृप्ति पाऊँ रहे, कुछ न वांछा,
सतत स्वानुभव हो विनय प्रभु यही है ॥
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ॥
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहज ज्ञान को प्रभु कभी भी न जाना,
सदा ज्ञेयों में ज्ञान की धुन समाई ।
कभी भी न सोचा स्वयं ज्ञानसागर,
तुम्हें पाके सम्यक मति आज जागी ॥
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ॥
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ॥
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पँच कोटि मुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

प्रभो ध्यान की अग्नि ऐसी जलाई,
फुलिंगे उड़े वो ही हैं सूर्य तारे ।
जली कर्म वंशावलि ऐसी प्रभुवर,
खिरी धर्म की धूप सर्वाङ्ग धारे ।।
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ।।
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ।।
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा

नहीं मोक्ष फल की रही कामना अब,
परिपूर्ण परमात्म पद मन समाया ।
किससे करूँ याचना क्या कमी है ?
समयसार का सार निज में दिखाया ।।
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा, चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ।।
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये, हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ।।
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सजाऊँ प्रभो अर्घ्य आठों दरब ले ।
सहज भक्ति ज़ागी मैं पूजन करूँगा ।।
न भटकूंगा संसार में अब कभी भी ।
निर्ग्रंथ पथ पर ही प्रभुवर चलूंगा ।।
श्री सोनागिरि तीर्थ हम सबको प्यारा,
चंदाप्रभू जी ने जिसको श्रृंगारा ।।
नंग अर अनंग मुनीश्वर असंख्ये,
हुये सिद्ध सबको नमन है हमारा ।।
ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

सोनारी बरसी जहाँ, दिव्य ध्वनि सुखकार।
तीर्थ यही सोनागिरि, जयवंते मनहार ।।

(मानव छंद)

Scanned with CamScanner

सोनागिरि तीरथ पावन, सम्मेद शिखर सम प्यारा।
मुनि वृन्दों की पावन रज, ने श्रृङ्ग यही श्रृंगारा ।।
ऋषि मुनि साधक सन्तों की, जहाँ सतत साधना होती।
सूरज की किरण सुनहरी, जिनके चरणों को धोती ।।
सोनागिरि स्वर्ण गगन पर, सोनारी सूरज उगता।
जिन दिव्यध्वनि धर्मामृत, परमामृत सदा बरसता ।।
श्री चंद्रप्रभू जिनवर का, जब समवशरण शुभ आया।
तब नंग - अनंग नृपों ने, निज जीवन सफल बनाया ।।
जिन शासन जिन्हें सुहाया, भव अन्त समझ लो आया।
जिसने प्रभुता पहचानी, उसने प्रभुता को पाया ।।
"अहमिक्को खलु शुद्धो" के, माँ गारूड़ि मंत्र सुनाती।
शुद्धात्म सम्पदा देती, भव्यों को यही सुहाती ।।
कोटि-कोटि मुनियों ने, यहीं आतम ध्यान लगाया।
भव्यों को दर्शन मिलते, मंगल अवसर यह आया ।।
खोजो उनकीं पावन रज, ऋषियों की याद जगाओ।
भगवान आत्मा कहने, वाली उस धुन को पाओ ।।
यहाँ चंद्रप्रभू जिनवर की, अन्तरमुख मुद्रा पढ़ लो।
अन्तर के कालुष धोलो, शुद्धात्म सम्पदा वर लो ।।
बाहुबलि वज्र तपस्वी, के भी दर्शन तो कर लो।
कब गोम्मटेश जाओगे, जी भर के यहीं निरख लो ।।
इक शतक आठ जिन मंदिर, सुन्दर मनहर सुखकारी।
चौबीस तीर्थंकर जिनवर, की प्रतिमायें मनहारी ।।
चौबीसी खड़गासन भी, अति दिव्य देशना देती।
चौबीस परिग्रह तज दो, सब करो धर्म की खेती ।।
शुभचंद्राचार्य मुनीश्वर, ज्ञानार्णव ग्रंथ बनाया।
ऋद्धिधारी मुनियों ने, यहीं समता भाव जगाया ।।
यहीं कुंड नरियल देखो, वजनी शिला देख के आओ।
यहीं आतम ध्यान लगाके, यहीं सम्यग्दर्शन पाओ ।।
परमागम मंदिर आओ, परमागम पढ़ो पढ़ाओ।
श्री कुंदकुंद स्वामी के, वचनामृत लाभ उठाओ ।।
यहाँ पंच पहाड़ी दर्शन, निर्वाण क्षेत्र के कर लो।

Scanned with CamScanner

सम्मेदाचल, गिरनारी, पावापुरी यहीं निरख लो ॥
यहाँ बना ध्यान का मंदिर, सब शान्त मौन हो जाओ।
भगवान आत्मा अपना, अपने द्वारा ही ध्याओ ॥
यहाँ समवशरण जिनमंदिर, दर्शन कर ध्यान लगाओ।
भावी चौबीसी निरखो, वैदेही दर्शन पाओ ॥
यहाँ कुंदकुंद नगरी में, आतम हित भाव जगा लो।
निवृत्त चित्त होकर के, भगवान आत्मा ध्या लो ॥
यहाँ पंचपहाड़ी सम्मुख, श्री मानस्तंभ निहारो।
मानादि कषायें गलाकर, निज ज्ञानस्तंभ सम्हारो ॥
कारण परमात्म त्रिकाली, यह ही श्रद्धेय हमारा।
जय हो सोनागिर तीरथ, सम्मेदशिखर लघु प्यारा ॥

ॐ ह्रीं सोनागिर सिद्धक्षेत्रे नंग अनंग आदि साढ़े पंचकोटि मुनीश्वरेभ्यो जयमाला अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, जिन शासन सुखखान।
भक्त बनें भगवन प्रभू, पा जिनधर्म महान ॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ॥

जिनागम महिमा

महिमा है, अगम जिनागम की ॥ टेक ॥

जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ॥1 ॥
रागादिक दुःख कारन जानें, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की ॥ 2 ॥
ज्ञान ज्योति जागी उर अन्तर, रूचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ॥ 3 ॥
कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परमपराक्रम की ॥ 4 ॥
'भागचन्द' शिव-लालच लाग्यो, पहुँच नहीं है जहँ जम की ॥ 5 ॥

Scanned with CamScanner

श्री बुंदेलखंड तीर्थ यात्रा पूजन

स्थापना

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाले हैं ये तीरथ हमारे।
भाव विशुद्धि जगाते हैं ये तीरथ हमारे॥
जिन संस्कृति के परम धरोहर।
आत्म शांति के तट अति सुन्दर॥
ध्यान का ध्येय दिखावें रे ये तीरथ हमारे।
अन्तर्मुख जिनबिम्ब निहारूं॥
ऐसा ही हूँ सदा विचारूं।
अपने में खो जाऊँ रे कहे तीरथ हमारे॥
भाव सहित वंदे जो कोई।
ताहि नरक पशुगति नहिं होई॥
विषय कषाय छुड़ावें रे ये तीरथ हमारे।
कृत्रिम अकृत्रिम तीरथ सारे॥
सबको अगणित नमन हमारे।
रत्नत्रय सब पाओ रे कहें तीरथ हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वतीर्थक्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सर्वतीर्थक्षेत्र समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री सर्वतीर्थक्षेत्र समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(सखी)

मुनि मन सम उज्ज्वल जल ले, प्रभु तेरे चरण पखारूँ।
प्रभु होय साधना ऐसी, जन्मादि न अब फिर धारूँ॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जड़ चंदन अतिशय न्यारा, मैं तो बस जाननहारा।
जो होना सो निश्चित है, सुन मंत्र मिटे दुख सारा॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव अनुभव से, भटकन प्रभु कभी न आती।
अक्षत स्वभाव समझाती, जिनवाणी सदा जगाती॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कामवासना के वश, भव - भव अनंत दुख पाये।
कभी शील स्वभाव न भाया, ये सीख यहीं मिल पावे॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा-व्याधि नागिन-सी, व्यंजन से तृप्ती न आती।
अनशन स्वभाव आस्वादूँ, प्रभु शाश्वत समता आती॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भेद ज्ञान ज्योति से, मोहांध भाव विनसाऊँ।
जागे विवेक स्व पर का, कब समता उर में पाऊँ॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कर्मों ने दुख पहुँचाया, चहुँगति में नाच नचाया।
यह बात सर्वथा झूठी, सुन अनेकान्त सुख पाया॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संकल्प-विकल्पों का फल, संसार सदा फलता है।
दो घड़ी आत्म अनुभव का, फल मुक्ति-कमल खिलता है॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों श्री जिन प्रभुवर, आनंदकंद सुखकारी।
अन्तर्मुख नासादृष्टि, छबि सोहे प्रभु अविकारी॥
जल फल आठों द्रव्यों से, प्रभु अर्घ्य संजोकर लाया।
पाऊँ अनर्घ पद ऐसा, जैसा पद तुमने पाया॥
संस्कृति के परम धरोहर, जिन शासन के रखवारे।
जिन तीर्थ सदा अभिनन्दूँ, चौबीस जिनेश हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आत्मानुभव तीर्थ ही, सब तीर्थों में सार।
द्रव्य-भाव तीरथ अहो, करे भवार्णव पार॥

(मानव छंद)

संस्कृति की अमर धरोहर, ये तीर्थ हमारे सारे।
ये हैं प्रतीक समता के, प्रभुता के सहज सहारे॥
आत्मा की सहज साधना, के हैं ये अमर धरोहर।
है केन्द्र उपासना के ये, सब करो साधना जी-भर॥

Scanned with CamScanner

जयवंत रहे जिनशासन, गूंजे घर-घर जिनवाणी ।
जो चहुँगति दुख से डर हो, तज दो प्रमाद दुखदानी ।।
साधर्मी जीवों का भी, यहाँ मधुर मिलन हो जाता ।
चर्चा होती तत्त्वों की, अन्तर्मुखी ज्ञान जगाता ।।
जिन मंदिर महा मनोहर, जिन भव्यों ने पधराये ।
खड़गासन कोई पद्मासन, अन्तर्मुख अचल बिठाये ।।
बहुमूल्यमयी रत्नों की, जिन प्रतिमायें पधराई ।
स्फटिकमणी प्रतिमा श्री, लगे नंदीश्वर से आई ।।
श्री अतिशय क्षेत्र पनागर, करो शांतिनाथ के दर्शन ।
अति मनहारी मुद्रा है, हो जावे जीवन धन-धन ।।
रामटेक अहार पपौरा, सब जगह शांति प्रभु पाये ।
धनि धन्य पूर्वजों ने तो, मनहारी प्रभु पधराये ।।
बहोरीबंद क्षेत्र के दर्शन, सुख शांति सहज दर्शाते ।
बजरंगढ़ में प्रभु के रंग, में भवि जन हैं रंग जाते ।।
श्री शांति कुंथु अर प्रभु ने, सब राजपाठ ठुकराया ।
चैतन्य धाम से बढ़कर, आनंद कहीं न पाया ।।
चौबीस जिनेश चंदेरी, के दर्शन जी भर कर लो ।
जीवन-भर भूल न पाओ, आतम अनुभव फल चखलो ।।
थोवन जी अतिशय पावन, जिनबिम्ब विशाल मनोहर ।
धनि धन्य हुये वे श्रावक, जिन थापी अचल धरोहर ।।
अब चलो द्वीप नंदीश्वर, खनियाँधाना तो आओ ।
अर्न्तमुख प्रभु छबि लखकर, अंतरमुखी भाव जगाओ ।।
गुरुदत्त मुनीश्वर वन्दूँ, द्रोणागिर तीर्थ हमारा ।
उपसर्गजयी मुनि वन्दूँ, समता का लिया सहारा ।।
नैनागिरि तीर्थ चलें हम, जहाँ पार्श्वनाथ प्रभु आये ।
वरदत्तादि ऋषि वन्दूँ, जिनबिम्ब नमूँ मन भाये ।।
त्रैकालिक चौबीसी के, दर्शन कर लो मनहारी ।

Scanned with CamScanner

धर्मी अशोकनगरी में, जिन मंदिर प्रभु छबि प्यारी ।।
पचराई प्रभु दर्शन कर, फिर गोलाकूट पधारो ।
पर्वत पर बैठे प्रभु की, छबि बारम्बार निहारो ।।
कुंडलपुर आदीश्वर जी, कितने सुन्दर हैं प्यारे ।
यही सिद्ध भूमि श्रीधर की, अतिशय जग से हैं न्यारे ।।
कोनीजी तीरथ पावन, जिन सहस्रकूट चैत्यालय ।
प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शन, कर लो हैं बहुत मनोहर ।।
खजुराहो शांति जिनेश्वर, के निश्चित दर्शन करना ।
यहाँ कलाकृति से निर्णय, धर्मी पूर्वज का करना ।।
जिनदेव बसें कण-कण में, वह भूमि देवगढ़ जानो ।
कैसे होंगे वे श्रावक, अनुमोदन कर श्रद्धानो ।।
अब नगर जबलपुर आओ, नंदीश्वर दर्शन पाओ ।
यहाँ पिसनहारी मढ़िया का, वंदन कर आनंद पाओ ।।
जो हाथ मिले हैं उनसे, प्रभु का अभिषेक रचाओ ।
पीड़ित प्राणी जन-जन को, तुम अपने गले लगाओ ।।
जो दृष्टि आपने पाई, प्रभु मुद्रा खूब निहारो ।
तन-मन-धन न्यौछावर कर, जिनशासन को उजियारो ।।
इस तरह तीर्थ यात्रा हो, भवसागर से तिर जायें ।
प्रभु तेरे अनुशासन में, बस सिद्ध दशा पा जायें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व बुंदेलखंड तीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

जयवन्ते जिन तीर्थ शुभ, जयवन्ते जिनधर्म ।
आत्मतीर्थ से प्रभु तिरे, यही एक लूँ शर्ण ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

देवाधिदेव अरहंत के चरणों का पूजन समस्त दुःखों को नाश करने वाला है तथा इन्द्रियों के विषयों की कामना का नाश करके मोक्ष होने रूप सुख की कामना को पूर्ण करने वाला है, इसलिये अन्य की आराधना छोड़कर जिनेन्द्र की ही आराधना करो।

– पण्डित सदासुखदासजी : रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका, पृष्ठ 205

Scanned with CamScanner

श्री चांदखेड़ी क्षेत्र पूजन

स्थापना

(वीर)

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर, ऋषभनाथ वंदन कर लूँ।
धर्मतीर्थ के आद्य प्रवर्तक, शत-शत अभिनंदन कर लूँ॥
चाँदखेड़ी में सर्व विराजित, जिन भगवंत नमूँ हर्षाय।
धर्म श्रेणी में चढ़ूँ निरन्तर, शुद्धातम ध्याऊँ सुखदाय॥
हृदय-कमल में आओ विराजो, भक्ति-भाव से करूँ प्रणाम।
हे चैतन्य चमत्कारी प्रभु, पाऊँ तुम पद शिव अभिराम॥

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी अतिशय क्षेत्र स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि समस्त जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(सरसी)

महापुण्य की बेला आई, दर्शन आज मिला।
कली - कली खिल गयी हृदय की, पूरव पुण्य फला॥
देख आपकी शांत सौम्य छवि, अंतर्मुख प्यारी।
चाँदखेड़ी आदीश्वर वन्दूँ, अरचूँ जल थारी॥

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमुदित मन मेंढक जब आया, प्रभुवर पूजन को।
मिली संपदा स्वर्गादिक की, क्षणभर में उसको॥
जिन पूजन भावों से ही प्रभु, स्वर्ग सहज पाया।
भक्ति भाव का चंदन लेकर शरण तेरी आया॥

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्रश्नों के उत्तर मिलते, प्रभु के दर्शन से।
जन्म-जन्म के बंधन खुलते, प्रभु के वंदन से॥
अक्षय पदवी देख आपकी, मन ललचाया है।
अक्षत पद पाने अक्षत ले, मन हुलसाया है॥

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभुवर तुझमें शक्ति अनंतों, एक शक्ति देना ।
काम-बाण की मिटे वासना वह युक्ति देना ।।
हो निष्काम वंदना मेरी, मन हर्षाया है ।
चाँदखेड़ी आदीश्वर वन्दूँ, पुष्प चढ़ाया है ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा-वेदनी सदा सताती, तृप्ति नहीं मिलती ।
खाद्य-अखाद्य विचार नहीं कुछ, नागिन-सी डसती ।।
जहाँ देह निजमय नहिं भासे, क्षुधा रहे कैसे ?
भेद ज्ञान की कला सीखने, आया प्रभु तुमसे ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदज्ञान की ज्योति जलाऊँ, भ्रमतम परिहारी ।
निज को निज, पर को पर जानूँ, आतम अविकारी ।।
छः द्रव्यों से न्यारा हूँ में, सात तत्त्व से भिन्न ।
वैज्ञानिक बन जाऊँ खोजूँ, शोधूँ आत्म अभिन्न ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धशिला तक सहज सुगंधी, उड़-उड़ कर जावे ।
दशधर्मों की सौरभ सुरभित, प्रभु के गुन गावे ।।
ध्यान-अग्नि में, ध्रुव की धुन में, ऐसा खो जाऊँ ।
मुझमें तुम हो तुममें मैं हूँ, घुल-मिल सुख पाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे आदीश्वर ! हे जगदीश्वर ! मुक्ति श्री पायी ।
महा मोक्ष फल मिले सहज, वो युक्ति दर्शायी ।।
निज-चैतन्य प्रभो अब मेरे, भी मन भाया है ।
कोई कामना शेष रहे ना, ये फल चाहा है ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

धर्म तीर्थ के आद्य प्रवर्तक, आदीश्वर भगवान ।
अन्तर्मुख छवि देख आपकी, हुई आत्म पहचान ।।
मुक्तिमार्ग का उद्घाटन प्रभु, तेरे दर पाया ।
तेरी छत्र-छाया सिर पर, रहे यही चाहा ।।
जल फलादि वसु द्रव्य चढ़ाऊँ, पद अनर्घ पाऊँ ।
जनम-जनम तक गीत तुम्हारे, गाऊँ हर्षाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आदीश्वर परमेश प्रभु, पूजत मन हर्षाय ।
शिवपथ के सृष्टा प्रथम, त्रिभुवन के तुम राय ।।
क्षायिक श्रेणी मांडकर, आप हुये अरिहंत ।
चाँदखेड़ी में मिल रहे, दर्शन श्री भगवंत ।।
भक्ति भाव से जो जजें, नित नव मंगल होय ।
पंचमगति के पात्र हों, भव-भ्रमणा सब खोय ।।

(ताटंक)

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर, भाव सहित मैं करूँ प्रणाम ।
धर्म-चक्र के आद्य प्रवर्तक, आदिनाथ वन्दूँ गुणधाम ।।
अठ-दश कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्पकाल के बीत गये ।
जन्मे जब आदीश्वर स्वामी, भरत भूमि के भाग्य जगे ।।
भोग भूमि थी भोगों में रम, जीव मुक्ति नहिं पाते थे ।
पुण्य उदय को भोग-भोग कर, देवगति ही जाते थे ।।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आकर, मध्य लोक अवतार लिया ।
असि मसि कृषि वाणिज्य आदि की, शिक्षा दे उपकार किया ।।
राजकाज में लाख तिरासी, पूर्व काल का बीत गया ।
देख निधन नीलांजन देवी उसी समय वैराग्य हुआ ।।

Scanned with CamScanner

धिक-धिक जग की स्वारथ वृत्ति, कैसा क्षणभंगुर संसार।
जन्म-मरण का चक्र नाशने, धर्मचक्र ही शरणाधार ।।
सहज ज्ञान-वैराग्य शक्ति के, धारी दीक्षा अपनायी।
लौकांतिक अनुमोदन आये, धन्य-धन्य हे बड़भागी ।।
छः महिने तक ध्यान मग्न रह, निज आतम का किया मनन।
सिद्ध सुपद की ऐसी धुन थी, भूल गये भोजन यापन ।।
तेरह महिने नौ दिन बीते, नृप श्रेयांस ने दिया आहार।
दान तीर्थ का हुआ प्रवर्तन, अक्षय तीज तिथि निर्धार ।।
एक हजार वर्ष तप करके, केवलज्ञान लिया भगवान।
हुये अनन्त चतुष्टय धारी, प्रथमदेव अर्हन्त महान ।।
धर्मसभा में प्रथम बार ही, खिरी देशना मंगल सार।
सभी जीव भगवान आत्मा, जानें समयसार का सार ।।
वृषभसेन आदि चौरासी, गणधर से श्रोता गुणवान।
भरत चक्री अर कामदेव से, श्रोता बाहुबली बलवान ।।
बही ज्ञान-गंगा प्रभु जबसे, खुला मुक्ति का मंगल द्वार।
भव्य अनेकों पार हो गये, जिनशासन का ले आधार ।।
धन्य हुआ कैलाशधाम प्रभु, तुमने मुक्ति यहीं पायी।
बद्रीनाथजी क्षेत्र अभी भी, बना हिमालय में शाही ।।
चाँदखेड़ी में श्री जिनमुद्रा, अतिशयवान विराज रही।
जग के सारे भवि जीवों को, मुक्ति संदेशा सौंप रही ।।
भक्ति-भाव से करूँ वंदना, तलघर में बैठे भगवान।
निज स्वभाव के तलघर जाऊँ, हो जाऊँ मैं आप समान ।।

ॐ ह्रीं श्री चाँदखेड़ी तीर्थे विराजित समस्त जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
भक्तिभाव हृदय धरूँ, पाऊँ भवदधि पार ।।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि ॥

Scanned with CamScanner

श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार पूजन

(राधिका छंद)

हे बालयति श्री नेमि जिनेश्वर ! वंदन ।
यदुवंशपती हे मुक्तिपति ! अभिनंदन ।।
जयवंत हुई यह सिद्ध क्षेत्र गिरनारी ।
वंदन से कटते पाप महादुखकारी ।।
अनिरुद्ध कुंवर अविरुद्ध आत्मप्रभु ध्याया ।
शम्बू-कुमार ने मुक्ति-वधू परिणाया ।।
प्रद्युम्न कुमार श्रीकृष्ण पुत्र यहाँ आये ।
स्व-राष्ट्र प्रान्त से सिद्धपुरी पधराये ।।
मुनिनाथ करोड़ों चरण पड़े इस भू पर ।
कण-कण पावन हो गया तीर्थ धरती पर ।।
आह्वानन है प्रभु हृदय-कमल में आओ ।
मुझको मुक्ति की मंगल राह दिखाओ ।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनिसिद्ध समूह ! अत्र अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनिसिद्ध समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनिसिद्ध समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(वीर छंद)

भक्ति भाव का निर्मल जल ले, प्रभु के चरण पखारूँगा ।
जन्म जरामृत रोग मिटाने, शाश्वत प्रभू निहारूँगा ।।
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ।
कोटि-कोटि मुनिवर अभिनन्दूँ, इसी भूमि से मुक्त हुये ।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

प्रभु-चरणों की भक्ति भाव से, चंदन चरणों में लाया।
भव-आताप सहा नहिं जावे, विरद श्रवण सुन हूँ आया ॥
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ॥कोटि ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चरणों की भक्ति अखंडित, अक्षय पद की दाता है।
जग के पद सारे विक्षत है, स्वांग न अब मन भाता है ॥
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ॥कोटि ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की भक्ति-भाव अर्चन से, मेंढ़क क्षण में देव हुआ।
पंचेन्द्रिय की विषय वासना, मिट जाये प्रभु अचरज क्या ?
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ॥कोटि ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्तों की भक्ति हृदय में, मानतुंग सम बस जावे।
जड़ की चाह रहे ना मन में, ऐसी तृप्ति आ जावे ॥
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ॥कोटि ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो सिद्धपद प्राप्तये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय भक्ति अभेद आपकी, मुक्ति प्राप्त कराती है।
मोह-महांध नसाती भगवन, दीपावलि ले आती है ॥
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ॥कोटि ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जिनमुद्रा के दर्शन करते, आतम दर्शन होता है ।
आत्म ध्यान से कर्म नष्ट हो मुक्ती लाभ मिल जाता है ।।
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ।
कोटि-कोटि मुनिवर अभिनन्दूँ, इसी भूमि से मुक्त हुये ।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाप-पुण्य की भक्ति से ही, चहुँगति दुख अब तक पाये ।
रत्नत्रय-भक्ति से शिवफल, पाने प्रभुवर ढिंग आये ।।
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ।।कोटि ।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हन्त सिद्धाचार्य साधु मुनि, श्रुत की भक्ति हृदय भाये ।
रत्नत्रय निर्ग्रन्थ पंथ का, रोम-रोम प्रभु गुणगावे ।।
जलफलादि वसु द्रव्य संजोकर, भक्ति भाव से लाया हूँ ।
है अनन्त उपकार आपका, भक्ति न कुछ कर पाया हूँ ।।
श्री गिरनार सिद्ध भूमि से, नेमीश्वर प्रभु सिद्ध हुये ।।कोटि ।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

गिरनारी गिरि शिखर से, कोटि-कोटि मुनिराज ।
आत्म ध्यान धर पा गये, सिद्धों का साम्राज्य ।।

(मानव)

जयवंते धर्म सनातन, जयवंते सिद्ध हमारे ।
जयवंते जिनवर मुनिवर, जय भेदज्ञान शिक्षा रे ।।
चकमक में अग्नि छिपी ज्यों, तिल में ज्यों तेल समाया ।
गौ-रस में कण-कण घृत ज्यों, तन में चैतन्य दिखाया ।।

Scanned with CamScanner

गिरनार सिद्ध भूमि पर, श्री नेमि जिनेश्वर आये ।
मुनि कोटि-कोटि अभिनंदूँ, महाभाग जो दर्शन पाये ।।
सौराष्ट्र भूमि ने गौरव, स्व-राष्ट्र दिखाकर पाया ।
ऊर्जयन्त गिरि ने साधक, को सिद्ध शिला पहुँचाया ।।
अठरह हजार भूपति संग, दीक्षा ली नेमि जिनेश्वर ।
चालिस हजार दीक्षायें, राजुल संग हुईं वहाँ पर ।।
यहां धर्म ध्यान अध्ययन का, मेला ही लगा हुआ था ।
लगा समवशरण अति सुन्दर, जन-जन वहाँ उमड़ पड़ा था ।।
शांति का बिगुल बजा था, श्री नेमि जिनेश्वर द्वारा ।
श्रीकृष्ण और बलदाऊ , पीते थे अमृत धारा ।।
इक बार दिव्य ध्वनि गूँजी, देवोपुनीत यह नगरी ।
धू-धू जल राख बनेगी, बारह वर्षों की अवधि ।।
श्रीकृष्ण धर्म राजा ने, गंभीर निनाद कराया ।
जिन धर्म-शरण में आओ, प्रभु ने हमें आन जगाया ।।
कितने ही भव्यजनों ने, मुनि दीक्षा ले ली तत्क्षण ।
अणुव्रत यम नियम किसी ने, पाले समता के साधन ।।
प्रद्युमनकुमार शम्बूजी, अनिरूद्ध कुंवर अति प्यारे ।
इस ही पावन भूमि से, पायी थी सिद्ध दशा रे ।।
धरसेन दिगम्बर मुनिवर, शुद्धोपयोग के धारी ।
थे अंग पूर्व के ज्ञाता, शिक्षा-दीक्षा अधिकारी ।।
पुष्पदंत - भूतबलि मुनि को, सिद्धान्त मूल समझाया ।
करणानुयोग दीपक से, जिनशासन दीप जलाया ।।
राजुल से ब्याह रचाने, जूनागढ़ जब प्रभु आये ।
पशुओं का क्रन्दन सुनते, ही मोम भांति पिघलाये ।।
जग की स्वारथ वृत्ति लख, करूणा सागर मन आया ।
धिक-धिक संसार ये कैसा ? वैराग्य भाव उमड़ाया ।।

Scanned with CamScanner

शेषावन में नेमीश्वर, प्रभु ने थी दीक्षाधारी ।
कैवल्य-ज्ञान को छप्पन, दिन में पाया अविकारी ।।
श्री गजकुमार मुनि ने भी, यहीं आतम ध्यान लगाया ।
पाँचों पांडव वीरों ने, धर्मामृत-बोधि जगाया ।।
यहाँ भव्य जीव ही आते, पावन दर्शन को पाते ।
जो नेमि प्रभु को भाया, उस आतम को ही ध्याते ।।
जय धर्म-धुरी के धारी, तुमको शत-शत है वंदन ।
श्री सिद्ध क्षेत्र गिरनारी, मुनि कोटि-कोटि अभिनंदन ।।

ॐ श्री ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे सप्तद्वय कोटि सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो जयमाला महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

भाव सहित वंदन करूँ, ले मन हर्ष अपार ।
प्रगटे रत्नत्रय प्रभो, पाऊँ भवदधि पार ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

रोम-रोम से निकले प्रभुवर ...

रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ नाम तुम्हारा ।
ऐसी भक्ति करूँ प्रभुजी पाऊँ न जन्म दुबारा ।। टेक ।।
जिनमंदिर में आया, जिनवर दर्शन पाया ।
अन्तर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया ।।
जनम - जनम तक न भूलूँगा, यह उपकार तुम्हारा ।।1 ।।
अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना ।
द्रव्य और गुण-पर्यायों से, जिन सम निज को माना ।।
भेदज्ञान ही महामंत्र है, मोह तिमिर क्षयकारा ।। 2 ।।
पंच महाव्रत धारूँ, समिति गुप्ति अपनाऊँ ।
निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊँ ।।
पुण्य-पाप की बन्ध श्रृंखला नष्ट करूँ दुखकारा ।। 3 ।।
देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चे हितकारी ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की महिमा, जग से न्यारी ।।
भेद ज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा ।। टेक ।।

Scanned with CamScanner

श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पूजन

(चांद्रायण)

मांगी-तुंगी सिद्ध क्षेत्र में आय के ।
सिद्ध प्रभु सम आत्मअनुभवूं भाव ये ।।
रामचंद्र मुनिराज आये इस भूमि पर ।
हनूमान मुनिवर भी विचरे हैं इधर ।।
धन्य-धन्य सुग्रीव सुडील की साधना ।
गव-गवाक्ष मुनि धन्य हुई आराधना ।।
कोड़ि निन्यानवे मुनिवर ने प्रभु पद लिया ।
मैं भी पाऊँ शीघ्र यही पद प्रण लिया ।।
हे प्रभु ! आह्वानन करता हूँ आइये ।
मेरे मन मंदिर में नाथ समाईये ।।
धन्य हुआ प्रभु मेरा जीवन वंद्यकर ।
अपने पास बुला लो अति ही शीघ्रवर ।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(ताटंक)

सब सिद्धों को नमन हमारा, सिद्ध दशा ही प्यारी है ।
सिद्ध स्वभाव दिखाने वाले, प्रभु की महिमा न्यारी है ।।
सिद्ध समान सदा पद मेरा, यही समझने आया हूँ ।
सिद्धों की भक्ति भावों का, निर्मल जल प्रभु लाया हूँ ।।
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ।
धन्य-धन्य यह मांगीतुंगी, वंदन करुँ बनूँ भगवन ।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

शांत स्वभाव सहज शीतलमय, आत्म स्वभाव दिखाया है।
दिव्य देशना पाकर के प्रभु, रोम - रोम पुलकाया है ।।
जड़ चेतन सब न्यारे-न्यारे, बात समझ में आती है।
भेद-ज्ञान से सिद्ध अनंतों, हुये राह अब भाती है ।।
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन।
धन्य-धन्य यह मांगीतुंगी, वंदन करुँ बनूँ भगवन ।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल धवल अखंडित अक्षत, पद तुमने प्रभु पाया है।
यही धवल अक्षत पद पाने, अक्षत ले मन आया है ।।
नर नारक अवतार लिये प्रभु, शांति कहीं न पायी है।
शांति प्रदाता तुम ही प्रभुवर, शरण यही मन भायी है ।।
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ।।धन्य।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की पीड़ा भगवन, मुझसे सही न जाती है।
भव मूर्ति तन-चर्म रंध्रमय, क्यों दृष्टि फँस जाती है ।।
धन्य आप चैतन्य ब्रह्म में, लीन महासुख पाते हैं।
कामदेव भी हार मान प्रभु, सम्मुख शीश झुकाते हैं ।।
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ।।धन्य।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानानंद सुधारस आतम, फिर क्यों क्षुधा सताती है ?
षट्रस व्यंजन सेवन फिर भी, तृप्ति नहीं हो पाती है ।।
निज सीमा में सीमित हो प्रभु, अपने प्रभु में लिया मुकाम।
अकृत दिव्य बोध परमामृत, पीते रहते आठों याम ।।
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ।।धन्य।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

ज्ञानभानु का उदय हुआ प्रभु, लोकालोक झलकता है।
आप मगन रहते अपने में, ज्ञेय ज्ञान तक रिश्ता है ॥
भूल गया शिवराह बता दो, शरण तुम्हारी आया हूँ।
ज्ञान-ज्योति जागे अंतर में, बोधि जगाने आया हूँ ॥
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ॥धन्य॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पर परिणति पर भाव निरखता, अंत महा दुखदायी है।
ज्ञान-ध्यान-तप से ही तुमने, मुक्ति-वधू अपनायी है॥
मैं भी सिद्ध-चक्र पूजन कर, आज शरण में आया हूँ।
दश धर्मों की सौरभ प्रभुवर, तुम सम पाने आया हूँ॥
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ॥धन्य॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्कर्मों के फल में भगवन, कौन सुखी हो पाया है।
सत्कर्मों के फल में भी तो, स्वर्गादिक ही पाया है॥
ज्ञान मात्र का आराधन कर, मुक्त हुये अन्तर्यामी।
महामोक्ष फल पाने आया, चरण शरण में सुखधामी॥
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ॥धन्य॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी अविकारी प्रभुवर, आप हुये कृतकृत्य महान।
समाधान सर्वांङ्ग सहज हो, अभिरामी प्रभु तुम्हें प्रणाम॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि, अनंत सिद्ध पद कब पाऊँ ?
जयवंतो भगवंत सिद्ध प्रभु, अर्घ्य चढ़ाउँ हर्षाऊँ ॥
राम हनू सुग्रीव आदि मुनि कोड़ि निन्यानवे सिद्ध नमन ॥धन्य॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनीवरेभ्यो अनर्घ्यपद *प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

Scanned with CamScanner

(दोहा)

सिद्ध प्रभु की वंदना, सर्व सौख्य दातार ।
सहज सिद्ध अनुभव करुँ, हो जाऊँ भव पार ।।
अशरीरी आनंद घन, अविनाशी अविकार ।
बसें उर्ध्व आलोक में, त्रिभुवन के सरदार ।।

(वीर)

धन्य तीर्थ यह मांगीतुंगी, महाभाग्य दर्शन पाये ।
मुनी अनन्तों सिद्ध हुये प्रभु, भाव विशुद्धी कब आवे ।।
मानतुङ्ग मुनिवर-मन जैसा, मांगीतुंगी तीर्थ महान ।
कोड़ि निन्यानवे मुनि पधारे, पाया था जिनने निर्वाण ।।
महाराष्ट्र इसलिये कहाया, महा पूज्य मुनि आये थे ।
आत्म साधना महामंत्र के, मुक्ति-मंत्र गुंजाये थे ।।
देव पुनीत द्वारका जैसी, नगरी जल जब राख हुई ।
श्रीकृष्ण नारायण अर बलदाऊ शेष थे दो जन ही ।।
इसी भूमि पर छः- छः महिने, विह्वल हो बलभद्र फिरे ।
इसी भूमि पर बलदाऊजी, दीक्षा लेकर थे विचरे ।।
रामचंद्र मुनिराज हमारे, इस पावन भू पर आये ।
राजपाट वैभव सब छोड़ा, दीक्षा ले शिवपद पाये ।।
अर्द्ध चक्री रावण को जीता, कर्मचक्र भी जीत लिया ।
यहीं हुआ उपसर्ग प्रभू पर, प्रभुवर ने कैवल्य लिया ।।
हनूमान भगवान हमारे, सिद्धशिला पर शोभ रहे ।
अहो पूछ थी भारी जग में, लोग पूंछ धर पूज रहे ।।
हनूमानजी कामदेव थे, कपि वंशी अति सुन्दर रूप ।
अरे ! इन्हें बंदर मत मानो, ये जिनेन्द्र हैं अब शिवभूप ।।
गव - गवाक्ष मुनिराज जिन्होंने, आतम ध्यान लगाया था ।
इसी भूमि पर आत्म ध्यान से, केवलज्ञान जगाया था ।।

Scanned with CamScanner

श्री सुग्रीव सुडील भूप ने, मुनि पद का आनंद लिया।
चेतन का भंडार निरखकर, जीवन अपना धन्य किया ॥
नील और महानील, मुनीश्वर चेतन-रस को पीते थे।
सिद्धों से क्षण-क्षण में अन्तरमुख हो बातें करते थे ॥
जहाँ गुफायें अनुपम सुन्दर, शांत स्वभाव दिखाती हैं।
आत्म ध्यान धर लो हे प्राणी, यही सीख सिखलाती हैं ॥
भव्य जिनालय बने तलहटी, जो सबको यह समझाते।
रत्नत्रय को पाने वाले, ही भव-सागर तिर पाते ॥
सिद्धक्षेत्र वंदन करने से, उर में निर्मलता आती।
भव-भव के संचित पापों की, कर्मावलि सब झर जाती ॥
पुण्यावलि भी शीश झुकाती, पावन परिणति खिल जाती।
ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊँ बस, एक यही धुन है आती ॥
जितने भी विभाव भाव सब, आते हैं अर जाते हैं।
जो होना है सब निश्चित है, निर्णय भव्य जगाते हैं ॥
मैं हूँ ज्ञान-शरीरी प्रभुवर, नश्वर देह नहीं मेरा।
स्वयं सिद्ध गुण-पुंज प्रभु हूँ, राग-ग्राम में नहीं डेरा ॥
मैं अचिन्त्य शक्ति का धारी, चिन्तामणि हूँ मन भाया।
जब से चरण-शरण पायी है, रोम-रोम मम हर्षाया ॥
होने योग्य सदा होता अब, आकुलता नहिं आती है।
भेदज्ञान की कला मिली प्रभु, शाश्वत शांति दिलाती है ॥
भव-भव में हो शरण आपकी, यही भावना भाता हूँ।
जयवन्ते जिनधर्म हमारा, सविनय शीश झुकाता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो 99 करोड़ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मांगीतुंगी शीश से, अगणित श्री मुनिराज।
सिद्ध हुये सम श्रेणी में, ऊपर रहे विराज ॥
प्रभु चरणाम्बुज वंद्यकर, धन्य हुआ मैं आज।
हो समाधि सल्लेखना, पाऊँ सिद्ध स्वराज ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजन

(अवतार)

चिन्तामणि पारसनाथ, चरण-शरण आया।
अन्तरमुख शांत स्वरूप, लख मन हरषाया,
चैतन्य निधी दातार, जग-निधि ठुकराई ।
हे क्षमामूर्ति भगवान, प्रभुता मनभायी ।।

(दोहा)

गुण अनंत के हो धनी, महिमा अगम अपार।
धन्य हुई सम्मेदगिरि, तारो आया द्वार ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् !

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(दिग्पाल)

प्रभु भक्तिभाव-जल ले, पूजा करूँ तुम्हारी,
हो तुम समान जिनवर, भावी दशा हमारी ।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग-कर्ता पर भी, तुमने दया दिखाई,
उपसर्ग-निवारक पर, तुमको न ममता आयी ।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

अक्षत अखंड प्रभु सम, निज नाथ को निहारूँ,
सुनकर वचन तुम्हारे, समता समाधि धारूँ ।

Scanned with CamScanner

प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव से प्रभु, सारा जगत है हारा,
उस काम के भी स्वामी, मद मोह को पछारा।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामकलंक विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसी क्षुधा है नागिन, तृप्ति कभी न आवे,
रम जाऊँ स्वयं में ही, संतुष्टि तब ही आवे।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधापीड़ा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु स्वरूप जानूँ, सब मोह मद निवारूँ,
चैतन्य ज्योति निरखूँ, पर्याय बुद्धि टारुँ।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाग-नागिनी को, जलते हुये बचाया,
कर्मों पै नहिं दया की, ध्याग्नि से जलाया।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पुण्य-पाप से ही, चहुँ गति में दुःख पाये।
सब राग-द्वेष जीते, शिवफल इसी से पाये ।।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

वैभव अनर्घ पाने, वसु विधि अरघ सजाया,
प्रभु पार्श्व शरण पाके, मन हर्ष अति समाया।
प्रभु पार्श्वनाथ चिन्ता-मणि, रूप नित निहारूँ,
जब तक न मुक्ति पाऊँ, तुमको नहीं विसारूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पंचकल्याणक अर्घ्य

गर्भ कल्याणक

(दोहा)

जननी त्रिभुवन नाथ की, माँ वामा हुई वंद्य।
चिर-अनाथ धरती हुई, प्रभु आवन से धन्य॥

(हरिगीतिका)

सुरपति मुदित होकर नगर में, रत्न बरसाने लगे।
गर्भस्थ प्रभु को देखकर, खुशियाँ वो दरशाने लगे॥
धन्य प्रभु से हुई काशी, धन्य हो गया भरत क्षेत्र।
धन्य हो गए भव्य जन सब, धन्य हो गए ज्ञान-नेत्र॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक

(दोहा)

काशी तीरथ हो गई, लिया प्रभु अवतार।
छाईं खुशियाँ लोक में, जन्मे सुख सरदार॥

(हरिगीतिका)

माता जतन से राखियो, यह लाल त्रिभुवन लाल है।
यह जगत की है धरोहर, अनमोल धन गुणमाल है॥
साढ़े बारह कोटि बाजे, आज अनहद बज रहे।
शांति नरकों में हुई, त्रैलोक्य जन पुलकित हुये॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तप कल्याणक

(दोहा)

पौष कृष्ण एकादशी, जन्म दिवस वैराग ।
मग्न हुये प्रभू ध्यान में, आराधन चित पाग ।।

(हरिगीतिका)

ब्रह्म स्वर्ग लोकान्त से, ऋषि देवगण भी आ गये।
धन्य प्रभु दीक्षा विचारी, अनुमोदना हम कर रहे ।।
प्रभु विहार किया तभी, जैनेश्वरी दीक्षा धरी ।
धन्य प्रभु समता तुम्हारी, कमठ मति सन्मति हुई ।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तपकल्याणक विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान कल्याणक

(दोहा)

ज्ञान ध्यान में मगन हो, पायो केवलज्ञान ।
पायी प्रभु अर्हत् दशा, गूंजा जय-जय गान ।।

(हरिगीतिका)

निराधार समवशरण में, आप प्रभु शोभित हुये।
बारह सभाओं में असंख्ये, भव्य जन उल्लसित हुये।।
स्वातंत्र्य अर स्वाधीनता की बात मुखरित हो रही ।
भव्य जन सौभाग्य से ही, ज्ञान-गंगा बह रही ।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चर्तुथ्यां ज्ञानकल्याणक विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षकल्याणक

(दोहा)

भव्य जनों को त्राण दे, आया सुखद बसंत ।
मुक्ति पार्श्व प्रभु पा गये, आज हुआ भव अंत।

Scanned with CamScanner

हे प्रभु चेतन विहारी, आज मुक्ति पायेंगे ।
धन्य कर सम्मेद गिरि, को आज शिवपुर जायेंगे ।।
डोली वाले आपके, ही गीत गुनगुनायेंगे ।
पार्श्व प्रभु के पंथ चल, हम भी प्रभु बन जायेंगे ।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक विभूषिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(चौपाई)

जय जय पार्श्वनाथ जिनस्वामी, त्रिभुनपति तुम अर्न्तयामी ।
सारे जग में नाम तुम्हारा, भव्य जनन को अतिशय प्यारा ।।
शत - शत इन्द्र करें प्रभु सेवा, तुम हो प्रभु देवन के देवा ।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा माता के सुत प्यारे ।।
काशी नगरी धन्य कहायी, तुम जैसी जिन मूरत पाई ।
इक दिन वन विहार को आये, धर्मी मित्र संग में आये ।।
एक तपस्वी देख वहाँ पर, उससे बोले वचन मधुर स्वर ।
यज्ञ हवन क्यों जीव जलाये, छोड़ कुतप, क्यों पाप कमाये ?
देखे नाग-नागिनी कारे, मरने के थे निकट विचारे ।
करुणासागर दया समाई, शांति भाव की सीख सुनाई ।।
दिव्य देवगति उनने पाई, उनको प्रभु की महिमा आई ।
जन्म-दिवस जब प्रभु का आया, दीक्षा लेने भाव समाया ।।
छोड़े सब वैभव संसारी, प्रभु जिनेश्वरी दीक्षा धारी ।
वरदत्तराय धन्य पडगाहे, प्रभु आहार दे अति हर्षाये ।।
इक दिन तप में लीन मुनीश्वर, आया वह क्रूर कमठासुर ।
बैर कमठ के मन में आया, बदला लेने भाव समाया ।।
बहुत अधिक बारिश बरसायी, बादल गरजे बिजली गिराई ।

Scanned with CamScanner

बहुत अधिक पत्थर बरसाये, समता-सागर नहीं डिगाये ॥
पद्मावति धरणेन्द्र भी आये, प्रभु सेवा की भक्ति जगाये।
प्रभु ने आतम ध्यान लगाया, केवलज्ञान-सहज प्रगटाया ॥
हे प्रभु ! दास शरण में आया, पार करो प्रभु हे जिनराया।
भविजन जो भी तुमको ध्याते, आप समान सहज बन जाते ॥
मणि पारस तो स्वर्ण बनाता, पारस भक्त पार्श्व बन जाता।
हे प्रभु ! क्षमाधर्म के धारी, भव्य जनन के तुम हितकारी ॥
हर भव में समता अपनायी, सहज शांति पायी सुखदायी।
श्री सम्मेदशिखर पर आये, सफल साधना कर शिव पाये ॥
सांवलिया प्रभु पार्श्व हमारे, डोली वाले गीत उचारें।
हे प्रभु ! तत्त्वज्ञान अपनाऊँ, पाप-बुद्धि तज कर, सुख पाऊँ ॥
विषयों में अब मन न जावे , ज्ञान ध्यान वैराग्य सुहावे।
सब जीवों पर समता आवे, जिनशासन ही मुक्ति दिलावे ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

उत्तम क्षमा निधान हो, पार्श्वनाथ भगवान।
समता सागर आप ही, तारण-तरण महान ॥

॥ पुष्पाजंलिं क्षिपामि ॥

दया दान पूजा शील पूंजी सो अजानपने,
जितनी ही तू अनादिकाल में कमायगो।
तेरे बिन विवेक की कमाई न रहे हाथ,
भेद ज्ञान बिना एक समय गमायगो ॥
अमल अखंडित स्वरूप शुद्ध चिदानन्द,
याके वणिज मांहि एक समय जो रमायगो।
मेरी समझ मान जीव अपने प्रताप आप,
एक समय की कमाई तू अनन्त काल खायगो॥

Scanned with CamScanner

अर्घ्यावलि

श्री पंच परमेष्ठी अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ॥
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ पद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥
चौबीसों श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय पूजन अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये॥
यह अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यश्च अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतं, सु-पुष्प चारु लीजिए।
दीप धूप श्री फलादि, अर्घ्य तैं जजीजिए॥
पार्श्वनाथ देव सेव, आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा॥

Scanned with CamScanner

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेहक्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकर अर्घ्य

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनिहूतैं थुति पूरी न करी है॥
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे (स्वामी) बीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो भव-तारण-तरण जिहाज॥

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवान अर्घ्य

निर्मल जल-सा प्रभु निज स्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चन्दन-सी उठी हिलोर हिये॥
अभिराम-भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति-प्रसून लगे खिलने।
क्षुत्-तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य-प्रदीप लगा जलने॥
मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईंधन ध्वस्त हुए।
फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए॥

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान अर्घ्य

शुचि निरमल नीरं गन्ध सु-अक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि! भवदुःख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री महावीर भगवान अर्घ्य

जल-फल वसु सजि हिम-थार, तन-मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों ।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मति-दायक हो ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सप्त ऋषि मुनिराजों अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना ।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्व-स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस, जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निर्भय जगत सौं, जोर कर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नन्दीश्वर द्वीप अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेतु तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूमि समरपतु हों ।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तर-दक्षिणदिशि द्विपंचासज्जिनालयस्थ

Scanned with CamScanner

जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचमेरु जिनालय अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करहुँ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु-सम्बन्धिअस्सी जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो ।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धियादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री तीस चौबीसी भगवान अर्घ्य

दरब आठों जु लीना है, अर्घ्य कर में नवीना है।
पूजते पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दश ता विषें छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजता पाप सब भाजे ।।

ॐ ह्रीं श्री पाँच भरत पाँच ऐरावत दश क्षेत्र के विषैं तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म अर्घ्य

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मांगाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री रत्नत्रय धर्म अर्घ्य

आठ दरव निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाअर्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी ।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी ।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा ।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ ।।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा ।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु, जय होय पति शिव गेह के ।।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्पचरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो, द्वादशांग जिनवाणीभ्यो, दर्शनविशुद्धियादि षोड़शकारणेभ्यो, उत्तम क्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन-सम्यज्ञान-सम्यक् चारित्रेभ्यो नमः, कृत्रिम-अकृत्रिम जिन बिम्बेभ्यो नमः, विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान विशंति तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, नंदीश्वर द्वीप स्थित बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः, पंचमेरु संबंधी

Scanned with CamScanner

अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो, श्री सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चम्पापुर, पावापुर, गिरनारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो, अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, समस्त तीर्थंकरेभ्यो नमः, पंचकल्याणक तीर्थ भूमिभ्यो नमः, श्री गौतम स्वामी कुन्दकुदाचार्य सप्त ऋद्धिधारी मुनीश्वर आदि तीन कम नौ करोड़ मुनिभ्यो नमः इति उपर्युक्तेभ्यो सर्वेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(दिक्पाल)

पूजन विधान हुआ आज जिनराज, वीतरागी देव पाये जागा मेरा भाग ॥
मन में प्रसन्नता है खुशियाँ अपार, वीतरागी धर्म से ही पाऊँगा उद्धार ॥
नाचे मेरा रोम - रोम, नाचे मेरा मोह, श्रद्धा ज्ञान नाचे प्रभु, होवे न बिछोह ॥
माता जिनवाणी दे दो मंगल आशीर्वाद, अर्हन्त देव जैसा पाऊँ आल्हाद ॥
मुनी दशा प्यारी लागे, प्यारा जिनधर्म, चार गति में न रुलुँ पाऊँ शिवशर्म ॥
सभी जीवों से है मेरी क्षमा साम्यभाव, सभी जीव सुखी होवें प्रभु यही चाव ॥
महाशांति पाऊँ प्रभो आया तेरे द्वार, विश्व शांति पाये प्रभु हे शांतिदातार ॥

॥ पुष्पाजलिं क्षिपामि ॥

सच्चे गुरु का स्वरूप-

रत्नत्रयविशुद्धः सन्पात्रस्नेही परार्थकृत।
परिपालितधर्मो हि भवाब्धेस्तारको गुरुः ॥ 30 ॥

जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप रत्नत्रय के धारक हैं, सज्जन हैं, निष्पृह भाव से योग्य शिष्यों पर स्नेह रखते हैं, परोपकारी हैं, धर्म का पालन करते हैं तथा संसाररूपी समुद्र से पार लगाते हैं, वे ही सच्चे गुरु हैं।

Scanned with CamScanner

शांति पाठ

(हरिगीतिका)

हूँ शांतिमय ध्रुवज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगे।
अनुभूति हो आनंदमय सारी विकलता तब भगे ।।
निजभाव ही है एक आश्रय, शांतिदाता सुखमयी।
भूल स्व दर - दर भटकते, शांति कब किसने लही ।।
निज घर बिना विश्राम नांही आज यह निश्चय हुआ।
मोह की चट्टान टूटी शांति-निर्झर बह रहा ।।
यह शांतिधारा हो अखंडित, चिरकाल तक बहती रहे।
होवें निमग्न सुभव्यजन, सुख शान्ति सब पाते रहें ।।
पूजोपरान्त प्रभो यही इक, भावना है हो रही।
लीन निज में ही रहूँ प्रभु, और कुछ वांछा नहीं ।।

(दोहा)

सहज परम आनंदमय, निज ज्ञायक अविकार।
स्व में लीन परणति विषैं, बहती समरस धार।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

विसर्जन पाठ

जो भी भूल हुई प्रभो मुझसे उसकी क्षमा याचना है।
द्रव्य-भाव की भूल न होवे ऐसी सदा कामना है।
तुम प्रसाद से परम सौख्य हो ऐसी सदा भावना है।
जिन गुण सम्पत्ति का स्वामी हो जाऊँ यही साधना है।
शुद्धातम का आश्रय लेकर तुम समान प्रभु बन जाऊँ।
सिद्ध स्वपद पाकर हे स्वामी ! फिर न लौट भव में आऊँ।

Scanned with CamScanner

ज्ञानहीन हूँ क्रियाहीन हूँ द्रव्यहीन हूँ हे जिनदेव !
भाव-सुमन अर्पित है हे प्रभु ! पाऊँ परम शांति स्वयमेव।
पूजन शांति विसर्जन करके निज आतम का ध्यान धरुँ।
जिन पूजन का यह फल पाऊँ मैं शाश्वत कल्याण करुँ।
मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुंदकुंद मुनि मंगल जिनवाणी सुखकर।
सर्व मंगलों में उत्तम है णमोकार का मंत्र महान।
श्री जिनधर्म श्रेष्ठ मंगलमय अनुपम वीतराग विज्ञान।

॥ विनय ॥

नाथ तुम्हारी पूजा में, सब स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया॥ टेक॥
पंचेन्द्रिय का लक्ष करुँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करुँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं, यज्ञ रचाने आया॥ टेक॥
जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने, का प्रण लेकर आया॥ टेक॥
अरे ! जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।
पर-लक्षी सब ही वृत्ति को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरंकुश का पद पाने, पुण्य लुटाने आया॥ टेक॥
तुम हो पूज्य, पुजारी मैं, यह भेद करुंगा स्वाहा।
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा।
यह सेवक भगवान बने, यह सीख सीखने आया॥ टेक॥

Scanned with CamScanner

श्री दशलक्षण धर्म पूजन

धम्मो वत्थु सहावो, खमादि भावो य दशविधेधम्मो
रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रुणं धम्मो।

आड़िल्ल

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव शौच सत्य संयम तप त्याग,
आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्म दशलक्षण धारी श्री मुनिराज ।
अहो अहिंसा वीतरागता, धर्म एक दशलक्षण है,
जहाँ शान्ति समता संयम हो, वही धर्म है आनंदमय ।
सभी जीव भगवान आत्मा, दिखते किससे बैर करें,
किससे मान करें मन कैसे, जो निर्ग्रंथ पंथ विचरे।
मोह नींद से हमें जगाने, धर्म पर्व यह आया है,
भव आताप निवारन हेतु, नमूं मुनिनगुण गाया है ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् ..... ।।

(रोला)

महा भाग्य जिन शासन पाया मन हर्षाया।
जन्म-मरण से रहित आत्म वैभव दर्शाया॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी।
जो धारे सो उसे वंदना सतत् हमारी॥

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा ।

छहों द्रव्य निर्दोष दिखाये न्यारे न्यारे।
कैसे दूं मैं दोष किसी को ज्ञान जगा रे॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी ॥ जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

चिदानंद चैतन्य तत्व अक्षय दर्शाया।
भूल इसे हे नाथ आज तक भव भरमाया॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा ।

प्रभु प्रसाद से विषय वासना पर जय पाऊँ।
चपल इन्द्रियों के विषयों में नहीं लुभाऊं ॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

क्षुधा वेदना पीड़ा, व्यंजन मिटा न पाये।
चिदानंद रस आस्वादी मुनि तृप्त हमारे॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है, मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

पर द्रव्यों से प्रीत यही संसार संवारा ।
जानूं जाननहार आप से पा उजियारा॥
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा ।

शत्रु मित्र समभाव धनी मुनिराज हमारे।
सब भूले भगवान खिरे नित वचन तुम्हारे
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा ।

जैसी करनी करता वैसा ही फल पाता।
ज्ञान मात्र हूँ मुक्ति मंत्र ध्याता तिर जाता।
दशलक्षण यह धर्म पर्व है मंगलकारी। जो धारे .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामिति स्वाहा ।

Scanned with CamScanner

सब जीवों से क्षमा भाव घर क्रोध निवारूँ।
धरूं सरलता जितेन्द्रियता लोभ सहारूं।
संयम तप धारूं परिग्रह सब छोड़ूं।
चार दान दूं ब्रह्म भाव से नाता जोड़ूं
जल फलादि वसु द्रव्य सजाकर अर्घ्य बनाया।
भव आताप निवारक स्वामी शरणा आया॥ दशलक्षण .....

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

अरघावली

(सोरठा छंद)

धर्म नहीं धर्मी बिना, होय न गुरु बिन ज्ञान।
विषयाशा बिनबंध नहिं, तत्व ज्ञान निर्वान।

उत्तम क्षमा (सोरठा)

खड़ी असाता द्वार, दुष्ट देयं बहु वासना।
धारूं समता भाव, बैर भाव तज के प्रभु॥

(तर्ज – जिनधर्म की डगर पर बच्चों दिखाओ.... ।)

उत्तम क्षमा धरम के, धारी हमारे मुनिवर।
शत्रु न मित्र कोई, दीखे जिन्हें कहीं पर॥
द्रव्यानुसारि चरणं, चरणानुसारि द्रव्यं।
निर्दोष जैन शासन, जिनका है सहज जीवन॥
गाली गलौंच देवें, बांधे व मारें प्राणी।
फिर भी न रोष करना, सिखलाये जैनवाणी॥
जो कर्म पूर्व बांधे, वो ही उदय में आवे।
समता से सहन करना, जिनधर्म ही सिखावे॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम मार्दव धर्म

मान महादुख रूप, जीता मुनिवर आपने।
कोमल सुधा अनूप, विनय भाव वसु मद हरे॥

Scanned with CamScanner

मार्दव धरम के धारी, अभिनन्दनीय मुनिवर
चक्री भी वंदते हैं, फिर भी न मान रतिभर ।
सबको समान देखें, तो मान कैसे आवे?
अभिमान धूल धन का, तो धूल में मिलावें।
मानी महा दुखी था, रावण नरक सिधाया।
शिवभूति, मुनि विनयने, भव अन्त कर दिखाया।
ज्ञानी न होय मानी, मानी न होय ज्ञानी।
होवे विनय हृदय में, चित मोम सा हो सानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम आर्जव धर्म

सरस भाव उरधार, सुखी जीव निश्छल सदा।
माया मति दुखकार, आर्जव धरम धरो सुधी॥

आर्जव धरम के धारी मुनिराज हैं हमारे।
जीवन है पारदर्शी, निर्ग्रंथ पंथ धारे॥
दोषों को गुरूवरों से, कहकर उन्हें हटाऊँ।
सब जानते हैं जिनवर कैसे उन्हें छिपाऊँ।
प्रभु गुप्त पाप करके, तो गुप्त रोग पाये।
ज्यो गुप्त दान दानी को गुप्त धन दिलाये।
मन वचन काय तीनों, इकदम सरल बनाऊँ।
आर्जव धरम प्रगटकर, सिद्धत्व दशा पाऊँ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम शौच

तृष्णा गर्त असार, तृप्त कहीं कोई नहीं।
लोभी, दुखी अपार, सन्तोषी सुखिया सदा

प्रभु शौच धर्म धारी, मुनिराज हैं हमारे।
यद्यपि मलिन वदन है, फिर भी रतन पिटारे॥

Scanned with CamScanner

प्रभु ख्याति लाभ पूजा, तृष्णा सदा सताती।
मनमानी करते करते, मंहगी ये आयु जाती।
हैं भोग मधुर विषसम, आसक्ति, शक्ति कितनी ।
चेतन क्या भोग लोगे हे आयु बची कितनी ।
रस गंध वर्ण लोभी, बन प्राण हैं गंवावे।
लोभी बनूं धरम का, जिन धर्म शरण आये

ॐ ह्रीं उत्तम शौंच धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम सत्य धर्म

सत्य धरम सुखकार, अमृत सम वाणी झरे॥
सुने भव्य जन सार, सत्यवादी जग में सुखी ।

सत्यार्थ धर्म धारी, मुनिराज श्री हमारे।
जिनकी वचन किरन से, अंधियारे हों विदारे ।
चैतन्य आत्मा में, दुनिया असत बताई
निश्चिंत बना देती, वाणी सरस तुम्हारी॥
निर्ग्रंथ पंथ जग में, जयवंत सदा वर्ते ।
कड़वे बचन न बोलूं, मधुरिम मिले हैं क्षण ये॥
वसु राजा झूंठ बोला, सप्तम नरक सिधाया।
प्रभु सत्य धर्म धारूं, जिन धर्म शरण आया ।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम संयम धर्म

संयम धरम महान, पंचेन्द्रिय मन वश करुँ ।
धारे भव्य सुजान, एक घड़ी विसरूं नहीं ।

संयम धरम के धारी, मुनिराज हैं हमारे ।
संयम बिना का जीवन, बिन ब्रेक की गाड़ी रे ।
स्वर्गादि आयु में भी, संयम न धर सकेंगे।

Scanned with CamScanner

वीतरागता का आनंद वहां भोग न सकेंगे।
षट काय जीवों पर भी, करूणा मुनीश रखते ।
शुद्धोपयोगी साधु, स्वाधीन हैं विचरते !
तीर्थेश भी तिरे न, संयम बिना न चेतन
निर्ग्रंथ साधु बनने की, भावना हो निशदिन

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम तप धर्म

तपसी श्री मुनिराज, करें करम की निरजरा
आनन्द अपरम्पार, द्वादश विधि तप आचरे।

उत्तम तपश्चरण के धारी, हमारे मुनिवर।
इच्छा निरोध तप से काटें, करम ऋषीश्वर॥
हे जीव तुझको जग में, जब कुछ नहीं सुहावे।
उपयोग पलट अपना, आतम अवश्य भावे ।
प्रभु अनशानादि तप से, सब पाप मैल धुलते ।
शुद्धोपयोग तप बिन, नहिं कर्म जाल जलते॥
तप में क्लेश मानें, जग में अजान सारे ।
तप सुरपति भी चाहें, आनंद की वर्षा रे॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम त्याग धर्म

ममता मोह निवार, मुक्त हुये मुनिवर नमन।
त्याग धरम अनिवार, ग्रहण पूर्वक आचरूँ॥

उत्तम त्याग धर्मी, मुनि वृंद हैं हमारे।
मूर्छा ममत्व त्यागी, आनन्द रस पिटारे॥
षट् खण्ड अधिपति भी दीक्षा सहर्ष लेते।
वैभव अचिन्त्य पाकर जड़ की विभूति तजते।

Scanned with CamScanner

जो राग द्वेष त्यागी, वो सद्गुरू हमारा ।
चिद्रूप ही सहारा, इस बिन नहीं गुजारा।
औषध अभय आहार, ज्ञानी ही दान देते॥
जीवन को धन्य करते, उनको करूं नमस्ते॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम अकिंचन्य धर्म

मार्ग परम निर्ग्रंथ, पद धारी मुनिवर नमूं।
परिग्रह पोट उतार, पार भवोदधि तिर रहे॥
आ किंच्य धर्म धारी, मुनिराज हैं हमारे।
चौबीस परिग्रह के, त्यागी जगत सहारे॥
मुद्रा नगन दिगम्बर, अविकारी आत्म निर्भर।
है पार दर्शी जीवन, आनंद बहे निर्झर॥
हो पाप तो छिपावें, हो नेह तो सजावें।
धन रत्नत्रय से सज्जित, वंशी मधुर बजावें।
कब सन्त साधु बनके, विचरूं मैं नगन वन में ।
चैतन्य मात्र निरखूं, जिनराज की शरण में॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

धर्म शिरोमणि सार, ब्रह्म भाव अन्तर लखूं।
शील करे भव पार, धारूं अति उत्साह सों।।
ब्रह्मचर्य धर्म धारी, मुनिराज हैं हमारे।
चैतन्य ब्रह्म निरखें, शोभें जगत सितारे॥
जिस कामदेव ने तो, जीता जगत है सारा।
उस काम को पछारा, पौरूष सफल तुम्हारा॥
विषयों की वासना से दुर्गति में जीव जावे ।
नारी के अंगों में ही ले जन्म भव भ्रमावे॥

Scanned with CamScanner

चित्राम काष्ट का भी, नारी से दूर रहना॥
नौ बाढ़ लगाकर के जयवन्त शील करना॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

क्षमा आदि दशधर्म से, होय मंगलाचार।
जीवन हो आनंदमय, धारो भविजन सार॥

(मानव छन्द)

यह क्षमा धर्म अति पावन, क्रोधादि कषाय निवारे
उत्तम मार्दव मन भावन, विनयादि भाव अवधारे।।
उत्तम आर्जव वृष भाई, माया प्रपंच विनशावे।
निर्लोभ वृत्ति लहरावे जब शौच हृदय में आवे।।
सत् लक्षण धर्म हमारा, सत्यार्थ धरम आधारा।
संयम बिन घड़ी न जावे, नर भव तब सफल कहावे ।।
तप धारी महा मुनीश्वर, आनंदित करम खिपाते।
जो तृप्त हुये सो त्यागी, दानी भी यही दिखाते॥
उत्तम अकिंचन धर्मी, मुनिवृंद विचरते वन में।
ब्रह्मचर्य धर्म से शोभित, जायेंगे सिद्ध सदन में।।

(दोहा)

भक्ति सहित अर्पण करूं, अर्घ्य अहो मुनिराज।
दशलक्षण धन के धनी, एक तुम्हीं सरताज॥

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

आत्म धर्म आराधना, का यह पर्व महान।
अनागार पद धारके, पाऊं सौख्य महान ।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

Scanned with CamScanner

श्री अष्टान्हिका पर्व पूजन

आया पर्व अठाई महान, भक्ति भावों से करें गुणगान।
आनंद रस झरता है, आनंद रस झरता है।
आठमों द्वीप देव नंदीश्वर आय के, सारा परिवार करे पूजन हर्षाय के
झूमें नाचें गायें गुणगान-झूमें नाचें गायें गुणगान आनंद रस झरता है .....
नंदीश्वर मंदिर में शाश्वत भगवान हैं,उपशम रस बरसाती प्रतिमा अभिराम है।
दर्श करते होवे सम्यग्ज्ञान, आनंद रस झरता है।
पर्वों में बड़ा पर्व यही कहलात है, भक्ति में देवों के हृदय उलसात हैं ।
हम भी कब पावें समकित महान, आनंद रस झरता है ।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं....।।

गीतिका छन्द

चैतन्य में ही मग्न हो, चैतन्य दर्शाती अहो।
ऐसी अलौकिक जैन शासन, में ही जिन मुद्रा विभो।।
द्वीप नंदीश्वर जिनालय, की करूं नित वंदना ।
जजूं अति उल्लास से प्रभु फेर हो न आवना ।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

बाह्य दर्शन तो अनंते, वार हम सबने किये।
ऐसा ही प्रभु मैं भी हूँ, यह भाव ही भव तप हरे।।
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना ।
जजूं अति उल्लास सो प्रभु फेर हो न आवना ।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो भवआताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

गंवाया जीवन सदा धनधान्य संग्रह में वृथा ।
छोड़ चल देते हैं या मैं ही हो जाता विदा ।।

Scanned with CamScanner

द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं नित्य वंदना।
जजूं अति उल्लास सो प्रभु फेर हो न आवना ।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।

ब्रह्मदत्त सुभौम चक्री भी न तृप्ति पा सके।
कामिनी कंचन के मोही, को न जिन शासन रूचे॥
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना ।
जजूं हर्ष उछाह सों प्रभु, फेर हो न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पंच इन्द्रिय विषय सेवन, वश किये घनघोर पाप।
समता रस स्वादी जिनेश्वर बिना व्यंजन तृप्त आप॥
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की , करूं मैं वंदना॥
जजूं हर्ष उछाह सों प्रभु, फेर हो न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

इन्द्र भूति ब्राह्मण से बन भये गणधर प्रभो।
गल गया सब मान सारा, देव दर्शन से अहो।।
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना।
जजूं हर्ष उछाह सों प्रभु, फेर हो न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

आनंदमय आराधना से, ध्यान की अग्नि जले॥
परणति अन्तर, ढले प्रभु, धर्म समता मय झरे॥
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना।
जजूं हर्ष उछाह सों प्रभु, फेर हो न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सिद्ध पद की प्राप्ति होवे एक ही यह ही भावना।
इन्द्र चकी आदि वैभव की न होवे कामना ।।
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना।
जजूं हर्ष उछाह सों प्रभु, फेर हो न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

Scanned with CamScanner

भक्ति भावों में भरा यह अर्घ मैं लाया प्रभो ।
आपकी हो छत्र छाया, साधना साधू अहो॥
अकृत्रिम जिनभवन वंदो, अकृत्रिम जिनवर सभी ।
शांति दाता शांति पाऊँ, बुला लो अपने समीप
द्वीप नंदीश्वर जिनालय की करूं मैं वंदना।
ज जूं हर्ष उल्लास सों प्रभु फेर हो न आवना।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे द्विपंचास जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

द्वीप नंदीश्वर हो आऊँ, द्वीप नंदीश्वर हो आऊँ।
जा न सकूं तो यहीं भावना जाने की भाऊँ॥
अष्टम द्वीप श्री नंदीश्वर, महामहिम मनुहार।
पर्व अष्टाह्निक देव वंदना, करते हर्ष अपार ॥
पद्मासन जिनबिम्ब रत्नमय अकृत्रिम अविकार।
मानो प्रभु अर्हन्त विराजै, साक्षात् सुखकार॥
दर्शकर समता प्रगटाऊँ, दर्शकर समता प्रगटाऊँ।
जा न सकूं तो यहीं, भावना जाने की भाऊँ॥
चारों दिशि में एक-एक, पर्वत अंजन अभिराम।
बिम्ब एक सौ आठ रत्नमय, शोभे सहज ललाम।
चारों दिशि में चार चार , दधिमुख पर्वत सुन्दर।
आठ आठ रतिकर पर्वत, जिन मंदिर अगम अधार॥
दर्शकर आत्मशांति पाऊँ, ...।
जा न सकूँ तो यहीं, भावना जाने की भाऊँ॥
एक एक दिश में तेरह तेरह, मंदिर शोभें।
महामनोहर जिन-दर्शन कर, सुर हर्षित होवे।
कार्तिक फाल्गुन ऽषाढ़ माह में, आता पर्व महान्।
हर्षित हो जाते हैं भविजन, करें आत्म-कल्याण ॥ द्वीप.॥

Scanned with CamScanner

जा न सकूँ तो यहीं भावना, जाने की भाऊँ॥
मानुषोत्तर के पार गमन नहिं, कैसे आऊँ पास।
भाऊँ यहीं भावना भगवन्, जागा अति उल्लास॥
वैसी ही रचना बनवाऊँ, भरत क्षेत्र में नेक।
सिद्धचक्र मंडल विधान रचवाऊँ वर्ष प्रत्येक ।
सिद्ध प्रभु - भक्ति हृदय लाऊँ ।
जा न सकूँ तो यहीं, भावना जाने की भाऊँ॥
जैसे बिम्ब अकृत्रिम अनुपम, वैसा ही निज देव।
अन्तर्मुख दृष्टि हो जाती, दर्शत ही स्वयमेव॥
सूर्य-चन्द्र की ज्योति फीकी, पड़ जाती हे देव॥
किससे करूँ आपकी तुलना, मेट्यो राग-कुटेव॥
सिद्धों - सी समता प्रगटाऊँ, ...।
हास्य नहीं पर अति प्रसन्न, मुद्रा मनहर शोभे।
मानो बोल रही हो हमसे, तेरा प्रभु तू है॥
कैसी सुन्दर जिन-प्रतिमा है, कैसा सुन्दर रूप
जिसे देखते मोह भागता, दिखता आत्म स्वरूप॥
ऐसे प्रभु दर्शन कब पाऊँ, ...।
जा न सकूँ तो यहीं भावना, जाने की भाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशः स्थित सर्वजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदीश्वर जिनधाम, अकृत्रिम आंनदमय।
जागे आत्मज्ञान, वंदन भव-बंधन हरे॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Scanned with CamScanner

ॐ

जिनेन्द्र पूजन

卐

❊ रचनाकार ❊

पं. राजेन्द्र कुमार जैन

जबलपुर (म.प्र.)

*

❊ संपादक ❊

विराग शास्त्री

(एम.ए., बी.एड.)

जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक

श्री 108 आचार्य कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान मण्डल

बड़ा फुहारा, जबलपुर (म.प्र.)

Scanned with CamScanner

तृतीय संस्करण : 1000 आवृत्ति

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव
19 अक्टूबर 2017

न्यौछावर राशि : 30/-

प्राप्ति स्थान
श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर
स्वाध्याय भवन, बड़ा फुहारा, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 9200099200

टाइप सेटिंग : जैन कम्प्यूटर, कछियाना, जबलपुर
मुद्रक - प्री एलविल सन (संजय शास्त्री), जयपुर फोन : + 91 95092 32733

Scanned with CamScanner

प्रकाशकीय

जिनेन्द्र पूजन गृहस्थ श्रावक के षट् आवश्यक कर्तव्यों में सर्वप्रथम कर्तव्य है। पापों से बचने हेतु तथा वीतराग भाव के पोषण हेतु यही एकमात्र आलम्बन है।

पूजन के माध्यम से श्रावक अपने मनोभावों को स्तुति के रुप में व्यक्त करता है। प्राचीन काल के अधिकांश कवियों ने अपनी पूजनों एवं भजनों में आध्यात्मिक विषयों को प्रमुख स्थान दिया है। तत्त्वज्ञान के बिना पूजन नीरस और निरुद्देशीय प्रतीत होती है। वर्तमान समय में अनेक कवि अपनी काव्य रचनाओं में अध्यात्म को प्रमुख स्थान दे रहे हैं। प्रस्तुत कृति में समाहित पूजनों के रचनाकार लोकप्रिय विद्वान और अनेक आध्यात्मिक भजनों के रचनाकार **पं. श्री राजेन्द्र कुमार जैन** हैं। आध्यात्मिक भावों से परिपूर्ण ये पूजनें प्रासंगिक अवसरों पर लिखी गई थी।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर ने पंडित श्री राजेन्द्र कुमार जी द्वारा रचित एवं संकलित भजन संग्रह अध्यात्म तरंग का प्रकाशन भी किया है।

साधर्मी समाज के आग्रह के फलस्वरुप प्रस्तुत पूजन कृति का संवर्धित एवं संशोधित प्रकाशन करते हुए फैडरेशन गौरव का अनुभव कर रहा है। इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए जबलपुर मंडल के हम आभारी हैं। इस कृति की टाईप सेटिंग श्री सुनील जैन ने की है तथा **डॉ. मनोज जैन, पं. श्रेणिक जैन** एवं **जिनेन्द्र जैन, श्री सतीश जैन** ने इस पुस्तक का अवलोकन कर उचित दिशा प्रदान की है। इनके प्रयासों के फलस्वरुप ये कृति आपके कर कमलों में प्रस्तुत है। आशा है सकल साधर्मी समाज इन पूजनों में समाहित आराधना और आध्यात्म के रस का पान करते हुए आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होगा।

श्री संजय जैन
अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर

श्री अशोक कुमार जैन
संरक्षक / अध्यक्ष
वीतराग विज्ञान मंडल, जबलपुर

Scanned with CamScanner

अनमोल वचन

- संस्कार के बिना दी गई सुविधायें पतन का कारण हैं।
- आलस्य छोड़ो, क्रिया सुधारो, ज्ञानाभ्यास करो।
- हमारे जीवन के संस्कारों का प्रथम मंगलाचरण मंदिर है।
- पुण्य के उदय से प्राप्त वैभव में प्रसन्न होना रौद्रध्यान है।
- पापोदय जनित प्रसंगों में क्लेश करना आर्तध्यान है।
- पुण्य-पाप के उदय में समता रखना धर्म ध्यान (शांति का उपाय) है।
- दुख से बचने का उपाय सुखी होना नहीं अपितु आत्म साधना है।
- दुख छोटा सा है, स्वभाव बहुत बड़ा है।
- भूल को छिपाने का नहीं, अपितु मिटाने का उपाय करना चाहिए।
- ऐसी चतुराई किस काम की जो चतुर्गति में परिभ्रमण कराये।
- सोचो ! इतनी धन सामग्री भोग पाओगे कि नहीं ? साथ ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं है।
- आत्म कल्याण के लिए ध्रुवफण्ड नहीं अपितु ध्रुवदृष्टि चाहिए।
- न्याय से कमाओ, विवेक से खर्च करो।
- जीवन यात्रा में अपने पद व मर्यादा की रक्षा स्वयं करें।
- एक भव का सुखार्थी, आजीविका में चित्त लगाता है।
- दो भव का सुखार्थी, धर्म कार्यों में चित्त लगाता है,
- अनन्त काल का सुखार्थी, आत्म कल्याण में चित्त लगाता है।
- मेरा जीवन मात्र वर्तमान मनुष्य पर्याय जितना नहीं है, मेरा जीवन तो अनन्त है। यह पर्याय तो मेरे जीवन यात्रा की एक धर्मशाला मात्र है।
- कषाय के बिना कोई भी बाह्य वस्तु किंचित भी सुख-दुख हेतु नहीं है, अतः दूसरों के दोष न देखें, सुखी होने के लिए अपनी कषाय मिटायें।
- स्वस्थ्य विचार-स्वास्थ्य सुधार, सादा जीवन-तत्व विचार।
- दुनिया का सबसे दरिद्र व्यक्ति वह है, जिसके पास अपने लिए समय नहीं है।

ज्ञान समान ना आन जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म -जरा - मृतु रोग निवारण ।।

Scanned with CamScanner

सांत्वनाष्टक

शान्त चित्त हो निर्विकल्प हो, आत्मन् निज में तृप्त रहो ।
व्यग्र न हो ओ क्षुब्ध न होओ, चिदानन्द रस सहज पिओ ।।टेक।।

स्वयं स्वयं में सर्व वस्तुएँ, सदा परिणमित होती हैं ।
इष्ट-अनिष्ट न कोई जग में, व्यर्थ कल्पना झूठी है ।।
धीर-वीर हो मोहभाव तज, आतम-अनुभव किया करो ।।1।। व्यग्र.।।

देखो प्रभु के ज्ञान माहिं, सब लोकालोक झलकता है ।
फिर भी सहज मग्न अपने में, लेश नहीं आकुलता है ।।
सच्चे भक्त बनो प्रभुवर के ही पथ का अनुसरण करो ।।2।। व्यग्र.।।

देखो मुनिराजों पर भी, कैसे-कैसे उपसर्ग हुए ।
धन्य-धन्य वे साधु साहसी, आराधन से नहीं चिगे ।।
उनको निज-आदर्श बनाओ, उर में समता-भाव धरो ।।3।। व्यग्र.।।

व्याकुल होना तो, दुख से बचने का कोई उपाय नहीं ।
होगा भारी पाप बंध ही, होवे भव्य अपाय नहीं ।।
ज्ञानाभ्यास करो मन माहीं, दुर्विकल्प दुखरूप तजो ।।4।। व्यग्रः ।।

अपने में सर्वस्व है अपना, परद्रव्यों में लेश नहीं ।
हो विमूढ़ पर में ही क्षण-क्षण, करो व्यर्थ संक्लेश नहीं ।।
अरे विकल्प अकिंचित्कर ही, ज्ञाता हो ज्ञाता ही रहो ।।5।। व्यग्र.।।

अर्न्तदृष्टि से देखो नित, परमानन्दमय आत्मा ।
स्वयंसिद्ध निर्द्वन्द निरामय, शुद्ध बुद्ध परमात्मा ।।
आकुलता का काम नहीं कुछ, ज्ञानानन्द का वेदन हो ।।6।। व्यग्र.।।

सहज तत्त्व की सहज भावना, ही आनन्द प्रदाता है ।
जो भावे निश्चय शिव पावे, आवागमन मिटाता है ।।
सहजतत्त्व ही सहज ध्येय है, सहजरूप नित ध्यान धरो ।।7।। व्यग्र.।।

उत्तम जिन वचनामृत पाया, अनुभव कर स्वीकार करो ।
पुरूषार्थी हो स्वाश्रय से इन, विषयों का परिहार करो ।।
ब्रम्ह भावमय मंगल चर्या हो, निज में ही मग्न रहो ..... ।।8।। व्यग्र.।।

– ब्र.रवीन्द्र जैन 'आत्मन्'

Scanned with CamScanner